❀ ॐ ❀

न्यू अल्फ्रेड नाटक कम्पनी आफ़ बंबई

का

उर्दू नाटकों की दुनियां

मे

अपने ढङ्ग का अनोखा

नाटक

लेखक—

पं० राधेश्याम कथावाचक बरेली

प्रकाशक—

माणिक शाह कोलाभाई बलसारा

—※—

मैनेजिंग प्रोप्राइटर—

न्यू अल्फ्रेड थियेट्रीकल कम्पनी आफ़ बम्बई

प्रति २०००]   सन् १९३५   [मुल्य -१)

अर्ज़े हाल

नाज़रीन,

मैं और उर्दू ज़ुबान ? बिलाशक बौने ने चांद तक पहुंचने की कोशिश की है। हक़ीक़त यह है कि न्यू अल्फ़्रेड नाटक कम्पनी के मैनेजिंग प्रोप्राइटर, मेरे लायक़ दोस्त मि० माणिक शाह बलसारा के मोहब्बत भरे दिलकी, यह एक पाक फ़रमाइश थी जिसे मैंने अमली जामा पहना कर अपना फ़र्ज़ अदा किया है।

कानपुर के 'वर्त्तमान' मे मनसुखा को यह चुटकी कि—"पं० राधेश्याम हिन्दी नाटक लिखते लिखते उर्दू की तरफ़ क्यो झुक पड़े, यह उल्टे बांस बरेली क्यों ?" बिल्कुल ठीक है। लेकिन क्या करूं, मै ऐसे मुल्क मे पैदा हुआ हूँ जहाँ एक कौम आबाद नहीं और एक ज़ुबान सबकी ज़ुबान नहीं। वतन के बुज़ुर्ग कोशिश मे हैं कि सब क़ौमे मुत्तहद हो जाय और सब की ज़ुबान मुश्तर्का हो जाय। जब ऐसा मुबारक वक़्त आजायगा तो मुझ जैसी नाचीज़ हस्ती भी यह राग गाने लग जायगी—

"मिले सभी भारतीय सन्तान, एक तन मन प्राण"

इस नाटक का कुछ प्लाट एक सिनेमा से और कुछ तारीख़े फ़रिश्ता से अख़्ज़ किया गया है, बाक़ी तमामतर मेरे नाचीज़ तख़य्युल का नतीजा है। नाटक कैसा लिखा गया है, जज़्बात की मुसव्विरी में मुझे कहाँ तक कामयाबी नसीब हुई है इसका फ़ैसला तो माहिराने फ़न ही कर सकते हैं मुझे सिर्फ़ यह अर्ज़ करना है कि 'प्रह्लाद की "श्यामलता" और परिवर्त्तन की "चन्द्रा" के बाद मैंने आलमे निसवाँ का एक नया बुत

"हमीदा" के नाम से इस नाटक में तराशने का हौसला किया है, जो मुझे उतना ही प्यारा है जितना कि किसी रातभर के भटके हुए मुसाफ़िर को नूर का तड़का।

नाटक का नाम मैंने हुस्ने मशरिक़ (Oriental Beauty) तजवीज किया था, मगर मेरे और मि० माणिकशाह के एक मेहरबान दोस्त ने 'मशरिक़ी हूर' ही रख दिया। दोस्तों को हुक्म भी तो मानना ही पड़ता है। चलो हुस्न न सही हूर सही मतलब तो खूबसूरती से है

नाटक लिखने के ज़माने में मेरे करमफ़र्मा पं० बनारसी दासजी 'विरही' ने मुझे बहुत ज्यादा इमदाद दी है। इसलिए मैं उनका बेहद ममनून हूं। सब से ज्यादा मशकूर-मादरे हिन्द के सपूत, जनाब मौलाना हसरत मोहानी का हूँ, जिन्हों ने शुरू से आख़िर तक इस नाटक को सुन और देख कर, अपनी इसलाहों से इसमें चार चाँद लगा दिये हैं। कहा कहीं कुछ अशआर और गाने उर्दू के चंद मारूफ़ शोअरा के भी चस्पाँ कर दिए गए हैं, जो सिर्फ़ इस शादी साड़ी को ज़री की गोट से सजाने के लिए है, न कि किसी बुरे इरादे से। मैं समझता हूं कि ड्रामानिगार को यह हक़ हासिल भी है।

चीज़ जैसी बन सकी बनादी गयी है, अब अच्छी या बुरी का फ़ैसला खरीदारों की पसन्द पर है:—

"गर कबूल उफ्तद ज़हे इज़्ज़ो शरफ़"

अहक़र—
राधेश्याम।

वसन्त पंचमी १९८३

कैरेक्टर्स

—❀❀—

मेल

ग़ज़नीख़ाँ—शादियाबाद का सुल्तान।

जलालुद्दीन हैदर—शादियाबाद का शहरबदर रहनुमा।

अकमल शाह—बनावटी शाहसाहब, असल मे शादियाबा का महमूद वज़ीर।

क़माल—
जमाल— } जलालुद्दीन हैदर के भतीजे।

दिलेरजङ्ग—शादियाबाद का सिपहसालार।

सलामतबेग—ग़ज़नी ख़ां का मुसाहब।

क़मरू—सलामत बेग का नौकर।

फ़ीमेल

हुस्नआरा—शादियाबाद की मल्का।

रौशनआरा—शाहज़ादी।

हमीदा—जलालुद्दीन की दुख्तर।

अल्लामा—सलामतबेग की बावर्चिन।

इनके अलावा डाकू, सिपाही, किसान, जुलाहे, सौदाग रौशनआरा की सहेलियाँ और नाचने गाने वालियाँ वग़ैरा।

—❀—

॥ ॐ ॥

मशरिक़ी हूर

पहला बाब

हम्दे बारी

गाना

कोरस—

दाता तू है सबका, अर्जो समा का,
मालिक खालिक दोनो जहाँ का,
सब से बढ़कर सबसे बरतर।
तूही अव्वल तूही आखिर ऐ मेरे मौला।

तेरा ही हुस्न है बागे जहाँ की जे़बो ज़ीनत में।
तुही बुलबुल के नग़मे में तुही फूलों की निगहत में॥
न तेरी कोई सूरत है, तुही हर एक सूरत में।
हक़ीक़त में तुही तू है, तुही तू है हक़ीकत में॥
शम्शोक़मर मे, संगोशजर मे, बहरोबर में, जिन्नो बशरमें।
तेरी शान, है सुबहान, तूही है सब से आला॥
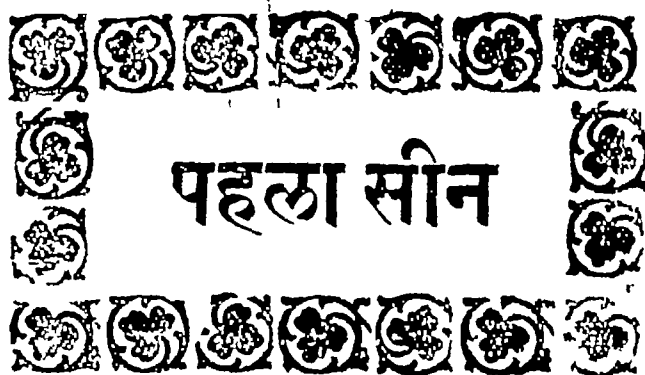
पहला सीन

स्थान--पहाड़ी गार।

(जलालुद्दीन हैदर का अपने साथियों के साथ नजर आना)

—❀❀❀❀—

गाना

—❀—

जलाल वग़ैरा—

खुदा के नाम पर फ़िदा करेंगे अपनी जान हम
खपेंगे, मर मिटेंगे, पर न जाने देंगे आन हम।
नेकी पै हैं क़ुरबान हम, बन्दे हैं बाईमान हम
जो काम इन्सान के आयें, वह हैं इन्सान हम॥
ईमान इस जहां में, है पाक एक उजाला।
ईमान का हरजा पर, होता है बोल बाला॥
फिरते हैं बस इसी से, हथेली पै लिए जान हम।

जलाल—ऐ क़ौमी रज़्मगाह के दिलेरो, ऐ मुल्की मैदान के ..., जानते हो कि तुम कौन हो ?

पहला डाकू–हम ? इस जङ्गल के बादशाह।
दूसरा डाकू–ख़ुदा के आज़ाद बन्दे।
तीसरा डाकू—सूरत के डाकू।
चौथा डाकू–और सीरत के—
सब डाकू–फ़िरश्ते हैं।

पहला डाकू–नाम के डाकू हैं लेकिन काम के ग़मख़्वार हैं।
दूसरा डाकू-ढाल हैं कङ्गाल को ज़रदार को तलवार हैं।
तीसरा डाकू–करते हैं डाकाजनी ईमान ही के वास्ते।
चौथा डाकू—लड़ते हैं इन्सान से इन्सान ही के वास्ते।

पहला डाकू—ख़ुदा शाहिद है कि हमने आज तक किसी ... या यतीम पर हाथ नहीं उठाया।

दूसरा डाकू—क़सम है अपने सर्दार की मुक़द्दस हस्ती की, ... हमने आज तक, किसी आस औलादवाले, नेक इन्सान को ... हीं सताया।

तीसरा डाकू—हम तो बेईमानों की दौलत से, ईमान्दारों ... की ज़िन्दगी बनाते हैं।

चौथा डाकू–पाजियो के गले घोट घोट कर २ ।।
हलक़ में रिज्क़ पहुंचाते हैं ।

जलाल–जिन्दाबाश मेरे दिलेरो, यही शाह साहब तालीम है । यही शाह साहब का फ़र्मान है ।

उन्हें लूटो, जो लूटा करते हैं इज्जत शरीफ़ों का ।
उन्हे खाओ, जो खाया करते हैं दौलत ग़रीबोंकी ।।
हमारा काम है, हर एक छोटे को बड़ा करना ।
अमीरो की कमाई से ग़रीबो का भला करना ।।

शाह साहब का हुक्म है, कि आज शादियाबाद के सुल्तान ग़ज़नीख़ां का ख़ज़ाना चुराया जाय, और उस चोरी के माल को उन ग़रीब और तंग–दस्तो में लुटाया जाय, जो सुबहको रोटी खाकर, शाम के लिए आसमान की तरफ़ ताकते हैं । जो सर्दी के अय्याम मे गरम कपड़ा न मिलने पर, धूप से अपने जिस्म को सेकते हैं–

लानत है उसको हश्मतो जाहो जलाल पर ।
जिसको तरस न आए ग़रीबो के हाल पर ।।
रुतबा यहाँ पे शाहो गदा सब का एक है ।।
बन्दे हैं सब ख़ुदा के, ख़ुदा सब का एक है ।।

कुछ दिन के लिए शाह बना, कोई तो क्या है ?
गर हिर्स का बन्दा है, तो कुत्ते से बुरा है ॥
है सरमे खुदी जिनके भरी, उनसे यह कहदो ।
मुफ़्लिस भी खुदावाला है, उसका भी ख़ुदा है ॥

जलाल—लेकिन, शाह साहब.......

शाह साहब—हाँ, कहो ।

जलाल—कभी कभी दिल हिलता है, । डाका डालते वक़्त मेरा ज़मीर भी मुझसे नफ़रत करता है । लेकिन आपकी तक़रीरो से फिर वह ख्याल इस तरह पलटा खाता है, जिस तरह बारिश ख़त्म होजाने पर, मतला साफ़ हो जाता है ।

शाह साहब—तुम मत सोचो । इन बातो के सोचने का काम इस बूढ़े फ़क़ीर पर छोड़ दो । किसी दिन तुम्हारी क्या, सारी दुनिया की समझ में आजायगा, कि मैं तुमसे क्यो डाके डलवाता हूं ? शादियाबाद के जिलावतन किए हुए एक क़ौमी रहनुमा को क्यो इस रास्ते पर चलाता हूँ ? मेरे अज़ीज़, तुम डाकू नहीं हो, बल्कि डाकू वह हैं, जो ज़ाहिर में तो अपने आप को ग़रीबो का मददगार बताते हैं, लेकिन बातिन में उनका खून चूस चूसकर, उनकी प्यारी ज़िन्दगियों पर डाके डाल डालकर, खुद बड़े आदमी बनजाते हैं—

लड़ो दुनिया मे बढ़ बढ़ कर, मगर तुम आन पर लड़ना।
वतन का दर्द रखते हो, तो उसकी शान पर लड़ना॥
हमेशा दीन पर, ईमान पर, इस्लाम पर लड़ना।
ख़ुदा के गर हो बन्दे, तो ख़ुदा के नाम पर लड़ना॥

कमाल– लेकिन शाह साहब, हमारी राय में तो लड़ने भिड़ने की बजाय अमन की ज़िन्दगी बसर करना अच्छा है।

जमाल—हाँ, ख़ुदा के बन्दो पर तलवार न चलाकर, उसके नाम की तसबीह फिराना अच्छा है।

कमाल—मैं तो जब तलवार उठाता हू तो हाथ में झटका आजाता है।

जमाल—और मुझसे तो तलवार का बोझ ही नहीं संभाला जाता है।

शाह साहब—तुम बुज़दिल हो, कम हिम्मत हो, जलालुद्दीन हैदर के भतीजे होकर भी, उसके भतीजे कहलाने के मुस्तहिक़ नहीं हो।

जलाल—मैं भी यही समझता हूं। मैं जिस वक़्त इन तीनो बच्चो पर नज़र उठाता हूं, तो हिम्मत और शुजाअत के निशानात, (हमीदा की तरफ़ इशारा करके) इस लड़की ही के चेहरे पर ज्यादा पाता हूं।

शाह साहब--तुम्हारा ख़याल ठीक है। तुम्हारे यह दोनो भतीजे, मेहनतकी तालीमगाह में मोम के चिरागों की तरह पिघल जाते हैं, और तुम्हारी यह्‌जहीन बेटी, इम्तिहान के काले बादलों मे, बिजली की तरह अपनी चमक दिखलाया करती है-

सब से पहले यह सबक़, सीख लिया करती है।
फिर दर्द इनके पढ़ाने मे दिया करती है॥
है यह वह शमअ जो, फ़ानूस के अन्दर रहकर।
बज़्म को रौशनो पुर नूर किया करता है॥

जलाल-(हमीदा से) शाबाश बेटी, तुम शाह साहब से कहाँ तक तालीम हासिल कर चुकीं ?

हमीदा—अब्बाजान, तलवार चलाना सीख चुकी, पानी पर तरना जान गई, घोड़े पर दौड़ना आगया, अब शिकार खेलने जाया करती हूं।

शाह साहब—गो-कि औरतों के लिए फ़ने सिपहगरी ममनूअ है, मगर इसकी तबीअत शुरू ही से इसी तरफ़ रुजूअ है।

कमाल—हम भी तो यह सब बातें जान चुके है।

जमाल—हम भी तो शिकार खेलने जाया करते हैं।

जलाल—(कमाल से) तुमने कल किसका शिकार किया।

कमाल—बत्तख़ का।

जलाल—(जमाल से) और तुमने ?

जमाल—मुर्ग़ का।

जलाल—(हमीदा से) और तुमने हमीदा ?

हमीदा—अब्बाजान, मैं इन छोटे छोटे परन्दो पर तीर चलाना पसन्द नहीं करती, मुझे तो शेर के शिकार का शौक़ है—

जो अपनी मीठी बोली से, जङ्गल में मङ्गल करती हैं।
उन फुर फुर उड़ती चिड़ियों की छाती छेदे वह तीर नहीं॥
जो कमज़ोरों का ख़ून बहा, अपना मुँह लाल बनाती है।
वह छुरी किसी क़स्साब की है, ज़ोरावर की शमशीर नहीं॥

कमाल—(ख़ुद से) ओहो! इतना घमण्ड।
जमाल—(ख़ुद से) हमें शर्मिन्दा किया जा रहा है।
कमाल—(ख़ुद से) देखा जायगा।
जमाल—(ख़ुद से) बदला लिया जायगा।

जलाल—शाबाश मेरी बच्ची, शाबाश। ख़ुश किस्मत है वह बाप, जिसकी ऐसी होनहार औलाद हो। और, मुबारक है वह औलाद, जिसका (शाहसाहब की तरफ इशारा करके) ऐसा साहबे कमाल उस्ताद हो—
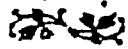
मुअल्लिम इल्म के बदले में, जब तनख्वाह पाता है।
तो वह शागिर्द को क्या, पेट को अपने पढ़ाता है॥
फकीर उस्ताद हो जिसका, वही दुनियां में बढ़ता है।
सिकन्दर वह ही होता है, अरस्तू से जो पढ़ता है॥

कमाल—(जमाल से) अरे! हमे तो कोइ पूछता ही नहीं।

जमाल—(कमाल से) इस डेढ़, बालिश्त की लड़की के सामने, साढ़े तीन हाथ का आदमी किसी को सूझता ही नहीं।

शाह साहब—अच्छा तुम तीनों इम्तिहान के मैदान में आगे आओ। जलाल के सामने इल्मो शुजाअत के जाहर दिखाओ।

कमाल—लीजिये, पहले मैं सामने आता हूँ।

जमाल—नहीं, पहले मैं क़दम बढ़ाता हूँ।

जलाल—अच्छा बताओ, चाँद किसको रोशनी से चमकता है।

जमाल—खुदा की रोशनी से।

कमाल—अपनी रोशनी से।

हमीदा—नहीं सूरज की रोशनी से।

जलाल—ठीक है, फिलसफ़ा यही कहता है।

कमाल—रात के वक्त सूरज की रोशनी ?

जमाल – कहां धूप, कहाँ चाँदनी ?

कमाल—हमने ठीक कहा था कि चाँद अपनी रोशनी से चमकता है। अगर कोई नहीं समझे, तो इसमे हमारी क्या खता है ?

जमाल—अगर सूरज की रौशनी से चांद चमक पाता, तो जिस तरह धूप से पसीना आजाता है, उसी तरह चाँदनी से भी आजाता। इसीलिये, मेरी राय है कि खुदा की रौशनी से चांद चमकता है। जो कुछ करता है, वह खुदाही करता है।

जलाल—अच्छा यही बताओ खुदा कहा रहता है ?

कमाल—अर्श पर।

जमाल—बहिश्त में।

हमीदा—नहा, हर जगह पर, ज़र्रे ज़र्रे मे—

वह है अर्श पर, वह है फ़र्श पर, कोई खास उसका मकाँ नही।
वह यहां भी है, वह वहां भी है, वह कहीं नहीं, वह कहां नहीं॥
वह शजर में है, वह समर में है, वह हर एक जेरो जबर में है।
वो जहाँ में है, तो जहां है यह, वह नही अगर तो जहाँ नहीं॥

जलाल—शाबाश मेरी दुख्तर।

शाह साहब—(कमालो जमाल से) बस, बैठ जाओ बेवकूफ़ लड़को, तुम आज भी हमेशा की तरह, बेवकूफ़ी के इम्तिहान मे कामयाब हुए।

कमाल—लो, शाह साहब कहते है, कि तुम कामयाब हुए।

जमाल—जब शाह साहब कहते हैं कि कामयाब हुए, तो ज़रूर कामयाब हुए।

शाह साहब—यह इनकी बेवकूफ़ी के इम्तिहान में दूसरी कामयाबी है। इल्म की जांच होचुकी, अब शुजाअत की आज़माइश बाकी है। (दो डाकुओं से) जाओ, ज़रा उस शेर को यहाँ लाओ, जिसको सर्दार ने कलही पिंजरे में डाला है।

(दो डाकू शेरको लेने जाते हैं)

जलाल—जिस तरह एक माली, यह तमन्ना रखता है कि उसका लगाया हुआ बाग फूले, फले और सर सब्ज़ होजाय, उसी तरह एक बाप, यह ख़्वाहिश रखता है कि उस की औलाद जिये, जागे और अपने ख़ानदान की इज़्ज़त बढ़ाये। (शेर का पिंजरा आजानेके बाद, कमालो जमाल से) बोलो, तुम दोनों मे से कौन ख़ूँख़्वार जानवर से कुश्ती लड़ सकता है ?

कमाल—चचा जान, जानवर से क्या कुश्ती लड़ें ?

जमाल—कोई इन्सान हो, तो उससे दो दो हाथ भी करें।

कमाल—मुझे तो अपनी पोशाक मैली होजानेका ख़याल है।

जमाल—और, मेरे सामने कंघी से बने हुये बाल बिगड़जाने का सवाल है।

कमाल—मेरी राय में तो—

बेवजह किसी को भी सताना नहीं अच्छा।

जमाल—मक्खी को भी मुँह पर से उड़ाना नहीं अच्छा।

शाह साहब—क्यों जलाल, इनकी शुजाअत को देखा ?

जलाल—देखा ! मैं तो इन लड़कों से तभी मायूस होगया था, जब भावज के बीमार रहने की वजह से, भाई साहब ने इन्हें दाया का दूध पिलाया था।

शाह साहब—(हमीदा से) अच्छा, आ। ऐ अपने अता-लीक़ के नाम को चमकानेवाली, अपनी क़ौम, अपने मुल्क, और अपने बाप की इज़्ज़त को बढ़ानेवाली-आली हौसला हमीदा आगे बढ़, और अपनी ताक़त दिखा। इस शेर को अपने भाले से हलाक़ कर।

हमीदा—या अली मदद ! या मुरशद मदद !

(हमीदा भाले से शेरको मार डालती है)

दूसरा सीन

मुकाम—शाहीमहल का एक हिस्सा ।

—❀❀❀—

(चार शरीफ़ लड़कियों का दाख़िला)

—❀❀—

गाना ।

—❀—

लड़कियां—

ऐ ख़ुदा अब तुही ग़मगुसारहै कोई सुनता न अपनीपुकारहै ।
कौमे निसवां हुई इतनी ख्वार है ।
उधर मां बाप की, गुरबत ने मिटा रक्खा है ।
इधर ऐयास रईसों ने, सता रक्खा है ॥
एक अस्मत ही सलामत थी, सो बदबख्तीने ।
उसको नीलाम की, बोली पै चढ़ रक्खा है ॥
हाय ग़म से यह सीना फ़िगार है ।

—०—

पहली लड़का--बहनो, बड़ा जुल्म है

दूसरी लड़की--यह मुई अल्लामा, जो हमें बहका फुसला कर, इस मुक़ाम तक लाई है, ज़रूर किसी की सिखाई है।

तीसरी लड़की--यह उसी सुल्तानके पाजी मुसाहब, सलामत बेग की कार्रवाई है।

चौथी लड़की--हाय! शहर का दोशीज़ा लड़कियों को इस तरह जबरन शाही महल में बुलवाना कहाँ की शराफ़त है?

(अल्लामा का दाखिला)

अल्लामा--बेवक़ूफ़ लड़कियो, यह तुम्हारे लिये बाइसे इज्ज़त है, कि तुम सुल्तान की बेगम बनाई जारही हो। टुकड़े मांग २ कर खाने के बजाय शाही दस्तरख्वान पर बिठाई जारही हो-

गुलरुखो मै तुम्हे गुलज़ार में पहुंचाती हूं।
हार में शह के अभी फूल सा गुंधवातोहूँ॥

पहली लड़की--हम गरीब लड़कियें उन गुनाहों की हवा से गन्दे गुलज़ार पर-ठोकर मारती हैं।

दूसरी लड़की--हराम के धागे में गुंधे हुये शाही हार लानत भेजती हैं।

तीसरी लड़की--हम तो उसे अपनी अस्मत के सदक़े भी न उतारें।

चौथी लड़की--ऐसे बेईमान पर पैजार भी न मारें।

पहली लड़की--तमन्नाहै तुझे ज़रकी तो है इज्ज़त हमेप्यारी।

दूसरी लड़की--भिखारीहैं,मगरहै दौलते अस्मत हमेप्यारी।

तीसरी लड़की-झुकाएँगी न उसक़स्सावके क़दमों पै सर अपने।

चौथी लड़की-यहीं कुरबान होजाएँगी हम अल्लाहपरअपने।

अल्लामा--अगर तुम राज़ी खुशी चलने पर आमादा न होगी, तो मैं तुम्हें ज़बरदस्ती वहाँ तक ले जाऊँगी। इतनी मेहनत करके जब इनाम का वक़ आया, तो क्या उस वक़ को मुफ्त में गँवाऊँगी ?

पहली लड़की--तो क्या हमे सुल्तान के पास पहुंचाने पर, तू इनाम पायेगी ?

अल्लामा--और नहीं तो क्या, कोई मुफ्त में दर्दे सर खरीदता है ? एक दोशीज़ा लड़की के लाने पर, शाही जेब से एक मुहर का इनाम मिलता है।

दूसरी लड़की--तो हम चारों मुसीबत ज़दा लड़कियें अपने खुदा को हाज़िर और नाज़िर समझकर क़सम खाती हैं, कि तू अगर हमें छोड़दे तो हम तुझे चार मुहरें इनाम में देंगी।

अल्लामा--तुम्हारे पास ऐसा कौन सा क़ारूँ का ख़ज़ानाहै ?

तीसरी लड़की—यह भीख माँगने वाले हाथ। हम ग़रीब लड़कियां दर दर गिड़गिड़ायेंगी, पैसा पैसा जोड़कर, दो चार दिनों में नहीं तो दो-चार महीनों में ज़रूर तेरा क़र्ज़ा चुकायेंगी।

चौथी लड़की—

इन आम के पहले इधर, इस इल्तिजा को देख।
कुछ भी हया हो गर, तो हमारी हया को देख॥
दो रोज़ की है ज़िन्दगी, ग़ाफ़िल क़ज़ा को देख।
तुझको क़सम ख़ुदा की है, अपने ख़ुदा को देख॥

अल्लामा—

वहां उतना कहो, जितना समझ में बेगुमां आये।
ख़ुदा को क्या ग़रज़ है, जो हमारे दरमियां आये॥

पहली लड़की—आएगा क्यों नहीं? वह हर एक पुकारने वाले की पुकार पर आता है।

दूसरी लड़की—वह हर एक सितम रसीदा को मुसीबत से बचाता है।

तीसरी लड़की—

ऐ ग़रीबों की मुसीबत को, हटानेवाले।
ख़ुफ़ता बख़्तों के नसीबों को जगानेवाले॥

चौथी लड़की—

देखले हमको सताते हैं सताने वाले।
वक़्त पर क्यों नहीं आता है, ओ आनेवाले॥

तीसरी और चौथी लड़की—

तू है मौला तो, मुसीबत से छुड़ाने आजा।
नाव मँझधार मे है, पार लगाने आजा ॥

अल्लामा—(तीसरी और चौथी लड़की की गर्दन पकड़ कर) देखूं तो तुम्हे किस तरह खुदा बचायगा । (दिलेरजंग का आना)

दिलेरजङ्ग—(अल्लामा की गर्दन पकड़ कर) इस तरह । खुदा का एक बन्दा बचायेगा ।

अल्लामा—है ! फ़ौज के सरदार ?

दिलेरजङ्ग—हां, दिलेरजङ्ग सिपहसालार । इन ग़रीब लड़कियों का मददगार ! अल्लामा, बता, तू किसके हुक्म से यह हराम कमाती है ? सुल्तान के नाम से किस हरामखोर का घर बसाती है ?

अल्लामा—हुज़ूर ! हुज़ूर !!

दिलेरजङ्ग—बदमाश ! मग़रूर !! बेकार बात नहीं सुनी जायगी । शरीफ़ लड़कियों को धोखा दे दे कर लाती है और इस सल्तनत के नाम का धब्बा लगाती है ? बता, बता, किसके इशारे से तू यह हराम कमाती है ?

अल्लामा—सरकार ! सरकार !!

दिलेरजङ्ग—नाम बता बदकिरदार ! वर्ना अभी यह खञ्जर होगा सीने के पार । बोल, बोल, यह चावल जिस में पकते हैं, वह कोनसी है देग ?

अल्लामा—मुसाहब सलामत बेग ।

दिलेरजङ्ग-ख़ैर, तूने इस वक्त सही नाम बता दिया, इस लिये मैंने तुझे रिहा किया । जा चलो जा ।

अल्लामा—एक बात—

दिलेरजङ्ग-बस, चली जा ।

अल्लामा-ज़रा सी अर्जदाश्त ।

दिलेरजंग--चलो जा, चलोजा । (लडकियों की तरफ़ रुख करके) खुदा की मासूम ख़लकत, तू भी जा । (अल्लामा का एक तरफ़ और चारों लड़कियों का दूसरी तरफ़ जाना) देखले ! देखले ! ऐ परवरदिगारे आलम ! अपनी उस दुनियां को देखले, जिसमें सूरज तेरे जलाल की शान दिखाता है । चांद अपनी ठंडी किरनों से राहत पहुँचाता है । जिस दुनियां मे तेरी रहमत, हवा के सर्द झोंके बनकर चलती है, जिस दुनियां में तेरी सखावत, खुशगवार फूलों से खुशबू बनकर निकलती है, उसी दुनियां को यह नापाक बन्दे, कितनी नजिस, कितनी गन्दी बना रहे है ! बेगुनाह और क्वारी लड़कियो की असमत को छुप छुप कर दाग़ लगा रहे हैं—

जो बना है उन्स से, क्या यह वही इन्सान है ?
क्या यही तहज़ीब का पुतला, हया की कान है ?
अशरफ़-उल-मख़लूक़ कहते हैं जिसे अहले नज़र ।
हिर्स का बन्दा है वह, इन्सां नहीं, हैवान है ॥

—०—
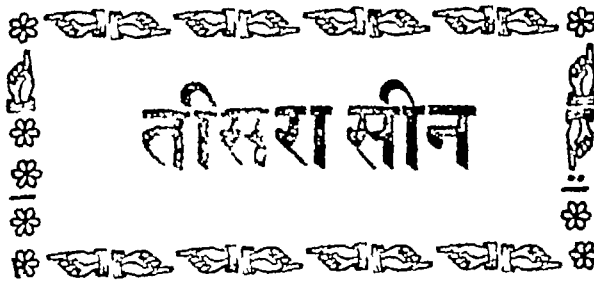
(स्थान—शाही महल)

—❀❀—

(सुलतान को सलामत वेग शराब पिला रहा है)

❀ गाना ❀

—❀—

रामिशगरान—

ऐ प्यारी मोहनियां, सजीली सोहनियां,
बरसावो आज रंग रस री।
अठखेली करो गुइयां, गरवा में डारो बयाँ,
बरसावो आज रंग रस री।
काकुल को न रुख़ पै गिरा के चलो,
बदली में न चाँद छुपा के चलो।
ज़रा जलवये हुस्न दिखा के चलो,
इठला के चलो, मुसका के चलो।

मशरिकी हूर

आशिक के मज़ार पै आके सनम,
झांझन को ज़रा झनका के चलो।
गर आये हो तो ठुकरा के चलो,
मुर्दों को जगा के, जिला के चलो।
चपला चंचल, मचल मचल कर, मुख पर अंचल डाल
बरसावो आज रंग रस री।

(जाना)

सलामत—हुजूर, एक जाम और—

मुरस्सा महल रश्के बाग़े जिनाँ है।
ज़मीं से यहां की ख़िजल आस्माँ है॥
हवा सर्द है क्या सुहाना समां है।
जवानी है और महफ़िले महवशां है॥
सुराही में मय है, खुदा मेहरबाँ है।

सुल्तान—(शराब का प्याला लेकर) हाँ, ला। एक प्याला [illegible] का—

दिल को सुरूर मिलता है, जामे शराब से।
ज़र्रे को नूर मिलता है, इस आफ़ताब से॥

सलामत—(मुंह फेर कर)

सब्ज़ बोतल में लाल लाल शराब।
अब तो ईमान का खुदा हाफ़िज़॥
दुख्तेरज़ बेतरह लगा मुँह से।
इस मुसलमान का खुदा हाफ़िज़॥

सुल्तान—सलामत !

सलामत—हुजूर सलामत ।

सुल्तान—आस्मान के मग़रबी गोशे मे शफ़क़ की लाली है।

सलामत—सरकार, मालूम होता है, वहां भी फ़रिश्तों ने मये कौसर ढाली है—

> महफिल जमी हुई है, उधर भी शराब की ।
> गुलगूनये शफ़क मे है, सुर्खी शराब की ॥

सुल्तान—सलामत !

सलामत—खुदावन्द नेमत ।

सुल्तान—उकबा की सब से बड़ी दौलत क्या है ?

सलामत—इबादत ।

सुल्तान—और दुनिया की बेहतरीन नेमत क्या है ?

सलामत—ऐशो इशरत ।

सुल्तान—तो बस, मै ऐशो इशरत ही चाहता हूं । सलामत मै ऐशो इशरत ही चाहता हू ।

सलामत—बेशक । सल्तनत और बादशाहत पाकर भी ऐशो इशरत न करना, खुदा की मेहरबानियों से मुनकिर होना है, उस की दी हुई नेमतो का तौहीन करना है ।

सुल्तान—लेकिन-रियासत का इन्तज़ाम ?

सलामत—हुजूर को उससे क्या काम ?

सुल्तान—क्यों ?

सलामत—उसका इन्तज़ाम, तो हुजूर का नमकख्वार कर ही रहा है—

होते हैं अहलकार ही, हर काम के लिए ।
सुल्तानो शाह होते हैं, आराम के लिए ॥

सुल्तान—तो बस मैं ऐशो इशरत ही करूंगा । सलामत मैं ऐशो इशरत ही करूंगा । लेकिन सलामत !

सलामत—हुजूर ?

सुल्तान—जब मैं छुप छुप कर शहर की बहू बेटियों को तुम्हारी मार्फ़त बुलवाता हूँ, जब मैं तनहाई में तुम्हारे साथ बैठ बैठ कर शराब के प्याले पर प्याले चढ़ाता हूँ, तो कभी कभी यह भी महसूस करता हूँ कि मेरे इन अफ़आल को कोई देख रहा है।

सलामत—कौन देख सकता है ? मैंने तमाम देखनेवालों के रास्ते बन्द कर दिए हैं।

(दिलेरजंग का दाखिला)

दिलेरजङ्ग—खुदा देख सकता है जिसकी बेशुमार आंखों को तमाम दुनिया के इन्सान भी मिलकर बन्द नहीं कर सकते ।

सुल्तान—कौन ? दिलेरजङ्ग ? सिपहसालार ?

दिलेरजङ्ग—आली सरकार ।

सुल्तान—तुम ! यहाँ ! इस वक्त !

दिलेरजङ्ग—सुल्ताने आलम, जिस वक्त एक वफ़ादार नौकर की आँखें, अपने आक़ा के सर पर आनेवाली मुसीबत को देख लेती हैं, उस वक्त ईमान का जज़्बा, नमकख़ारी का पास, और वफ़ादारी का जोश उसको मजबूर करता है कि वह वक्त नावक्त का ख़्याल छोड़कर, उस तूफ़ाने अज़ीम को रोकने के लिए जितनी मुमकिन तदबीरें हों, अमल में लाए। और हुकूमत के डूबते हुए जहाज का बचाए—

सल्तनत क्या चीज़ है ? एक बहर है गिर्दाबदार।
नाव है इन्साफ़ का, जिसपर कि हम सब हैं सवार ॥
इसको गर लरज़िश हुई कुछ भी तो सब बेइस्तबाह।
डूब जाएँगे, किसी सूरत न पाएँगे पनाह ॥

सुल्तान—मैं नहीं समझता कि तेरी तक़रीर क्या मानी रखती है ?

दिलेरजङ्ग—तअज्जुब की बात है कि तमाम शहर में बग़ावत की ख़ौफ़नाक आग फैली हुई है, और सुल्तान को ख़बर तक नहीं पहुँची ! वहां हर एक इज्जतदार बाशिन्दा दिलही दिल में जल रहा है और यहां अभी तक शराब का दौर चल रहा है !

सलामत—शराब का दौर ? क़तई नहीं। शराब को तो सुल्ताने आलम बहुत ही नजिस और हराम समझते हैं। यह

यो ज़रा हुज़ूर के दुश्मना को तपे नज़ला होगया है, जिसकी वजह से शर्बते बनफ्सा इस्तेमाल कर रहे हैं।

सुलतान—बग़ावत! कैसा बग़ावत? क्यों सलामत?

सलामत—सरकार, हमारे सिपह सलार साहब को तो वहम सवार है, क्योंकि इनकी फ़ौज बहुत दिनों से बेकार है। वर्ना न कहीं बग़ावत है, न पुकार है।

सुल्तान—सीग़ए माल को कौन सभालता है?

सलामत—मैं।

दिलेरजङ्ग—तभी तो मालगुज़ारी तमाम बाक़ी है!

सलामत—यह तो रहम और मेहरबानी की बात है।

सुल्तान—सीग़ए जङ्गलात के ठेके कौन देता है?

सलामत—मैं।

दिलेरजङ्ग—तभी तो जङ्गल रोज़ बरोज़ कटते जारहे हैं!

सलामत—यह तो सफ़ाई की बात है?

सुल्तान—तामीरात सरकारी को कौन देखता है?

सलामत—मैं।

दिलेरजङ्ग—तभी तो मकानात का मरम्मत तक नहीं होती।

सलामत—यह तो किफ़ायत शआरी की बात है। सिपह-सालार साहब, आपको शाही मामलात की क्या ख़बर है?

दिलेरजङ्ग—ख़बर है। शहर की बहू बेटियों को जबरदस्ती पकड़ पकड़ कर बुलाया जाता है और उनको बेइज़्ज़त, बे अस्मत बनाया जाता है। ग़रीबों को बेगार से, दौलतमन्दों को नज़रानों की मार से, फ़रियादियों को धुत्कार से, और रिआया के रहनुमाओं को हथकड़ी और बेड़ियों के वार से दबाया जाता है। जब इतना अन्धेर है तो रिआया क्या न बग़ावत फैलायगी? क्यों न सुल्तान के मुक़ाबिले के के लिए तैयार होजायगी—

दिखाना चाहते हैं शाह को, सब आबले दिल के।
छुपा सकते नहीं सीने से, अब टुकड़े जले दिल के॥
सबब यह है जो होठों तक, नहीं आते गिले दिल के।
दबे हैं राबे सुल्तानी से, सारे हौसले दिल के॥

सलामत—तो वह उससे आकर क्यों नहीं कहते, जो सल्तनत का एक बाअख़्तियार मुसाहब है। तुम्हें जहांपनाह के पास क्यों भेजते हैं?

दिलेरजङ्ग—तुमसे, और आकर कहें? तुम्हीं उनकी आँखें फोड़ो और तुम्हारे ही आगे आकर रोयें—

बतलाए सबब मौत का, क्या कोई क़ज़ा का।
क्या ज़ख़्म दिखाए कोई, शमशीरे जफ़ा को॥
कहते हैं फ़क़त इतना ही, क़ातिल से वह मक़तूल।
बस, बस, सितम ईजाद! ज़रा देख ख़ुदा को॥

सलामत—यह तो सुलतान के एक मुसाहब की जात पर खुला खुला हमला है।

दिलेरजङ्ग—हाँ, खुला खुला हमला है। रिआया ने तुम्हारा ही जात पर दायर किया है। तुम्हारा ही वजह से रिआयाने बग़ावत का झगडा खडा किया है। सुल्तान, उससे बरीउज्ज़म्मा हैं। क्योंकि वह तो इन्सान की शक्ल मे एक फ़रिश्ता हैं। रिआया मिस्ल औलाद के है और बादशाह उसका बाप। कोई भी बाप अपनी औलाद पर निगाहे बद नहीं उठायेगा, कोई भी बादशाह अज़मत और बुजुर्गी के तख्त पर बैठकर इतना ज़लील इतना कमीना, और इतना सङ्गदिल नहीं होगा। क्यों खुदावन्द आलम पनाह ?

सुल्तान—बेशक, बेशक।

सलामत—(मुह फेरकर) कम्बख्त बड़ा ही होशियार है। सुल्तान ही को गालियाँ सुनाता है और सुल्तान ही से उसकी दाद लेता जाता है।

सुल्तान—अच्छा दिलेरजङ्ग, रिआया से जाकर कहो—मैं खुद कल उसका इन्साफ़ करूँगा।

सलामत—कल तो हुजूर बटेरों की लड़ाई का दिन है।

सुल्तान—तो परसों सही।

सलातत—परसो का दिन तो पतंग बाजी के लिए मुकर्रर है।

सुल्तान—तो उसके बाद के दिन सही।

सलामत—उसके बादके दिन तो हुजूर घुड़दौड़ देखनेजायंगे।

सुल्तान—अरे, तो उससे भी अगले दिन सही।

सलामत--उससे भी अगले दिन किश्ती पर सैर फ़र्मायेंगे।

दिलेरजङ्ग----तो यह कहिये ना, कि उम्र भर फ़रियाद सुनने का वक़्त ही नहीं आयगा।

सुल्तान--नहीं, आयगा और ज़रूर आयगा। दिलेरजङ्ग, तुम जाकर रिआया को समझाओ, मैं इसी हफ्ते में उसकी फ़रियाद सुनूंगा।

दिलेरजङ्ग—जो हुक्म जहाँपनाह। (दिलेरजंग जाता है सलामत सुलतान को फिर शराब पिलाता है इतने में दो का घंटा बजता है)

सुल्तान—है! दो बज गए! बस सलामत, अब सोने का वक़्त होगया।

सलामत--सो जाएँ सुलतान। (सलामत सलाम करके चला जाता है। उसके बाद सुलतान सोने के लिये ऊपर के कमरे में जाता है। सलामत बेग फिर लौटकर आता है और बत्तियाँ बुझाता है)

सलामत—यही वक़्त है। मैं चोर दरवाज़े से ख़ज़ाने में जाऊँ और कुछ जवाहरात चुराऊँ। मैं जो इसे रोज़मर्रा शराब पिलाया करता हूं महलसरा में हर रोज़ नई नई औरतें बुलवाया करता हूं, वह किस लिए? इसीलिये कि यह नेकबख़्त हमेशा बेख़बर रहे और मैं जानिब को जेब दाख़िल से पुर रहूं। (सुलतान के पास जाकर) मारा गया, लगातार शराब के प्याले पीने की वजह से

फौरन ही ग़ाफिल होगया। बस अब खौफ़ है न खटका। वह है सामने ख़ज़ाने का चोर दर्वाज़ा।

(ख़ज़ाने के अन्दर चला जाता है, जलाल आता है)

जलाल—(आप ही आप) शाही ख़ज़ाने के सदर दर्वाज़े पर सङ्गीना का पहरा है। उस रास्ते से गुज़रने पर, गरीब सिपाहियों का खून बहाना पड़ता है। इसलिये, उस चोर दर्वाजे से जाने का मैंने इरादा किया है, जिसका इस महल के अन्दर से रास्ता है। (ख़ज़ाने का दर्वाज़ा खोलता है) लेकिन–हैं! इसके अन्दर तो कोई है! देखूं, कौन है।

सलामत—(खज़ाने के अन्दर बक्स में से एक हार निकालकर) यह है। यह कीमती हीरोंसे बनाहुआ हार, एक चीज़है जो इस रियासत को बेबहा दौलत और सुल्तान को जानसे ज़्यादा अज़ीज़है।

(जलाल लपककर सलामत का हार छीन लेताहै)

सलामत—हैं! कौन? जलावतन किया हुआ क़ौमी रहनुमा! तू यहाँ किस लिए आया है?

जलाल—मैं? मै चाहता हूं खुदा की दी हुई दौलत को, गैरहक़दार के पंजे से निकाल कर हकदारों के हाथ में पहुँचा दूं। आफ़ताब के हर ज़र्रे को आफ़ताब, और समन्दर के हर क़तरे को समन्दर बनादूं। तू चोरी कर रहा है अपने वास्ते। और मैं चोरी करने आया हू अपने, गरीब भाइयों के वास्ते।

सलामत—पागल होगया है।

जलाल—लेकिन गुनहगार नहीं।

सलामत—सल्तनत का मुजरिम है।

जलाल—लेकिन, हरामकारी का मददगार नहीं।

सलामत—तू यहां से नहीं जायगा?

जलाल—जाऊँगा, लेकिन इस ख़ज़ाने की दौलत और तेरा चुराया हुआ हार लेकर जाऊँगा।
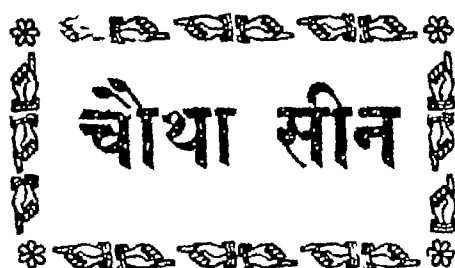
सलामत—अच्छा तो ले। मै इससे पेश्तर ही तुझे जहन्नुम का रास्ता दिखाऊँगा (सीटी बजाता है) दौड़ो, दौड़ो, डाकू! डाकू! (फौरन सिपाही आकर जलाल के गले में रस्सी डाल देते हैं इतने में सुल्तान भी जाग जाते हैं और बरामदे में आजाते हैं)

सुलतान—क्या है, क्या है, सलामत यह क्या माजरा है?

सलामत—हुज़ूर, जब मै आपसे रुख़सत होकर, अपने मकान की तरफ जारहा था, तो उधर से यह जलालुद्दीन शाही महल की तरफ आरहा था, मै इसके पीछे पीछे हो लिया। यह शाही महल में आया और चोर दरवाज़े से ख़ज़ाने मे घुसा। मैं भी उसके साथ ही लगा रहा। इसने जैसे ही सन्दूक का ताला तोड़कर, यह नौलखा हार हाथ मे उठाया, मैंने फौरन ही शोर मचाकर पहरेदारों को बुलाया और इसे गिरफ्तार कराया।

जलाल—(सलामत से) तूने? गिरफ्तार कराया? बदमाश, बदकिरदार, फ़रेबी, मक्कार,—(रस्सी तोड़ देता है)

सुलतान—बस, ख़बरदार! [इधर सुल्तान जलालको पिस्तौल दिखाता है उधर सलामत की दूसरी सीटी पर चारों तरफसे भाला लिये हुए सिपाही आकर जलाल को घेर लेते हैं]

मुक़ाम--जंगल

(कमाल और जमाल आते हैं)

कमाल--अमाँ जमाल।

जमाल--हाँ मियाँ कमाल।

कमाल--यह हमीदा तो रोज़बरोज़ आगे बढ़ती जाती है।

जमाल--हाँ बिला मूछों वाली, मूछोंवालों को बात बात में छिपाती है।

कमाल--यह न होती, तो मैं अब तक रुस्तम कहलाया होता।

जमाल--और मैंने सोहराब का ख़िताब पाया होता।

कमाल----जमाल, वाक़ई तुम जमाल हो।

जमाल---और कमाल, तुम भी कमाल हो।

[अकमलशाह का मय हमीदा के आना]

अकमलशाह,---क्यों लड़को, आज भी तुम खड़े खड़े बातें कर रहे हो? गतका खेलने की मश्क़ अभी तक नहीं की?

कमाल--उस्ताद साहब, गतके की तालीम तो हमने ख़ू.. र करदी।

अकमलशाह--पालट, चाकी, घाई, छूट और हथकटी, सब जान गये ?

जमाल—यह सब जान गये या नहीं, यह तो नहीं कह सकते, लेकिन गतका जान गये।

अकमलशाह--बड़े बेवक़ूफ़ हो। अच्छा, अगर जान गये, तो हमीदा के साथ दो-दो हाथ दिखाओ।

कमाल, लीजिये। [कमाल उलटे हाथ से गतका उठाता है]

अकमलशाह--ठहरो, तुमने उलटे हाथ से गतका उठाया।

कमाल—हां, ठीक है। इस वक़् मेरा खयाल ज़रा दूसरी तरफ़ था। [हमीदा से] अच्छा, आओ हमीदा, (दोनों लड़ते हैं कमाल चोट खाकर गिर जाता है) लानत है इस खेल पर। इस ज़ोर से कलाई में झटका आया कि सारा हाथ भिन्ना गया।

अकमलशाह-बस, हट जाओ कमाल। तुम्हारा कमाल देख लिया गया। जमाल,तुम आगे आओ। (जमाल उलटी तरफ से गतका उठाता है) ठहरो, तुमने भी गलती की, उलटी तरफ से गतका उठाया।

जमाल--उलटी तरफ से उठाया, या सीधी तरफ से, उठाया तो नहीं। अच्छा लीजिये. सीधी तरफ से होगया।आओ हमीदा (दोनों लड़ते हैं, जमाल हाँप जाता है) ज़रा ठहर जाओ।

अकमलशाह--क्या दम खत्म होगया ?

जमाल—उस्ताद साहब, यह आप क्या फ़र्माते हैं ? अगर दम ख़त्म होजाता, तो लेट न जाता ? यह तो मैं ज़रा दम ले रहा हूँ।

अक़मलशाह—या दम ले रहे हो ? (हमीदा से) तू तो नहीं थकी हमीदा ?

हमीदा—नहीं शाह साहब, मुझ में तो अभी इतना दम बाक़ी है कि इन दोनों से एक साथ खेल सकती हूँ।

कमाल—हूँ, आज भी इतना घमंड ?

जमाल—फिर हमें शर्मिन्दा किया जारहा है।

कमाल—देखा जायगा।

जमाल—बदला लिया जायगा।

अक़मलशाह—(जमाल व कमाल से) अच्छा तुम दोनों एक तरफ़ हो जाओ। और हमीदा तुम अकेली दोनोंके वार बचाओ।

(अकेली हमीदा दोनों से लड़ती है)

कमाल—मैं तो गिरा,

जमाल—मैं तो मरा।

कमाल—मेरा तो सर-चकराया।

जमाल—मुझे तो ग़श आया।

अकमलशाह—(कमालो जमाल को ठहराकर) अच्छा, बस देखली तुम्हारी मश्क़ (हमीदा से) शाबाश, बेटी शाबाश।

तू बस है यकता दिलेर दुख़्तर,
जमीं के ऊपर फ़लक के नीचे।
बशर नहीं कोई तेरा हमसर,
जमीं के ऊपर फ़लक के नीचे॥
दुआएँ देता है यह मेरा दिल,
हिलाल से भी हो बदरे कामिल।
हमेशा चमके तेरा मुक़द्दर,
जमीं के ऊपर फ़लक के नीचे॥

(अबरार डाकू का दाख़िला)

अबरार—ग़ज़ब ! सितम ! क़हर ! तबाही !

अकमलशाह—या इलाही, ख़ैर !

अबरार—शाहसाहब, कोहे अलम टूट पड़ा। सर्दार शादियाबाद में गिरफ्तार होगये।

अकमलशाह—हैं ! गिरफ्तार हो गये ? अगर वह गिरफ्तार हो गये, तो तुम यहाँ कैसे ज़िन्दा चले आए ? जिन्हें सबसे पहले मरजाना था ? या तो सर्दारको छुड़ाना था, या ख़ुद खपजाना था

अबरार—पीरो मुरशद, हमारे सर्दार की ज़िद ने हमें ऐसा करने से मजबूर कर दिया। वह हम सब साथियों को, शहर के

शाहर ही छोड़ गये, और ख़ज़ाना चुराने के लिये अकेले ही गये। सुबह के वक़् ख़ज़ाना चोरी होने की ख़बर के बजाय, यह ख़बर शहर में गश्त करने लगी, कि जलालद्दीन गिरफ्तार होगये। बस, इस ख़बर के बाद, हम आपके पास यह इत्तला पहुंचाने के वास्ते लाचार होगये।

अकमल—बुरा हुआ। बहुत बुरा हुआ। अब सब से पेश्तर जलाल को उस क़ैदे शैतानी से छुड़ाने के सिवाय, और कोई चारा नहीं। क्यो कमाल? क्यों जमाल? चचा को छुड़ाकर ला सकते हो?

कमाल—मैं तो छुड़ा लाता, लेकिन इस गतकेबाज़ी ने मेरे जिस्म के अञ्जर-पंजर ढीले कर दिये।

जमाल—और मेरे तो होश-हवास ही इस मनहूस ख़बर ने उड़छूं कर दिये।

अकमलशाह—यह सब बातें तो रोज़ की हैं, लेकिन चचा को छुड़ाने का काम ज़िन्दगी में एक ही दफ़ा का है।

कमाल—लेकिन शाह साहब, पहले आप, पीछे बाप।

जमाल—पहले जान, फिर जहान।

अकमलशाह—कम्बख़्तो, पाजियो, लानत है तुम्हारी ज़िन्दगियों पर। तुफ़ है तुम्हारी बुज़दिलाना बातों पर। हाय! आज ग़रीबों का सहारा, क़ौम की आँखों का तारा, वह जलाल प्यारा. वह अभाग बेचारा, रंजो मुसीबत का शिकार होकर

शादियाबाद के कैदखाने में बन्द है। और इधर उसकी उम्मीदों के दियों की लौ इतनी मन्द है कि चिराग़े सहरी की तरह भी नहीं भड़कते, परन्दों की तरह भी इनके पर नहीं फड़कते। अब क्या होगा मेरे मौला ! कैसे यह नाव पार लगेगी मेरे अल्लाह !—

अंधेरी रात है, काली घटा है
किनारा दूर है दरिया चढ़ा है।
उधर बादे मुख़ालिफ़ चल रही है,
इधर मंझधार में बेड़ा पड़ा है॥

हमीदा—(आप ही आप) ऐ जवांमर्द बाप के खून ! उछल, ऐ दिलेर ख़ान्दान की हिम्मत ! आगे बढ़, ऐ ख़ुदावन्द करीम की रहमत मदद कर। (कमरुलशाह से) शाह साहब, जिस काम के करने में अकबर और उसके साथियों का गरोह लाचार है, जो काम मेरे भाइयों के वास्ते भी बहुत ही मुश्किल और दुश्वार है, उसी काम को ख़ुदा की मदद से, आपकी दुआ से, यह नाचीज़ लड़की तैयार है—

तीर हो नेज़ा हो बर्छी, तेग़ या तल्वार हो।
सर पे मेरे आग की या खून की बौछार हो॥
सामना गर हो क़यामत का भी तो बढ़ जाऊँगी।
मैं जो बेटी हूँ तो अपने बाप को ले आऊँगी॥

अकमलशाह—आली हौसला बेटी, शाबाश। मैं तुझे ज़ुरूर भेज देता, लेकिन कब ? जब कि तू बेटा होती। बेटी होने की वजह ही से तुझे इस काम के करने का हुक्म देना मुझे पसन्द नहीं है।

हमीदा—क्यों ? क्यों पसन्द नहीं है ? बेटी क्या बाप की औलाद नहीं समझी जाती ? बेटी को क्या बेटों की तरहसे माँ दूध नहीं पिलाती ?—

आज होगी कारगर तालीम मुर्शिद आपकी।
मैं दिखादूंगी कि क्या करती है बेटी बापकी॥

अकमलशाह—यह सब सच है, मगर लड़की, तू फिर भी लड़की है।

हमीदा—अगर लड़की का सवाल ही मेरे जोश और हौसले का हारिज है तो लीजिए मैं आज से लड़का हुई जाती हूं। मर्दाना लिबास पहनती हूं और हमीदा से हमीद बनकर, अपने बाप को छुड़ाने के वास्ते रवाना होती हूँः—

लड़की न समझिये इसे है नामकी लड़की।
तोड़ेगी अभी कुफ्र को इस्लाम की लड़की॥

अकमलशाह—ख़ैर! तेरी यही ज़िद है, तो जा, लेकिन अपने साथ चन्द मुसल्लह मददगारों को ले ली जा।

हमीदा—नहीं मैं अकेली ही जाऊँगी।

अकमलशाह—क्यों ?

हमीदा—यों कि अब्बा भी अकेले ही गये थे। मेरे सरपरस्त, आप ज़रा फ़िक्र न करें। अपनी शागिर्दी को इस जांबाज़ी के इम्तिहान मे, खुशी के साथ जाने की इजाज़त दें:—

नही है ख़ौफ़ मुझको वाद से, आतिश से, पत्थर से।
मैं लड़ जाऊँगी, खेलूंगी, बलाओं के समन्दर से॥
दिखाऊँगी मैं जौहर जङ्ग में जब तीरो ख़ञ्जर से।
लरज उट्ठेंगे दुश्मन नारये अल्लाहो अकबर से॥

अकमलशाह—फिर भी मेरा दिल तुझे अकेले भेजना नहा चाहता।

हमीदा—तो हमराही मे मुसल्ला मददगारों का बजाय, अपना दुआ दीजिए और यह फ़तहमन्द तलवार अता कीजिए।

अकमलशाह—अच्छा, खुदा हाफ़िज़। (अकमल शाह तल्वार देते हैं। हमीदा उनका हाथ चूमती है फिर तल्वार को चूमती है)

हमीदा—

अब नहीं कुछ डर कजा की तेग़ के भी वार का।
जागता जादू है मेरे पास इस तल्वार का॥

(जाती है)

अकमलशाह—(जमाल, कमाल से) देखो, देखो, ओ बुज़दिल लड़को, अपनी दिलेरदिल बहन की हिम्मतो शुजाअत को देखो और चुल्लू भर पानी में डूब मरो। मैंने अपनी नालोमगाह से तुम्हें ख़ारिज किया—

बञ्जर में बीज नहीं उगता, बालू से निकलता तेल नहीं।
कम्बख़्तो, मैंने समझ लिया यह मँढे चढ़ेगी बेल नहीं॥

(अकमलशाह और अबरार का गार की तरफ़ जाना)

कमाल—आज तो बहुत ही लताड़े गये।

जमाल—यह सब इसी लड़की की बदौलत है।

कमाल—मेरी राय में तो इसे क़त्ल कर देना चाहिए।

जमाल—हाँ, अपनी तरक्क़ी के रास्ते से इस ख़ारदार पौदे को हटा देना चाहिए।

कमाल—लेकिन, बहन है।

जमाल—अजी कैसी बहन? सगी बहन थोड़े ही है? बहन भी है तो चचाज़ाद बहन है।

कमाल—अच्छा, तो एक बार—

जमाल—और फिन्नार।

कमाल—दिखलायँगे कि हम भी कमालो जमाल हैं।

जमाल-मुँह पर नहीं है घास ये मूछों के बाल हैं।

गाना

—❀—

कमाल और जमाल—

हैं हम कमाल, हैं हम जमाल, दोनों बहादुर बड़ेही दिलावर
लासानी और बे—मिसाल।

जङ्गसे भागे जो कोई ज़वां, हम उससे आगे निकलते हैं हां।
गीदड़की बुडकीमें, बन्दरकी में, सानी हमाराहै कोई कहां।।
करते हैं शेरोंको दममें पामाल।

खटमल चींटी भी जब दबकर, काटने को होते तयार।
तो फिर हम तो मर्दहैं पूरे, क्यों न करें दुश्मन पर वार।।

—o—

मुक़ाम—जंगल मय दरिया

(दिलेरजङ्ग सिपहसालार एक हिरन के पीछे बन्दूक लिये हुए जाता है। बाद मे हमीदा मरदाने लिबास में आती है)

—o—

हमीदा—कौन कह सकता है कि इस वक्त मैं हमीदा हूं ? अब मैं हमीद हूँ। अब्बाजान की रिहाई के खयाल ने मुझे इस क़दर बेचैन बना रक्खा है कि न खाने की ख्वाहिश है, न सोने की तमन्ना, लेकिन दो रोज़ तक लगातार रास्ता चलने की वजह से जिस्म गिरता है। क़दम आगे की बजाय पीछे को पड़ता है। बेहतर है कि इस चट्टान पर कुछ देर आराम करलूँ, ताकि ताज़ा दम होकर, शादियाबाद की सर ज़मीन पर क़दम रक्खूं।

(एक बड़े से पत्थर पै सोजाती है। कमाल और जमाल आते हैं)

कमाल—वह इधर ही को गई है।

जमाल—लेकिन किस क़दर तेज़ चलती है। गोया हवा हो रही है।

कमाल—रास्ता चलने में भी इसने हमें हराया ॥

जमाल—हम घोड़े पर आये और, वह पैदल। फिर भी उसे पकड़ न पाया।

कमाल—(हमीदा को सोती देखकर) देखना, इस जगह कौन सो रहा है ?

जमाल—(देखकर) यह तो किसी बकरियाँ चराने वाले का लड़का है।

जमाल—अमां नहीं, यह तो वह ही हमीदा है। देखते नहा, लिवास मरदाना पहन रक्खा है।

जमाल—वाह मियां वाह ! अच्छे मौके से दुश्मन हाथ आया।

कमाल—हां, सोता हुआ पाया ।

जमाल—मगर ज़रा आहिस्ता बोलो ! कहीं जाग न जाय।

कमाल—हा जाग जायगी तो फिर हवा होजायगी ।

जमाल—अच्छा तो खामोशी के साथ तल्वार चलाओ, और इसे खुदागंज का रास्ता दिखाओ।

कमाल—तल्वार तो कमर में बँधो है । लेकिन उसका चलाना मुहाल है।

जमाल—हाँ, अपने हाथ मे भी तो लगजाने का खयाल है।

कमाल—मेरी राय में तो, कहीं से रस्सी लाओ और उस से बांध कर नदी में फेंक दो।

जमाल—तर्कीब तो ठीक बताई। लेकिन रस्सी कहाँ मिलेगी भाई! (सोचकर) हाँ, याद आया। वह जो रास्ते में एक घसियारा घास छीलते छीलते सोगया है, उसके पास एक रस्सी का टुकड़ा पड़ा है। उससे काम चल जायगा। मैं अभी आया।

कमाल—मगर ज़रा जल्दी आना, मैं यहाँ अकेला हू।

जमाल—अभी आया।

(जमाल का जाना)

कमाल—(आप ही आप) बेवकूफ लड़की,—

समझती है तू यह कि मैं हूँ दिलेर।
इधर भी वो इन्सानुमां दो हैं शेर॥
अभी तेरे सर में छुरी देंगे भोंक।
तेरा खून पीजाएँगे बनके जोंक॥

(जमाल का आना)

क्यों मिली रस्सी?

जमाल—मिलती क्यों नहीं—

मुकद्दर बनाता है जब सारा खेल।
तो बकरी के थन से निकलता है तेल॥

कमाल—अच्छा, तो बस लगाओ फंदा और चलता करो धन्धा ।

[कमालो जमाल हमीदा के मुँह पर कपड़ा डालकर उसे बांधते हैं वह अपनी ताक़त की वजहसे नहीं बँधती, लेकिन रस्सी जो उसकी कमर में पड़ गईहै वह नहीं निकलपाती। इसी वक्त शिकार के धोखेमे दिलेरजङ्ग बन्दूक का फैर करता है, जिससे डरकर कमाल व जमाल गिर जाते हैं और उनके हाथ से रस्सी छूट जाती है । दिलेरजङ्ग आजाता है]

दिलेरजङ्ग—हैं ! धोखा ! धोखा !! (कमालो जमाल से) तुम दोनों कौन हो ?

कमाल—हम, कमाल ।

जमाल—हम, जमाल ।

दिलेरजङ्ग—(हमीदा को इशारा करके) और यह ?

कमाल—यह अगिया वैताल, जो हमे चिपटता था । हमने इससे अपनी जान छुडाने के लिये, इसके गले में फन्दा डालाथा ।

जमाल—इसी रस्से के ज़रिये से, हम इसे अपनी तरफ खेंचकर लारहे थे, इस तरह इस भूत से अपना जान छुड़ारहेथे ।

दिलेरजङ्ग—मुझे तो अफसोस हुआ था कि मेरे निशाने से हिरन की बजाय आदमी का शिकार हुआ । लेकिन नहीं, यहाँतो यह निशाना एक आदमी की ज़िन्दगी का मददगार हुआ । बस सँभल जाओ ।

कमाल—(कांपकर) मुआफ़ करो, हमारी जान छोड़दो।

दिलेरजङ्ग—ज़ालिमो, बेरहमो, अब यह बन्दूक की गोली इस भूत से तुम्हारी जान छुड़ायगी । एक कमसिन लड़का जो सूरत में बिल्कुल भोला है, और जिस्मानियत के लिहाज़ से भी तुम दोनों से आधा है, तुम्हें भूत बनकर चिपटाथा ? हरगिज़ नहीं, ज़ुरूर इस ग़रीब को मार डालने का तुम्हारा इरादा था। इसलिये तुम अपने बुरे इरादों की सज़ा पाओगे । अभी, और इसी जगह बन्दूक का निशाना बनाये जाओगे।

(बन्दूक उठाता है)

हमीदा—रहम रहम मुआफ़ी, मुआफ़ी। बहादुर के हाथ कमज़ोर आदमियो के सर पर साया करने के वास्ते होते हैं, न कि उन पर बन्दूक चलाने के वास्ते।

दिलेरजङ्ग—हैं! तुम इनकी सिफ़ारिश करते हो ?

हमीदा—हां मैं इनकी सिफ़ारिश करता हूं। इनकी ज़िन्दगियों को आपसे भीख मांगता हूं। आपकी बन्दूक का मुँह उधरसेइधर फिरवा देना चाहता हूँ—

खुदा ने जब बाजुओं को ताक़त
　　जिगर को दम खम अता किया है।
तो उसने लुत्फ़ो करम के जज़्बे से
　　दिलका प्याला भी भरदिया है।

जहां है काँटा, वहीं है गुल भी
जहां ख़ता है, वहीं अता है।
उदू का सर काटने के बदले।
मुआफ़ करना बहुत बड़ा है।

दिलेरजङ्ग—लेकि, इन्साफ इनके खिलाफ है।

हमीदा—मगर, रहम इनके मुआफ़िक है।

दिलेरजङ्ग—यह रहम के मुस्तहक़ नहीं हैं।

हमीदा-ज़रूर हैं।

दिलेरजङ्ग—क्यों ?

हमीदा—यों कि यह बुज़दिल क़ातिल और कमज़ोर सिपाही हैं।

दिलेरजङ्ग—मैं नहीं समझता कि जो तुम्हें मार डालने लिये तुम्हारे गले में फन्दा डाल रहे थे, तुम उनकी जान क्यों बचाते हो?

हमीदा—इसलिये कि यह मेरे भाई हैं।

दिलेरजङ्ग—यह तो और भी अफसोसनाक बात सामने आई! भाई होकर ऐसी कार्रवाई! यह भाई हैं या कसाई-?

है एक भाई इधर उनके लिये जो दस्त बस्ता है।
हैं दो भाई उधर हाथों मे जिनके एक रस्सा है॥
अजब हैं इसके नज़्ज़ारे यह दुनियाँ भी तमाशा है।
कोई शैतान की सूरत कोई शक्ले फ़रिश्ता है॥

वह सूरत वह है मारे आस्तीं बस जिसको कहते हैं।
जहां वालो, इधर देखो बिरादर इसको कहते हैं॥

(कमालो जमाल से) अच्छा, जाओ। इस शरीफ़ भाई की शिफ़ारिश पर मैं तुम दोनों कमानों का जान बख्शता हूं। जाओ, चले जाओ। (कमालो जमाल के जाने के बाद हमीद से) ऐ भोले भाले लड़के, मैं तुम्हारा फ़राखदिली, आली हिम्मती और खुश अख़लाक़ी को तुम्हें दाद देता हूँ। तुम एक होनहार नौजवान हो, नेक हो, रहमदिल हो, और वाईमान हो-

वही इन्सान है इन्सान पर जो रहम खाता है।
कज़ा के हाथ से क़ातिल को अपने बख्शवाता है॥

हमीदा—नहीं,-

वही इन्सान है इन्सान के जो काम आता है।
किसी कमज़ोर को क़ातिल के फन्दे से बचाता है॥

आपने मेरी जान बचाई, मैं जिस कदर भी आपका शुक्रिया अदा करूँ, थोड़ा है।

दिलेरजङ्ग—मेरा शुक्रिया? बेकार है। हर एक का जाने बचाने वाला वह परवरदिगार है। अच्छा रुख़सत, तसलीम।

(जाना चाहता है)

हमीदा—लेकिन?

दिलेरजङ्ग—(लौटकर) हाँ ?

हमीदा—जनाव का नाम ?

दिलेरजङ्ग—मेरा नाम दिलेरजङ्ग है। (जाना चाहता है)

हमीदा—और ?

दिलेरजङ्ग—(फिर लौटकर) हाँ।

हमीदा—जनाव का दौलतखाना ?

दिलेरजङ्ग—ग़रीबखाना शादियाबाद है। मैं वहां के सुलतान ग़ज़नीखाँ का सिपहसालार हूँ। (जाता है फिर लौटता है) क्या मैं भी इस पाक हस्ती का नाम दरियाफ्त कर सकता हूँ ?

हमीदा—इस ख़ाकसार को हमीद कहते हैं।

दिलेरजङ्ग—हमीद ? खूब ! अच्छा हमीद बन्दगी।

हमीदा—मेरे ओहांमन सलाम। (दिलेरजङ्ग का जाना, हमीदा का उसके पीछे पीछे जाकर फिर लौट आना) अहा ! दिलेरजङ्ग ! सिपहसालार ! कितना अच्छा नाम है ? सिपहसालार, तुम्हारा यह प्यारा नाम, तुम्हारी ज़ुबान से निकल कर मेरे कानों में आया, कहां से ? वहां से ?—दिल के लतीफ़ हिस्सों में अठखेलियाँ करता हुआ, मेरी रूह के साथ टकराया। बेशक तुमने मेरी जान बचाई,

मुझे दूसरी बार ज़िन्दगी दिलाई, मगर साथ ही साथ, उस जान पर कब्ज़ा और उस जिन्दगी पर फ़तेह भी पाई—

खुदा जाने कि तुम भरगये आंखों के सागर मे।
नज़र आने लगे तुमही, हर एक सरवो सनोवरमें।
तसव्वुर है तुम्हारा याकि तुमहो कल्बे मुज़्तरमें।
कोई मेहमान आकर आज उतरा है मेरे घरमें।

गाना

—※—

हमीदा—
दिल को वह छीन लेगया, जाऊँ किधर को क्या करूँ ?
हूं मैं खुदा की राह पर, इसने बशर को क्या करूं ?
इसमें तो शक नहीं ज़रा, बुत है तू, कुछ खुदा नहीं,
झुकता है सर तेरी तरफ़, दिलके असर को क्या करूं ?
सब्ज़ा ओ गुल ज़मी पै हैं, शम्सो कमर फ़लक पै हैं,
मुझ को तो तुम पसन्द हो, अपनी नज़र को क्या करूं ?

(स्थान—सलामतबेग का मकान)

गाना

अल्लामा—(दाखिल होकर)—

मेराउमंग भरा जुबना, नहीं माने, दईकैसी करूं, कटत न रतियां
सौ सौ बल खाये कमर, नागिन लहराये इधर, फटत हैं छतियाँ
मिलत न सजन, तड़पत तरसत है अँखियाँ

क्या जुल्म है वर्बाद होती है यह प्यारी जिन्दगी।
रोटी पकाने ही में जाती है हमारी जिन्दगी॥
हैं ऐश के सामान सारे मर्द ही के वास्ते—
अफ़सोस चूल्हे में गई औरत की सारी जिन्दगी॥

तौबा, तौबा, इस मुई बावर्चीगारी की नौकरी से तो अब जी जलता है। दिन भर चूल्हा फूंको, हँडिया चढ़ाओ,

कबाब भूनो, अण्डे पकाओ, मछलियां तलो, शोरुवा बनाओ। अकेली जान और खुदाई भर का तूफ़ान। बावर्चीखाने से छुट्टी मिलो, तो शहर में गश्त लगाने जाओ, उजलो चिट्टी लड़कियों को बहका बहका कर लाओ, और तनख़्वाह वही साढ़े बारह रुपये महीना पाओ। बस जी, मैं तो इस नौकरी से बाज आई। उस दिन वह मुआ सिपहसालार, खुदा जाने कहां से आगया! ऐसा झटका दिया कि अब तक गर्दन टूटी हुई है! मैं भी उससे पूरा पूरा बदला लेकर रहूँगी। शादियाबाद से न निकलवादूं तो अल्लामा नाम नहीं। और तो और, इस घर का नौकर वह मुआ क़मरू भी, बात बात में मुझे चिढ़ाने लगा है। अभी तक मुझे बावर्चिन ही समझ रहा है। उसे क्या मालूम कि मैं अब मुसाहब सलामतबेग की बीबी बनने वाली हूं। आजही साफ़ साफ कहदूंगी कि-दुरंगी छोड़कर यकरंगे हो जाओ-बीबी बना कर रखना हो, तो बीबी बनाओ और जो बावर्चिन की ज़रूरत हो तो हवा खाओ।

क़मरू—(दाखिल होकर) ए लो, बावर्चिन साहबा अभी यहीं खड़ी हुई हैं! वहां चुल्हा ठंडी आहें ले रहा है।

अल्लामा—चल मुए, किसे बावर्चिन कह रहा है? मैं तो मुसाहबनहूं मुसाहबन। अब जो बावर्चिन कहा तो मुँह फूंकदूगी

.कमरु—ओ बापरे ! इससे तो मेरे मुंहको ही चूल्हा समझ लिया है अजी चपाती बेगम ! इस गुस्से से कहीं आटा गाला न हो जाय ?

अल्लामा–जा, जा, तेरे मुंह पर चावलों का धोअन डालूं जरा आईना तो उठाला । इस मुई चूल्हा फूंकनेकी नौकरी ने ते तमाम खूबसूरती को खराब कर डाला ।

.कमरु—आईना मंगाकर क्या करोगी ? मुझे ही आईना समझ लो । लो इधर देखो, और अपनी खूबसूरती का नक्शा सुनो । अहाहा ! तंदूर की तरह मुंह लाल, डबल रोटी की तरह फूले हुए गाल, आखें हैं आमकी फाँकों की मिसाल और नाक है तिकोने की तरह नमकीन माल ।

अल्लामा –चुप कङ्गाल ।

.कमरु—फिर आया बासी कढ़ी में उबाल ?

अल्लामा–देख, मेरी यह माँग कैसी लाल होरही है ?

.कमरु–हां कच्चे मुर्गी की टांग हो रहा है !

अल्लामा–तुझ पर .खुदा की मार । (मार कर) करमजले ! रिजाला !

.कमरु–(चिल्ला कर) हाय ! मार डाला, मार डाला, मारडाला

(सलामनबेग का आना)

सलामत—क्यों क्या है ? (अल्लामा को देखकर) आज तो देग चो बहुत गर्म है ?

अल्लामा-बस, रहने दो । ज़्यादा मत उफनो । एक बावर्चिन के साथ दाल भात की तरह न मिलो ।

सलामत—अजी, दाल भात मिल कर ही तो खाने में मज़ा देवे हैं । और सच पूछो तो, बावर्चिन का तो बहाना है । असल में तुम शमा हो और बन्दा पर्वाना है ।

(क़मरु का जाना)

अल्लामा—बाज आई मैं शमे पर्वाने इसकी शायरी से । मियां, मैं अब साफ़ साफ़ कहे देती हूँ कि इस घर में बावर्चिन बनकर न रहूँगी । रहूंगी, तो मुसाहबन बन कर रहूंगी, इसलिये आज ही यह क़िस्सा चुकाओ । किसी क़ाजी को बुलाकर शरह के मुताबिक निकाह पढ़वाओ ।

सलामत—अजी-मियाँ बीबी राज़ी तो क्या करेगा क़ाज़ी । निकाह पढ़वाने से क्या फ़ायदा ? इस तरह तो बीवी और बावर्चिन दोनों का मज़ा आरहा है ।

अल्लामा—नहीं, अब बावर्चिन बनकर न रहूँगी, बीवीही बनकर रहूँगी ।

सलामत - बावर्चिन तो बीवी बनकर भी रहना पड़ेगा ।

अल्लामा—यह क्यों ?

सलामत—यह यों कि हर पुराने ख्यालवाले मुसलमान के घर में, उसकी बीवी ही बावर्चिन का काम किया करती है।

अल्लामा—आग लगे इस पुराने ख़याल में। मैं तो मुसाहबन बनने के बाद, बावर्चिन का काम भूलकर भी न करूँगी।

सलामत—अच्छा मत करना, मुसाहबन बनकर ही रहना। मियां मुसाहब, तो बीवी मुसाहबन। क्यों कैसी रही!

कमरू—(दाखिल होकर खुद से) बीवी बावर्चिन, तो मियां बावर्ची! क्यों कैसी रही? (ज़ाहिर में) सरकार! सरकार!

सलामत—क्या है नाबकार?

कमरू—गाँव से कुछ आसामी मिलने आए हैं।

सलामत—(अल्लामा से) तुम जरा उधर हट जाओ।

सलामत-क्यों? जब मुसाहबन बना लिया, तो शर्म काहे की?

सलामत—अरे, तो क्या हर मुसाहब की मुसाहबन उसकी मुसाहबत के काम में भी शराकत करती है? जाओ, उधर को जाओ।

(अल्लामा का जाना और किसानों का आना)

पहला किसान—खुदा हुजूर को सुल्तान बनाए।

कमरू-(खुद से) लो! इन्होंने तो आते ही सुल्तान को मारा

दूसरा किसान—हुज़ूर हमेशा बेग़म रहें।

कमरू—बेग़म तो तब रहें, जब बेगम हो। यहाँ तो बेफ़िक्र चिन है।

सलामत-(किसानों से) तुम लोग किसलिए आये हो ?

पहला किसान—हुजूर, इस साल गांव में पैदावारी बिल्कुल नहीं हुई।

सलामत—तो हम क्या करें ?

क़मरू-(किसानों से) बेवकूफ़ो, क्या हुजूर से पैदावारी कराने आए हो ? हुजूर ने कभी नाज थोड़े ही पैदा किया है। हुजूर तो दौलत पैदा किया करते हैं।

दूसरा किसान—हुजूर, हमारी इस साल की मालगुज़ारी मुआफ़ हो जाय।

सलामत—मालगुज़ारी मुआफ़ ? हरगिज नहीं हो सकता। कौड़ी कौड़ी लीजायगी।

कमरू—(पहले किसान से) इधर आओ, इधर आओ। कुछ नज़र भट भी लाए हो ?

पहला किसान-हुजूर, हम बहुत ग़रीब आदमी हैं।

दूसरा किसान-हमारे, बालबच्चे भूखे मर रहे हैं।

सलामत-निकाल दो, कमरू, इन उल्लू के पट्ठो को यहां से निकाल दो।

पहला किसान—हुजूर हमारे माई-बाप हैं।

.कमरू—क्या कहा ? माई भी और बाप भी ? दोनों एक साथ नहीं हो सकते। अरे कुछ दो दिलाओगे, तो यहां से भी कुछ लेकर जाओगे। ख़ाली माई-बाप कहने से कुछ नहीं पाओगे।

दूसरा किसान—अच्छा दूसरी फ़सल में हम हल पीछे हुजूर को घड़ी भर नाज देंगे।

.कमरू—बस. घड़ी भर ? नहीं हो सकती, मालगुजारी मुआफ़ नहीं हो सकती।

पहला किसान—अच्छा, हल पीछे दो घड़ा सही।

.कमरू—यह तुमने .कायदे की बात कही (सलामतबेग से) हुजूर, सचमुच यह बहुत ग़रीब आदमी हैं। इनकी मालगुजारी मुआफ़ फ़रमाई जावे। (आहिस्ता से) आइन्दा फ़सल पर हल पीछे पौने दो घड़ी नाज देने को कहते हैं।

सलामत—(किसानों से) अच्छा जाओ, कल सुबह एक अर्ज़ी लिखकर हमारी अदालत में पेश करो।

पहला किसान—हुजूर की बड़ी परवरिश हुई। (जाना)

दूसरा किसान—हुजूर बड़े ग़रीबनिवाज़ हैं। (जाना)

सलामत-चलो साल भरके खाने से तो छुट्टी मिली। क़मरू, तूने ठीक दाँव पर कौड़ी फेंकी, शाबाश। अब अल्लामा को बुला ले।

क़मरू-(पुकार कर) अजी ओ बावर्चिन साहिबा।

अल्लामा--(दाखिल होकर) चल मुए सौदाई, फिर तूने बावर्चिन-बावर्चिन की बाँग लगाई ?

सलामत--नाराज़ न हो दिलाराम। यह तो इसने साल भर के खाने का अभी किया था इन्तिज़ाम. इसीलिये ले दिया बावर्चिन का नाम ।

(क़मरू का जाना)

अल्लामा--उन आसामियों से कितना नाज पक्का हुआ ?

सलामत--हल पीछे पौने दो वड़ी।

अल्लामा -देखा, मुझे मुसाहबन बनते ही तक़दीरजागपड़ी।

सलामत--योंही सही, योंही सही, हम तो इसके पहले भी तुम्हारी ही तकदीर का खाते थे। तुम्हारे ही हाथ का खातेथे।

अल्लामा--खुदा न करे कि मेरे हाथ का तुम खाओ।

सलामत-हाथ का तो खाता ही रहा हूं, अब यह खौफ़ है कि कहीं पैर का न खाना पड़े। क़सम है ईमान की, मैं सच कहता हूँ कि दो ही ने मेरी परवरिश की है। या तो मांने दूध पिला पिला कर, या तुमने रोटियाँ खिला खिला कर।

(क़मरू का आना)

कमरू—हुजूर, हुजूर, इस मर्तबा जुलाहे आये हैं।

सलामत—जुलाहे आये हैं ? आने दे। (कमरू जाता है सलामत अल्लामा से कहता है) लो! तुम्हारे चोला-डुपट्टे का भी इन्तजाम होता है। फिर ज़रा उधर को हो जाओ।

अल्लामा—यह उधर का होजाना, तो क़यामत है।

सलामत—अजी इस क़यामत के अन्दर ही तो खुदा की बरकत है (अल्लामा जाती है, दो जुलाहे कमरू के साथ आते हैं)

पहला जुलाहा—सरकार, हमारी तिजारत पट्ट होगई।

दूसरा जुलाहा—हमारी सनअतो हिर्फ़तपर पानी फिरगया।

क़मरू—अबे पानी फिर गया तब तो सनअतो हिर्फ़त और भी उजली होगई होगी।

पहला जुलाहा—या तो हमको यह पेशा छोड़ना पड़ेगा—

दूसरा जुलाहा—या और किसी जगह जाकर यह धंधा करना पड़ेगा।

सलामत—ऐसी क्या मुसीबत है ? मुफ़स्सिल हाल सुनाओ।

पहला जुलाहा—हुजूर दरख्वास्त यह है कि महकमे राह-दारी ने हमारे थानों पर इस क़दर महसूल बढ़ा दिया है कि अब पर्ता नहीं पड़ता है।

दूसरा जुलाहा—पेट नहीं भरता है।

क़मरू—अबे पेट का ज्यादा न भरना ही अच्छा है। ज्यादा पेट भर जाने से तो कब्ज़ होजाता है।

सलामत—तो फिर हमारे पास इसका क्या इलाज है ? अगर महसूल माफ़ कर दिया जायगा, तो शाही ख़र्च किस तरह चलाया जायगा ?

पहला जुलाहा—हुजूर, हम महसूल माफ़ नहीं कराना चाहते, कम कराना चाहते हैं। अगर वह कम नहीं होगा तो धोती के जोड़े और जूतो के जोड़े दोनों एकही भाव पड़ेंगे।

क़मरू—अबे, वह एक ही भाव तुम्हें पड़ेंगे, या हुजूर को पड़ेंगे ? अच्छा इधर आओ, हुजूर के लिये कुछ सोचा है ?

पहला जुलाहा—हुजूर तो जान माल के मालिक हैं।

क़मरू—अबे जान माल को मिज़कयत का क्या अचार डाला जायगा ? कुछ ज़ाब्ते की कार्रवाई होनी चाहिये।

दूसरा जुलाहा—फ़ी सदी पाँच थान हम हुजूरको ख़िदमत में भिजवा दिया करेंगे।

क़मरू—पांच ? तुम्हारा सत्यानाश। जाओ महसूल वहसूल कुछ कम न होगा।

दूसरा जुलाहा—अच्छा, तो फ़ी सदी दस थान हुजूर को नज़र देते रहेंगे।

क़मरू–अब आए ज़रा रास्ते पर। (सलामत बेग से) हुज़ूर, यह बहुत तकलीफ़ में है। ज़रूर महसूल कम करा दे (चुपके से) फ़ीसदी आठ थान देने को कहते हैं।

सलामत–अच्छा, जाओ। कल सुबह हमारी अदालत में दरख्वास्त लेकर आओ।

दोनो जुलाहे–हुज़ूर की सलामती रहे। (जाना)

सलामत–(क़मरू से) लो अब अल्लामा को बुलाओ, और उनसे कहो कि चोली दुपट्टे ही नहीं जोड़ेपर जोड़े सिलवाओ।

क़मरू–(सामने देखकर) लीजिए, वह तो खुद ही आगई।

(जाना)

अल्लामा–(आकर) क्यों ? फिर चिड़िया फँसी ?

सलामत–अजी अब के तो थान पर थान हाथ आये।

क़मरू–(दौड़कर) सरकार, एक सौदागर आया है।

सलामत–बुला, बुला, आज बड़ा मुबारिक दिन है।

(क़मरू सौदागर को बुलाने जाता है)

अल्लामा–हाँ, मेरी शादी का दिन है।

सलामत–(अल्लामा से) अच्छा फिर ज़रा–

अल्लामा–इस ज़रा ने तो मेरा दम निकाला।

सलामत–अजी, इसी तरह तुम्हारा बार बार दम निकालने में मेरा फ़ायदा होता रहे, तो मैं एक एक दिन में सौ सौ मरतबा तुम्हारा दम निकालूं ।

(अल्लामा का जाना और सौदागर का आना)

सौदागर–हुजूर सलाम ।

सलामत–आओ खान । कहो अबकी कैसे जवाहरात लायेहो।

सौदागर-एक से एक बेशक़ीमत । एक से एक जौहर वाले ।

सलामत–लेकिन सुल्तान इस साल जवाहरात नहीं खरीदेंगे । पिछले साल काफ़ी खरीदे जा चुके हैं ।

सौदागर–क्यों नहीं खरीदेंगे ? वह थोड़े ही खरीदेंगे, हुजूर ख़रीदवायगे तो खरीदेंगे । पिछले साल मैंने हुजूर को एक लाजवाब कण्ठा नज़र किया था, इस साल यह बेमिसल हार लाया हूँ । (हार देता है)

क़मरू–(खुद से) हार दे दिया, अब जीत होजायगी ?

सलामत–(हार लेकर) अच्छा, शाम को क़सरेशाही में आना ।

सौदागर–मेहर्बानी । बन्दगी ।

सलामत–तसलीम । (सौदागर और क़मरू के जाने के बाद, अल्लामा को पुकारकर) ऐ मेरी मुसाहबन, यहां आओ यहां ।

अल्लामा-(दाखिल होकर) हाज़िर हुई मेरे होनहार मियां

सलामत-लो शादी के पहले का यह दस्तूर ।

(हार गले मे डालदेता है)

अल्लामा-मै वारी मेरे अच्छे हुजूर ।

गाना ।

—❀❀—

अल्लामा-तो पै वारी रङ्गीले सजीले मेहर्बान ।
सलामत-प्यारी मैं हूँ कुर्बान ॥
अल्लामा--वाह रे मेरे पके पान ।
सलामत--वाह री मेरी जाफ़रान ॥
नहीं है सुर्मा यह बारूद है दुनाली में
फ़लीता खूब ही रौशन हैसुर्ख जालीमें॥
निगाहे फैर है आशिक़ का दिल निशानाहै।
भरी है गोलियां पुतली का वस बहानाहै॥
अल्लामा-जान डाल दो अब जान
सलामत-यह लो मेरी दिलजान ॥
अल्लामा-उजले चिट्टे जवान ।
बांके तिरछे पठान ।
गोरे ग़बरू पहलवान ॥

—०—

सातवां सीन

मुक़ाम— -सुलतान ग़ज़नीखां का दर्बार

❋ गाना ❋

—❋❋❋—

रामिशगरान-

ईं रक़से महे ख़ूबां, ईं शीशओ पैमाना ।
ईं अशरते बे पायां, ईं रौनक़े मयख़ाना ।।
क़ुर्बाने निगाहत रा, ऐ रहज़ने अक़्लो दीं ।
दिल बुर्द बयक अफ़ूवं, ऐ नर्गिसे मस्ताना ।।
सर मस्तमो मदहोशम्, गुमकर्दए मंज़िलअम् ।
दिलरफ्ते ब दिलदारम्, जां रफ्ते ब जानाना ।।

—❋—

सुलतान-बुलाओ, उस पाजी फ़ैदो को अपनी क़िस्मत नविश्ता सुनने के लिये हमारे सामने बुलाओ ।

(अफ़्रसियाबो का आना)

सङ्ग दिल पानी हुआ करते हैं जिसके सामने ।
शेर दिल बकरी बना करते हैं जिसके सामने ॥
सरकशों के सर झुका करते हैं जिसके सामने ।
पर परन्दो के जला करते हैं जिसके सामने ॥
उसके महलो मे घुसे ? यह हौसला बदकार का ।
तोड़ दूगा ठोकरों से सर मैं नाहञ्जार का ॥

(गिरफ्तार जलाल आताहै)

बोल-बोल ! ओ लुक़मये अजल, तू शाही खज़ाने में चोरी करने क्यों आया ?

जलाल— शाही ख़जाने मे चोरी करने क्यो आया ? यों कि शाही खजाना आजकल रिआया की शिकम परवरी नहीं कर रहा है। वह वो इन दिनो एक शराबख्वार और जिनाकार सुलतान की ख्वाहिशे नफसानी को पूरा करने का जरिया बना हुआ है—

खजाना जिसका कहते हो गरीबो की कमाई है।
हिफाजत को जहां सुलतान ने कुर्सी बिछाई है॥
मुहाफ़िज़ हो के लेकिन लूट वह तुमने मचाई है ।
रिआया की अमानत ऐशो इशरत मे लुटाई है ॥
न अब बोतल वहाँ पर आँशार का रहने पायगी ।
वह दौलत क़ौम की है, क़ौम के हाथो मे जाएगी ॥

सुलतान—वाह वे क़ोम के हमदर्द ! वह दिन भूल गया, जब इसी दरबार मे तुझे ज़लील करके हमने जिलावतन किया था ?

जलाल—हाँ मैं वह दिन भूल गया। लेकिन कौम वह दिन नहीं भूली। उसने इन्तज़ार किया कि तेरा रवैया बदल जाय। तू गुनहगार शैतान की बजाय, एक नेक रिआया-परवर और पाक तीनत बादशाह बन जाय। लेकिन तू नहीं बना, नहीं बना आख़िर क़ौम फिर चीख उठी, जिसकी वजह से एक अमन पसन्द और सुलहकुल हस्ती को, शाकू बन जाना पड़ा और शाही खज़ाने तक आना पड़ा।

हमेशा कौल यह रहता है हक़ पसन्दों का।
कि बन्द तोड़ दें मक्रो दग़ा के फन्दों का॥
रुला रहा है मुझे दर्द, दर्दमन्दों का।
सवाल है मेरे आगे खुदा के बन्दों का॥
मैं अपनी क़ौम पै खुद को शहीद कर दूगा।
शबे अलम की जगह रोज़े ईद कर दूगा॥

सुलतान—इतना जोम? किस पर?

जलाल—अपने फ़र्ज़ पर।

सुलतान—यह जुरअत?

जलाल—अपने ज़मीर पर।

सुलतान—ऐसा घमंड?

जलाल—अपने ईमान पर।

सुलतान—इस क़दर भरोसा?

जलाल—अपने ख़ुदा पर।

सुलतान—ख़ुदा! ख़ुदा! ख़ुदा पर यक़ीन करनेवाले इन्सान अँधेरी रात मे मुँह छिपाकर, कभी किसी के मकान में नक़ब लगाने नहीं जाते। पराये माल पर हाथ डालना तो दूर-किनार, निगाह भी नहीं उठाते।

जलाल—पराये माल पर? हर्गिज़ नहीं। मैं शुरू ही में इस सवाल का जवाब दे चुका हूँ। न सुना हो तो फिर सुनले, तू जिसे अपनी दौलत कह रहा है, वह तेरी नहीं है, तमाम क़ौम की है। बता, बता तेरे पास वह कहाँ से आई है? किसने पैदा की है? किसकी क़ुव्वते बाज़ू की कमाई है? कुछ जवाब नहीं मुझसे पूछ। वह दौलत ग़रीब काश्तकारों, भोले भाले ताजरों और सुबह से शाम तक काम करनेवाले मज़दूरों की तन तोड़ मेहनत का नतीजा है। जिसे तूने अपने ऐश की चीज़ समझ रक्खा है:—

ग़लत है तू जो कहता है कि यह मेरे दफ़ीने हैं।
यह मज़दूरों के आँसू हैं किसानों के पसीने हैं॥
जो है हक़दार बेचारे वह लुक़्मे तक को तकते हैं।
यहाँ हैं नाच मुजरे, रात दिन साग़र छलकते हैं॥

सलामत—अबे नाच मुजरों और साग़रों को क्यों कोसता है? यह अतिया तो दुनियाँ में दौलतमन्दों का एक पाक हिस्सा है।

कभी कोई दौलतमन्द भी तेरी सूखी रोटियों पर नजर डालने गया है ? फिर तू क्यों दौलतमन्दों के दस्तरख़्वानों की तरफ़ बुरी तरह घूर रहा है:—

यह रईसों की रियासत जो बिगड़ जाती हैं।
तुम ही कम्बख़्तों की नज़रें वहाँ पड़ जाती हैं॥

जलाल—ख़ामोश, चापलूस, चटोरे, ग़रीबों की नज़रें रईसों को नहीं खातीं ? बल्कि उन बड़ी बड़ी इमारतों को तो तुम जैसे ख़ुदग़रज़ और ईमानफ़रोशों की निगाहें दीमक की तरह चाट जाती हैं:—

यह रईसों की रियासतें जो बिगड़ जाती हैं।
सोहबतें तुमसे कमीनों की उन्हें खाती हैं॥

सलामत—तू झूठ बोलता है।

जलाल—चुप, चुप, रईसों के दस्तरख़्वानों के झूठे टुकड़े खाने वाले कुत्ते, चुप।

सलामत—कुत्ते ? अबे कुत्ते किसे कह रहा है ?

जलाल—तुझे, तुझे। लालच और ख़ुशामद के पुतले, तुझे। जो अपनी गली में भी, अपने किसी भाई को आता हुआ देख कर भौंकता है। जो एक सूखी हुई हड्डी के टुकड़े के वास्ते भी अपने भाइयों से लड़ पड़ता है।
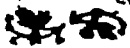
सलामत—अबे कुत्ते होकर भी हम वह कुत्ते हैं जो अपने मालिक की जानो माल की हिफाज़त में अपनी जान लड़ाते हैं।

जलाल—हाँ कुत्ते होकर भी तुम वह कुत्ते हो, जो खाते हैं और गुर्राते हैं। बोल, बोल, उस रोज़ ख़ज़ाने में चोरी करने पहले मैं घुसा था, या तू?

सलामत-(अपने आप) कम्बख़्त, यह क्या कह रहा है?

जलाल—हीरों के सन्दूक को मैंने खोला था, या तूने?

सलामत—(आपही आप) इसकी ज़बान भी तो नहीं गल जाती।

जलाल—उस बेशक़ीमत हार पर पहले मेरा हाथ पड़ा था, या तेरा? अपनी छाती पर हाथ रख कर देख। अपने दिल से पूछ। वह जवाब देगा कि तू पहला चोर है या मैं? मैं तो चोर बनकर चोरी करता हूँ, मगर तू मुसाहब बनकर हाथ मारता है।

सलामत-अबे यह क्या बकता है? क़सम है सुलतान के मुकद्दस क़दमों की, मैंने तो ख़ज़ाने के चोर दर्वाज़े तक को नहीं छुआ है।

जलाल—सुलतान के मुक़द्दस क़दमों की झूठी क़सम खाने वाले, तेरी चालाकियां सुलतान की आंखों पर पर्दा डाल सकती हैं, लेकिन उसकी नज़रों पर पर्दा नहीं डाल सकतीं, जो अपनी बेशुमार आंखों से, हर शख़्स की नेकी और बदी को देख रहा है।

हर एक के दिल में बैठकर, उसके आमालों को खामोशी के साथ लिख रहा है—

यह मत समझ कि कोई मुझे देखता नहीं।
अल्लाह देखता है हर एक नेको बद के फ़ेल॥
माले हराम घर का असासा भी खायगा।
पी लेंगे खून तेरा ही बदकार तेरे फ़ेल॥

सलामत—(सुलतान से) देखिये खुदावन्देनेमत, चूँकि नमकख्वार ने इसको चोरी करते वक्त गिरफ़्तार किया है, इसलिये यह नमकख्वार की जात पर भी चोरी का इल्ज़ाम रखता है। उल्टा चोर कोतवाल को डाटता है।

सुलतान—मैं सब समझ रहा हूँ, सलामत। यह सिर्फ़ चोर ही नहीं सीनाज़ोर भी है।

जलाल—क्या खाक समझ रहे हो, सुलतान—

खुशामद ने समझ की कोठरी पर कुफ़्ल डाले हैं।
न आँखें ही हैं धुँधली दिल के पर्दे तक पै जाले हैं॥

सुलतान—(सलामत से) एक नहीं, दो दो जुर्मों का अब यह मुजरिम है। चोरी और तुमसे ईमानदार मुसाहब की जात पर झूठा इल्ज़ाम—

अब यह भी हक़ नहीं जो कहे यह पनाह दो।
अब तक गुनाह एक था, अब हैं गुनाह दो॥

जलाल—तो सज़ाएँ भी दो ही तजवीज करदीजिये। पहली मे मौत, और दूसरी मे जहन्नुम भेज दीजिये। अरे अन्धे मुंसिफ़! मुझे अब सिर्फ़ यही कहना है कि खुदा तुझे अक्ल दे। खुदा की पाक रोशनी तुझे रास्ता दिखाये।

बरोज़े महशर तेरी जुबां ही कहेगी किसका बयां है सच्चा।
यहां तो सच्चा बयां है झूठा, यहां तो झूठा बयां है सच्चा॥

सुलतान—ख़ैर, गुस्ताख लुटेरे, मैं इतने पर भी अपनी रहमदिली को काम में ला सकता हूँ। अगर तू इन क़दमों पर अपना सर झुका कर गिड़गिड़ाए, तो तेरे जुर्मों को मुआफ़ करके, तुझे इस दरबार का दूसरा मुसाहब बना सकता हूं।

जलाल—लानत है, इस मुसाहबत पर। यह सर और उन नापाक क़दमों पर गिड़ गिड़ा कर मुआफ़ी माँगे? हरगिज़ नहीं—
हमेशा सर यह उठा रहा है, हमेशा सर यह उठा रहेगा।
झुका है तो बस खुदा के आगे, खुदा के आगे झुका रहेगा॥

सलामत—अबे झुक भी जा। हम भी तो इन क़दमों पर अपना सर झुकाया करते हैं।

जलाल—चुप, तू फिर बोला?—

यह दिल गुनाहों से तेरी तरह सियाह नहीं।
खुशामदी नहीं, शैदाए इज़्ज़ोजाह नहीं॥

नज़र में दीन है, दौलत पै है निगाह नहीं।
ज़ुबाँ पै कलमये हक़ है जहाँपनाह नहीं॥
हिलेंगे लब तो पुकारेंगे अपने दावर को।
गरीब क़ौम को खातिर गरीबपरवर को॥

सुलतान—तो तुझे अपनी जान बचाने के लिये, मुआफी माँगना मंजूर नहीं ?

जलाल—नहीं।

सुलतान—नहीं ?

जलाल—हज़ार बार नहीं, लाख बार नहीं—

सर न खम होगा कभी तेरे जफ़ा के सामने।
खोलकर सीना बढ़ूंगा, मैं बला के सामने॥
मर मिटेंगे आज दोनों अपनी अपनी राह में।
तू खुदी के सामने और मैं खुदा के सामने॥

सुलतान—बदमाश, लुटेरे, आखिर मेरे ज़ुल्म की भी एक इन्तहा है।

जलाल—शरीफ़ डाकू आखिर मेरे सब्र की भी एक हद है।

सलामत—हैं! शरीफ़ डाकू ? सुलतान को भी शरीफ़ डाकू कह डाला ?

जलाल—हाँ, अब तक शरीफ़ डाकू कहा था, अब ज़लील डाकू कहने को तैयार हूं। बताओ, बताओ, गरीब किसानों

की फसल न पैदा होने पर जो जबर्दस्ती लगान लिया जाता है, क्या यह उनकी कमाई पर डाका नहीं डाला जाता ? दिन भर की मेहनत के बाद चन्द पैसों ही को जो अपनी बड़ी कमाई समझते हैं, उन मजदूरों को जबर्दस्ती जो बेगार में पकड़ २ कर बुलाया जाता है, क्या यह उन पर डाका नहीं डाला जाता ? रिश्वतखोर हुक्काम जब दौरे पर जाते हैं, तो दूकानदारों और साहूकारों से जबर्दस्ती रसद और रिहायश का इन्तिजाम कराया जाता है, यहां तक कि अपने घोड़ों के लिये बेचारे घसियारों की तमाम दिन की मशक्कत से जमा किए हुये हरी हरी घास के गट्ठों को जबर्दस्ती उनके सर पर से उतरवा लिया जाता है, क्या यह उन पर डाका नहीं डाला जाता ? मै कहता हूँ, तमाम रैयत कहती है, शाही महल की एक एक ईंट इसकी शहादत देती है—गरीब और भोली भाली दोशीजा लड़कियों को उनकी अस्मत बरबाद करने के लिए चालाक औरतों के जरिये से, जो ज़बर्दस्ती सुलतानी हरमसरा मे बुलवाया जाता है, क्या यह उन पर डाका नहीं डाला जाता ?

यही इन्साफ है शहजोर कमजोरो को खाते हैं।
हमीं पर डाल कर डाका, हमें डाकू बताते हैं॥
गुनहगारो,सुनो,एक दिन कज़ा का सामना होगा।
गुनह होंगे तुम्हारे और खुदा का सामना होगा॥

सुलतान—देख, मेरे गुस्से को बहुत ज्यादा न भड़का ?

जलाल–भड़काऊँगा, ताकि वह तुझी को जलाकर ख़ाक सियाह करदे ।

सुलतान–मैं कहता हूं कि मेरी सुलतानी ताक़त से न टकरा ।

जलाल–और मैं भी कहता हूं कि ख़ुदा के क़हरो ग़ज़ब से ख़ौफ़ खा ।

सुलतान—तू बरबाद होजायगा ।

जलाल—उस वक़्त जब मेरा खुदा मुझ से फिर जायगा:–

हरगिज़ न पड़ सकेगा, मुझ पर बला का साया ।
जब तक है दिल में नेकी, सर पर खुदा का साया ॥

सुलतान—मैं मजबूर होगया । मौत तेरे सर पर मँडला रही है । (एक सिपाही से) जाओ अभी जल्लाद को बुलाओ इसी जगह इसी वक़् इन आँखों के सामने ही, इस गुस्ताख़ का सर काट कर गुस्ताख़ी का मज़ा चखाओ ।

(सिपाही का जाना)

जलाल—कहाँ है ? ख़ुदावन्द करीम, तू कहाँ है ? या तो इन बदी के बन्दों को नेकी के सांचे में ढाल, या यह नापाक दुनियां ही बदल डाल, जिसमें बेईमान ईमानदारों का खून बहा रहे हैं, गुनहगार बेगुनाहों को खा रहे हैं:—

जो ज़ुल्म होवे हैं इस ज़मीं पर,
नहीं वह देखे सुने कहीं पर ।
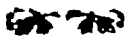
सितम के बादल हैं हर मकां पर,
अलम की बारिश है हर मकां पर ॥
दिखा वह रहमत का शान आला,
के हो हकीकत का बोल बाला।
खुदाया बन्दो को अपने खातिर,
उतर के आजा तू इस ज़मीं पर ॥

(जल्लाद का आना)

सुलतान—क्यों अभी तक वह ही अकड़ है ? वहही ज़िद है?
जलाल—हां, वही अकड़ है। वही ज़िद है।
सुलतान—
कज़ा के मुँह में भी यह, आबो ताव बाकी है?
है वक्ते शाम तपे आफ्ताब बाकी है?
जलाल—
कज़ा के मुँह में भी हाँ आबो ताब बाकी है।
रहेगी धूप, अगर आफ्ताब बाकी है ॥
सुलतान—तो बस, आखरी फैसला यह है कि इसका सर अभी काट दो और इसके जिस्म के टुकड़े २ करके चील और कौआ के आगे खाने के लिए डाल दो।

(जल्लाद खाँडा उठाता है)

जलाल—

ऐ खुदावन्दे ज़माँ, मालिके, हरकोनों मकां ।
तेरे बन्दो के लिए, करता हूँ जाँ को .कुर्बां ॥
खाक होता है इस उम्मीद पै दाना यह यहाँ ।
मेरे मर मिटने से सर सब्ज़ हो यह किश्ते जहां ॥
गो तनेज़ार में बाक़ी न मेरा जान रहे ।
शान क़ायम रहे, ईमान रहे, आन रहे ॥

(जल्लाद जलाल के सर पर खाँडा उठाता है । उसीवक्त, हमीदा का तीर उसके खाँड़े पर आके लगता है और खांडा गिरता है । हमीदा मरदाने लिबास में दाखिल होती है)

हमीदा—अल्लाहो अकबर ! (दूसरा तीर चढ़ाती है)

ख्वाब पूरा हो गया, अब उसकी यह ताबीर है ।
अद्ल का वह तीर था और यह अजल का तीर है ॥

(दूसरा तीर मार कर जल्लाद को मार डालती है)

सुलतान—(अपनी जगह से उठकर) हैं ! यह कौन ? दूसरा डाकू ?

हमीदा—नहीं, जागता जादू । ताक़त का पुतला, ज़ालिम और मज़लूम के बीच में एक इन्साफ़ का देवता ।—

.ज़ुल्म और सितम होते हैं जब खल्के खुदा पर ।
शमशीरें खिचा करती हैं जब दस्ते दुआ पर ॥
हिल जाता है पाया भी तभी अर्शे बरीं का ।
रहर आता है यूं क़ादिरे अफ़लाको ज़मा का ॥

जलाल—(हमीदा को देखकर अपनी जन्जीरें तोड़ देता है) अल्लाहो अकबर।

सुलतान—पकड़ो, पकड़ो।

जलाल–(जल्लादका खाँडा उठाकर, दरबारियोंकी तरफ बढ़ता हुआ) बस, ठहरो पाजियो, ठहरो।

(लड़ता है, सलामतबेग पीछे से वार करता है। जिसकी वजह से जलाल की पीठ पर जख्म लगता है)

उफ़! पीछे से वार किया! बड़ा गहरा जख्म लगा! (सम्भल कर) कुछ पर्वा नहीं, शेर ज़ख्मी होकर और भी खौफ़नाक हो जाता है।

हमीदा—शेर के पहले, शेर का बच्चा इन सबको अदमाबाद पहुँचाता है।

(कितने ही दर्बारियों को मार डालना)

सुलतान–(खुद तलवार निकालकर हमीदाकी तरफ झपटता हुआ) नाबकार।

हमीदा—बस ख़बरदार। तू ने अगर तलवार निकाली तो तू भी उस जल्लाद की तरह होगा मौत का शिकार। सरदार चलो।

(हमीदा और जलाल जाने को तैयार होते हैं, महल के ऊपरकी खिड़की खोलकर सुल्तान की बेटी रौशनआरा, हमीदा को–जो इसवक्त हमीद के लिबास में है–मुहब्बत की नज़र से देखती है)

ड्रापसीन

—❀❀—

पहला सीन

मुकाम—सुलतान का पाईं बाग।

—❀❀❀❀—

गाना

—❀—

सहेलियां—(रौशन आरा से)

ऐ प्यारी, क्यों ग़मगीन हो, दिल पर क्यों ग़म छाया है
यह चांद सा मुखड़ा क्यों शर्माया है ?
यह फूल सा चेहरा क्यों कुम्हलाया है ?
ऐ है जी बोलती भी नहीं, मुंह खोलती भी नहीं।
क्या हुआ, बतलाओ तो सही, कह दो न,
किससे आंख लड़ी, किस पर दिल आया है ?

रौशनआरा—

इस सर में कौन जाने क्या क्या भरा हुआ है।
मैं खुद नहीं समझती, मुझको यह क्या हुआ है।
हैरत यह है कि वह भी मुझ से छुपा हुआ है।
जो आंख में बसा है दिल में रमा हुआ है॥

सहेलियाँ—

उसका नाम तो बताओ, वह है कौन यह फ़र्माओ।
इस जोवन के गुल्शन का माली किसे बनाया है।
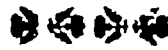
रौशनआरा—आह! कितना खूबसूरत था?

पहली सहेली—कौन, वह गुलाव का फूल? जिसे अभी अभी इन प्यारे प्यारे हाथों ने तोड़ा था? प्यारी, वह गुलाव का फूल, इन गालो से ज़्यादा खूब सूरत नहीं था—

साया पड़ा था उस पै रुख लाजवाव का।
था रङ्ग दिलफरेब इसी से गुलाव का॥

रौशनआरा—नहीं, मैं उस गुलाव के फूल का ज़िक्र नहीं कर रही हूं।

दूसरी सहेली—तो क्या उस नरगिस से आँख लड़ गई है ? वह भी इन आंखों से आंखें नहीं मिला सकती है—

वह देख ले तुम्हारी, गर एक बार आँखें।
शर्मा के उन पै करदे, सदके हज़ार आंखें॥

रौशनआरा—गुलाब भी नहीं, नरगिस भी नहीं। इस दिल को तो किसी और ही का ख़याल है।

तीसरी सहेली—तो किसका ? सुम्बुल का ?

सुम्बुल भा बल-बल जाता है, इन लम्बे-लम्बे बालों पर।
इन कालों पर घुँघरालों पर, ख़म वालों पर, मतवालों पर॥

रौशनआरा—नहीं वह भी नहीं, उसकी भी इस दिल में चाह नहीं है।

चौथी सहेली—फिर तो सर्व ही बाक़ी रहता है। पर वह तो दूर ही से इस क़द को देखकर झेंपता है—

तुम सूरत में भी यकता हो, सीरत में भी लासानी हो।
हर गुलपर राज तुम्हारा है,तुम इस गुलशनकी रानी हो॥

रौशनआरा—तुम्हारी आंखों ने, इन्हीं फूलों की बहार देखी है। कुदरत के गुलज़ार में खिले हुए, उस नये बूटे की तरफ़ निगाह नहीं पड़ी है।

पहली सहेली—वह कौन ? ज़रा नाम तो बतादो।

दूसरी सहेली—तुम्हें हमारी क़सम—

तीसरी सहेली--इस जोवन के सदके -

चौथी सहेली—हमें भी वह फूल दिखादो।

रौशनआरा--अच्छा, सुनो वह-(शर्मा जाना)

पहली सहेली--हैं! शर्मा क्यों गई ?

दूसरी सहेली—वाह जी इश्क के एक ही वार में तुम तो जलेख़ा होगई-

सुनते थे लैलीओ मजनूं का फ़साना अब तक।
तुम भी इस फ़िक्रमें हो यह नहीं जाना अबतक॥

तीसरी सहेली—अच्छा, अब अपने महबूब का नाम बता डालो।

चौथी सहेली-हाँ कह दो ना! कौनहै यह दिल चुरानेवाला?

रौशनआरा-वही! उस रोज़ दर्बार मे आने वाला। जल्लाद के खांडे पर अपना तीर चलाने वाला।

एक नहीं, दो दो तीरों से दो दो जगह शिकार किया।
एकसे वह जल्लाद गिरा, और एकका मुझपर वारकिया॥

पहली सहेली—जल्लाद पर तो कमान के तीर का वार किया, तुम पर किस तीरका वार किया ?

रौशनआरा-आँख के तीर का! आह-

एक मारके में बादए गुलगूँ पिये हुए।
दो मस्त लड़ने आए थे खंजर लिए हुए॥

दूसरी सहेली—पर प्यारी, किसे दिल दिया ? वह तो सल्तनत का दुश्मन है।

रौशनआरा—(सीने पर हाथ रखकर) लेकिन इस सल्तनत का बादशाह है।

चौथी सहेली—प्यारी, एक रहज़न को जो तुमने अपने खानए दिल में बिठाया, यह बहुत बुरा किया।

रौशनआरा—

हो गया वह ही मुकद्दर में जो था लिक्खा हुआ।
जो किया, अच्छा किया, जो कुछ हुआ, अच्छा हुआ॥

❋ गाना ❋

—❀❀—

रौशनआरा—

ज़ब्त कहता है धुआं तक न जिगर से निकले।
आग कहता है भड़ककर इसी घर से निकले॥
आंख में बस गई उस शोख़ की प्यारी सूरत।
एक आंसू भी न अब दीदए तर से निकले।
दिल में घर कर लिया है, रहते हो बाहर बाहर।
हम कहां ढूंढते हैं आप किधर से निकले।
यह ही तो लुत्फ़ है आराम यही 'राधेश्याम'।
पास सन्दल रहे और दर्द न सर से निकले॥

(सबका जाना)
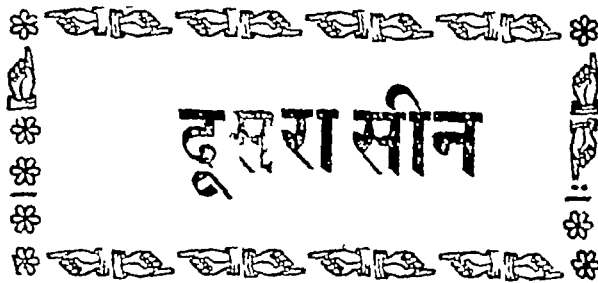
दूसरा सीन

(स्थान—ग़ार)

—❀❀—

(जलाल बीमार पड़ा है । हमीदा उसके ज़ख्मों पर पट्टी बांध रही है । अकमलशाह एक पत्थर की चट्टान पर दवा बना रहे हैं । कमाल जलाल का पंखा कर रहा है और जलाल तलवे सहला रहा है)

—❀—

जलाल—(हमीदा से) बस बेटी रहने दे। मरहम पट्टियोंसे अब कुछ न होगा। मालूम होता है कि ज़िन्दगी का जहाज़, मौत के बन्दरगाह में लगर डालने वाला है। (अकमलशाह से) शाह साहब, आप भी अब दवा का ख़याल छोड़ दीजिये। दवा का नहीं, अब दुआ का वक़्त है। (कुछ देर के बाद) मैं भी तैयार हूँ। बचपन के खेल, जवानी के जोश, खूब देख लिए। अब सिर्फ, सिर्फ-कुछ नहीं, । (ग़श आजाता है)

हमीदा—अब्बा ! अब्बा !!

जलाल—कौन ? हमादा ! तू मेरे पास बैठी हुई है ? अच्छा, [illegible]) इधर आओ, तुम दोनों भी इधर आके बै

मो। (कमालो जमाल के बैठ जाने के बाद हमीदा से) हमीदा, तू मुझे कितना प्यार करती है ?

हमीदा—यह आप क्या फ़र्मा रहे हैं अब्बाजान ?

जलाल—जवाब दे। मैं जो कुछ पूछ रहा हूं, उसका जवाब दे। बता; मैं तुझे कितना प्यारा हूँ ?

हमीदा—अब्बाजान, खुदा के बाद इस दुनियां में, मेरी अगर जान से ज्यादा प्यार की कोई चीज है, तो वह आप ही हैं:—

खुदा ने क़ालिब दिया है,
क़ालिब में जाँका जौहर अता किया है।
तुम्हारे साया ने पाला पोसा,
दुआयें मांगी बड़ा किया है॥
जो दीन वह है, तो तुम हो दुनियां,
वह ताजे सर है, तो तुम यह सर हो।
है वहभी ख़ालिक़,हो तुमभी मालिक,
वह गर खुदा है तो तुम पिदर हो॥

जलाल—यह किसकी आवाज़ है ?

हमीदा—अपने बहादुर बाप के आग़ोश में पली हुई, एक फ़र्माँबर्दार बेटी की।

जलाल—अच्छा, तो उस फ़र्माँबर्दार बेटी से, उसका बहादुर बाप एक इल्तजा करता है।

हमीदा—इल्तजा ? नहीं, उसे हुक्म कहिये अब्बाजानः-

मरहम का हो सवाल तो आंखें निकाल दूं।
फाहे को चाहिये तो उतार अपनी खाल दूं॥
यह जिस्म तो क्या चीज़ है जां तक निसार है।
गर हुक्म हो-सर काट के क़दमों पे डालदूं॥

जलाल—अच्छा तो इधर देख। अपने बाप की खुशी के लिए, अपने इनदोनों नालायक़ भाइयों को मुआफ़ करदे। मैं जानता हूँ कि इन्हो ने तेरे साथ बहुत बुरा सुलूक किया है। मुझे इल्म है कि शाहसाहब ने भी इन्हें अपनी तालीमगाह से निकाल दिया है। फिर भी मैं इनकी तरफ से-अपनी सारी ताकत ख़त्म करके, तेरी मेहर्बानी मांगता हूं। पूछ-किसलिए ? इसलिये कि नालायक होने पर भी मेरी बीमारी में यह दौड़े आये हैं। इसलिए कि मेरे मरहूम भाई ने, इन दोनों के हाथ मेरे हाथ मे पकड़ाये हैं।

अकमलशाह—खुदा उस मरहूम को जन्नत दे।

जलाल—आप से भी यही दरख्वास्त है शाहसाहब, मेरे आख़िरी वक्त यह दोनों मेरे सामने मौजूद हैं, इसलिये आप और हमीदा, दोनों इनका कुसूर मुआफ़ करदें।

हमीदा—अब्बाजान! इन्होंने कुसूर ही कौनसा किया है ?

जलाल—किया है, किया है। (कमालो जमाल से) सुनो सुनो, अपनी बहन के गले मे मौत का फन्दा डालनेवाले भाइ यो

अपनी इस बहन की आवाज़ सुनो और शर्म से अपनी गर्दन नीची करो।

हमीदा—मैंने तो उस दिनभी, जब इन्होंने मुझपर हमला किया था, इन्हें क़सूरवार नहीं ठहराया था। बल्कि उल्टा इन्हीं को मौत के फन्दे से छुड़ाया था। यह चाहें मुझे चचाजाद बहन समझते हों, मगर मैं तो हमेशा से. इन्हें सगे भाइयो की तरह जानती और मानता हूं —

यह मारे आस्ती अपना मुझे चाहे समझते हों।
मगर मैं कुव्वते दाज़ू इन्हें अपना समझतो हूं॥
बुराई भी करें गर यह तो मैं शिकवा नहा करती।
जिन्हें अपना समझती हूं उन्हे अच्छा समझतीहूँ॥

जलाल—(कमालो जमाल से) देखो, देखो, पाजियो अर नालायको, इस फ़रिश्ता खसलत बहन को तरफ़ देखो और अपने मुंह पर तमाचे मारो—

दुनियां यह समझती है, पिसर राहते जाँ है।
पर वस्फ़ जो लड़की में है, लड़कों में कहां है ?

अकमल शाह—जलाल, तुम्हारी बीमारियों में, हम ऐसी परेशानियों का बोझ तुम्हारे दिलपर नहीं देखना चाहते हैं। इस लिये, साफ और सच्चे दिल से इन्हें मुआफ करते हैं।

जलाल—ऐसे नहीं (कमालो जमाल से) तुम दोनों के सामने हमीदा के .क़दमो पर गिर कर अपनी खता माफ़ कराओ। (कमालो जमाल हमीदा के क़दमों पर गिरना चाहते है)

हमीदा—नहीं .क़दमो पर गिरने की ज़ुरूरत नहीं (उठा कर) मैंने मुआफ़ किया।

जलाल—अब मै आराम की मौत मरूँगा। एक-एक बात और कहना है, और वह आप से कहना है शाहसाहब मैं अपनी ज़िन्दगी मे (हमीदा की तरफ इशारा करके) इसकी शादी न कर सका। खैर. कुछ ज़्यादा फ़िक्र की बात नहीं है। यह हर तरह .क़ाबिल और समझदार है। इस मसले को, मै इसी की राय पर छोड़ता हूँ। आपसे यह अर्ज़ है कि आप मेरा वह तमाम खज़ाना जो इस ग़ारके शुमाली गोशेमे मे दफ़न है, हमीदा को देदें। गो उस खज़ाने मे ज़्यादा दौलत नहीं है, क्योंकि मैंने उम्र भर जितनी कमाई की है, वह सब ग़रीबों और मोहताजों ही की ज़ुरूरत मे लगाता रहा हूं। लेकिन, फिर भी जिस .क़दर है. वह दुनियां वालों के नुक़तए ख्याल से बहुत काफ़ी है।

हमीदा-अब्बाजान, मुझे तो आपने पेश्तर ही इतनी दौलत देदी है, जो इस दुनियां मे सबसे ज़्यादा बेहतरीन और क़ीमती है

जलाल—वह क्या ?

हमीदा—(अकमलशाह की तरफ़ इशारा करके) ऐसे बुजुर्गवार उस्ताद के क़दमों की खिदमत। ऐसे सरपरस्त मुर्शद का सर पर साया।

जलाल—यह सही है। लेकिन बेटी, तेरे खुश करने के ख़याल को सामने रखकर मैंने कभी-बचपन में भी-एक खिलौना तक मोल लेकर तेरे हाथ पर नहीं रखा।

हमीदा—अब्बाजान, जो वाल्दैन अपने बच्चों का खिलौने से खिलाते हैं, वह तो उनका जी असली नहीं, नक़ली चीज़ों से बहलाते हैं। आपने मुझे खिलाया, खिलौनों से नहीं-किताबों से। आपने मेरा दिल बहलाया, सैर तमाशों से नहीं-तीर और कमानों से:—

मेरी इस तारीक दुनियां को मुनव्वर करदिया।
सब दिया जब इल्म की दौलतसे दामन भरदिया॥

जलाल—(खुद से) कितनी बुलन्द ख़याल और कुशादादिल लड़की है। (हमीदा से) बेटी, मैंने माना कि तुम हर तरह ज़ीइल्म और समझदार हो, लेकिन मेरी बेटी होने की वजह से, मेरी दौलत की तुम्हीं हक़दार हो।

हमीदा—आपका फ़र्माना बिल्कुल बजा है, लेकिन मुझ से ज़ियादा इस दौलत के वह हक़दार हैं, जिनके लिये दुनियां में

कमाने-खाने को कोई आसरा नहीं। जो इल्म से बेबहरा, अक्ल से दूर, मेहनत से लाचार; और दूसरोके लिए क्या अपने लिए भी बिल्कुल बेकार हैं।

अकमलशाह—लेकिन सगी बेटी के होते हुए, बाप का माल किसी दूसरे को नहीं पहुँच सकता है।

हमीदा—बेटी ही को पहुंच सकता है?

अकमलशाह-हां।

हमीदा—बेटी ही का वह हक़ है?

जलाल—हाँ, तुम्हीं मुस्तहिक हो। तुम्हारे ही लिये है।

हमीदा—अच्छा, तो मैं उसे लेती हूँ। आपकी तमाम दौलत इस वक़्त से मेरी हो गई। अब मुझे अख्तियार है कि मैं उसको चाहे जिस तरह इस्तेमाल में लाऊँ। लिहाज़ा मैं अपनी वह दौलत, अपने इन दोनो चचाज़ाद भाइयो को देती हूँ।

अकमलशाह—आफरीं। ऐ बुलन्दख़याल बेटी, आफ़रीं। दुनियावालो, तुम चांदी और सोने के चन्द टुकड़ों पर, अपने भाइयो का खून बहाने के लिए, तैयार हो जाया करते हो, तुम दो गज़ ज़मीन की ख़ातिर अपने अज़ीज़ो पर मुकदमे-बाजी के जाल फैलाया करते हो। आओ, और इस लड़की की तरफ़ देखो, अपने भाइयो की ख़ातिर अपने ऐशो आराम की

बाज़ को किस तरह तर्क कर दिया करते हैं-यह सबक़ इस लड़की से सीखो।

जलाल-(हमीदा और कमाल जमाल की तरफ़ देखकर) अच्छा अब तुम तीनों से मेरी एक आख़िरी ख्वाहिश है। सुलतान ग़ज़नीखां का ख़जाना मैं चुराने गया था, लेकिन नहीं चुरा सका। सलामतबेग ने उस रोज़, जब पीछे से वार करके मुझे ज़ख्मी किया, तभी मैंने इरादा किया था कि मैं उसका सर काटूंगा। लेकिन उसी ज़ख्म की बदौलत बिस्तरे मर्ग पर पड़ जाने की वजह से, मैं उस इरादे में भी कामयाब न हो सका। बोलो, बोलो, मेरे इन कामों को तुम तीनों में से कोई पूरा करेगा? अगर एक नहीं कर सके, तो तुम तीनों मिलकर भी पूरा करोगे?

कमाल—वह काम फिर बता दीजिये।

जमाल—हां अच्छी तरह समझा दीजिये।

जलाल—एक यह कि सुल्तान का ख़ज़ाना चुराना।

कमाल—और दूसरा?

जलाल—सलामतबेग का सर काटना।

जमाल—यह तो दोनों ही मुश्किल काम आपने बताये।

कमाल—ख़ज़ाने पर तो तलवारों का पहरा रहता होगा?

जमाल—और सर काटने मे तो बड़ी मुश्किलात का सामना करना पड़ेगा।

जलाल—बस, ज्यादा नहीं सुनना चाहता! मुझे यक़ीन हो गया कि मैं इन हसरतों को साथ ही ले जाऊँगा। आह! यह अरमान क़यामत तक मेरी रूह को बेचैन रक्खेंगे! यह ख़याल क़ब्र के कोने मे भी मुझे सुखकी नींद न सोने देंगे। (हमीदासे) क्यों हमीदा? तू कैसे ख़ामोश खड़ी है?

हमीदा—(खुद से) एड़ीसे चोटी तक एक आंधीसी चढ़रही है? ख़यालात के समन्दर मे लहरो का एक तूफ़ान सा बरपा हो रहा है। दिल मचलता है। होसला आगे के लिये बढ़ता है। खुदा! खुदा! मेरे वालिद को उस वक्त तक तू ज़िन्दा रख, जब तक कि यह दोनो काम मैं न कर आऊँ। (जलालसे) अब्बाजान आप मेरी ख़ामोशी का सबब पूछ रहे हैं? मैं क्या बताऊँ? मैं तो यह सोच रही हूँ कि आप के जीतेजी आपकी इन ख्वाहिशो को पूरा कर दिखाऊँ। सुलतान का ख़ज़ाना ला कर इन हाथो से उसे ख़ैरात मे बटाऊँ और सलामत का कटा हुआ सर लाकर इन क़दमो पर भेंट चढ़ाऊँ—

दिखादूं बाप को अपने कि कर सकती है क्या बेटी।
शिफ़ा देती है कैसे हो के ज़ख़्मो को दवा बेटा॥
बनेगी ज़लज़ला, बिजली, बला, क़हरो वबा बेटी।
कहीं तूफ़ान होगी और कहीं हुक्मे क़ज़ा बेटा॥

ज़मीं लरजेगी, कांपेगा फ़लक शशुदर जहां गा।
गिरोहे दुश्मनां में एक क़यामत का समां होगा ॥

जलाल—तो तू मुझे यकीन दिलाती है कि तू यह दोनों काम ज़रूर करेगा ?

हमीदा—ज़रूर ! क़दमों की क़सम, ज़रूर।

पलट जाये ज़मीं या जा क़ुतुब अपनी बदल जाये।
बजाये शाम के सूरज सहर को चाहे ढल जाये ॥
तरी पानी से निकले आग, से गरमी निकल जाये।
मगर यह गैर मुमकिन है इरादा मेरा टल जाये ॥
ख़ज़ाना लूटकर, मूजी का सर जब काट लाऊँगी।
जलालुद्दीन हैदर की तभी बेटी कहाऊँगी ॥

जलाल—बस, तो अब मैं राहत की मौत मरूँगा। खुदा ने इतनी देर तक मुझे इसलिये ज़िन्दा रक्खा था कि मैं अपनी तमाम बातें, तुम्हारे आगे रखदूं। अब नहीं-अब नहीं-अब और नहीं बोला जाता-एक गिलास पानी-नहीं, नहीं, हमीदा वह दोनों काम ही मेरी प्यास बुझायेंगे। शाह साहब, सलाम-बच्चो, दुआ-खुदा ! खुदा !

(जलाल का मरना सब का उसे सँभालना)

अकमलशाह—जलाल ! जलाल ! हाय मैं, तुम से अपनी कुछ न कह सका।

[जलाल की लाश पर सर झुकादेते हैं]

मुकाम—सलामतबेग का मकान ।

(कमरू का दाखिला)

कमरू—धत्तेरी नौकरी की दुम मे धागा ! चिलम मे तम्बाकू रक्खो तो तवे की शिकायत । हुक्के में पानी डालो तो फटे नेचेकी शिकवा । खानेका दस्तरख्वान लगाओ तो हाज़िर रहनेका झगड़ा टोपी साफ करो तो जूतो की सफाई का गिला । और सबकामोंको टंच करके रखदो, तो मालिक साहब फर्मातेहै कि खाली क्योंबैठा है ? ग़र्ज़ेकि यह नौकरीकी जिन्दगी क्याहै, एक झमेलाही झमेला है । खुदा जाने यह नौकर रखने का मनहूस रिवाज किस बुरी साअत मे पैदा हुआ है, कि इसका खात्मा ही नहीं होता क्योंजी, मैं पूछता हूँ कि एक शेर दूसरे शेरको नौकर क्यों नहीं रखता ? एक भैंसा दूसरे भैंसे को नौकर क्यो नही रखता ? और एककौआ दूसरे कौए को नौकर क्यों नहीं रखता ? मतलब यह है कि जब कुदरत के दरिन्दे चरिन्दे और परिन्दे डकमालिक औरनौकरबनना नहीं चाहते, तो यहमोटी मोटी तोंदवाले अमीर आदमी, हमदुबले

पतले इन्सानो को चार, चार, और आठ आठ रुपये माहवारपर क्यों हलाल किया करते हैं ? कहाँ हैं नौकरी पेशा लोग ! चलें सब मेरे साथ। आज मैं अल्लाह ताला की ख़िदमत में एक फ़रियाद लेजाना चाहता हूँ। बड़े मियाँ से कहूँगा कि हज़रत-एक शख्स दूसरे शख्स का नौकर क्यो कहलाता है ? जब कि मच्छरों तक में भी यह रस्म न पाया जाता है ? खस की टट्टी के कमरे में सोने वाला क्या जाने ? बाहर पंखा खींचने वाला जो तकलीफ़ उठाता है !

गाना

नौकरी बहुतही नीचा कार, न करना कभी नौकरीयार ।
वहीहै सबसे ज्यादा ख्वार,बनाजो किसीका खिदमतगार॥
चंद टुकड़ों पर चाँदी के, चाँद गँजी होजाती हैं ।
आबरू इन पैसों के लिये, कोड़ियों की होजाती हैं ॥
ज़िन्दगी जाती है बेकार, न करना कभी नौकरी यार ।
खूब कहावत है यह ठीक, जिसे कह गये चतुरसुजान ॥
उत्तम खेती, मध्यम बंज, कठिन चाकरी भीख निदान ।
इसी से मैं कह रहा पुकार,न करना कभी नौकरी यार ॥

—o—

अल्लामा-(दाखिल होकर) अरे क़मरू! ओ क़मरू!!

क़मरू—लीजिये, मालिक तो मालिक, बावा इन साहिबा भो किस हाकिमाना लहजे में पुकारती है-अरे क़मरू ! ओ क़मरू !!

अल्लामा—(क़मरू की पीठ पर हाथ मारकर) तेरा सत्यानाश होजाय मुए, देगची उतारने की सँडसी कहां छुपा कर रख आया? सारा सालन हाथो पर गिर गया।

क़मरू—तो क्या हुआ? वह तो कहीं न कहीं गिरता ही। मुँह मे न गिरा तो हाथ पर ही सही।

अल्लामा—उसके गिरने का तो ग़म नहीं, रोना तो यह है कि सारी उँगलियाँ फुँक गईं।

क़मरू-उँगलियां फुँकगईं? तो फुँक जानेदो, औरबनजाँयगी। जब दाँत दूसरे बन जाते है, आँखें दूसरी बन जाती हैं, तो उँगलियाँ भी दूसरी बन जाँयगी। और सच पूछो तो उँगलियों का फुँक जाना तो एक मुबारक बात हुई। क्यों कि अब बग़ैर रोटी पकाये रोटी मिल जाया करेगी। मुफ़्तकी तनख्वाह हाथ आया करेगी। मैं तो कहता हूँ कि तमाम बावर्चियों की उँगलियां जल जांय तो अच्छा हो। मालिकों मे अपने हाथ से खाना पकाने की आदत तो पैदा हो।

अल्लामा—लो मेरा तो हाथ जलगया और इसेबातें सूझीहैं।

क़मरू—अजी तुम्हारा तो सिर्फ़ हाथ ही जला है यहाँ तो आप दिल जला करता है।

अल्लामा—चल मुए बनमानस।

क़मरू—लो, हम बनमानस, जो सरकार की खिदमतगारी में दिन रात लगे रहते हैं। जब कोई मोटी या बड़ी आसामी आती है, तो अपने मालिक के फायदे की बात सोचा करते हैं। और वे भले मानस जो इतने पर भी जूतों से हमारी खबर लिया करते हैं। इसलिये तो मैं कहता हूं कि इस नौकरी का मुँह जला जिसने एक आदमी के बच्चे को-बात की बात में उल्लू और गधे का बच्चा बना डाला।

अल्लामा—अच्छा जा, मेरी उङ्गलियों पर लगाने के लिये थोड़ा सा गोले का तेल ले आ।

क़मरू—देखिये बावर्चिन साहिबा, मैं मुसाहबजी का नोकर हूं आपका नहीं। अगर मुसाहबजी का हाथ जल जाता, तो गोले का ही नहीं-बिनौले तक का तेल ले आता। एक नौकरी से तो वैसे ही जी जलता है, अब दूसरी नौकरी बजाकर क्या जानको भी हलाक करदूं?

अल्लामा—तू नहीं जायगा?

क़मरू—नहीं।

अल्लामा—नहीं ।

क़मरू--नहीं, नहीं, ।

अल्लामा—तो जा, मैं तुझसे अब बात भी नहीं करूँगी।

क़मरू--मैं अभी से इसके लिये तैयार हूं। (दोनों एक दूसरे से मुँह फेरकर खड़े होजाते हैं)

सलामत—(दाखिल होकर और क़मरूकी पीठ पर हाथ रखकर) अरे क़मरू! ओ क़मरू !!

क़मरू--(सलामत वेग को अल्लामा समझकर) जा, मैं तुझ कमीनी से नहीं बोलता ।

सलामत--यह क्या घोटोला है। (अल्लामा की तरफ जाकर और उसकी पीठ पर हाथ रखकर) अरी अल्लामा ! ओ अल्लामा,

अल्लामा—जा, मैं तुझ कमीने से बात नहीं करती ।

सलामत--अरे ! यह क्या गड़बड़झाला है ? (ज़ोर से) तुम दोनों अपने मालिक को भी नहीं पहचानते ? क्यों रे कमरू, क्योंरी अल्लामा ?

अल्लामा—(अल्लामा जब अपना मुह फेरती है, तो ताज्जुबमें आकर)कौन, सरकार ? सरकार मैं इस घर मे न रहूँगी ।

सलामत--क्यों, क्यों, हुआ क्या ? क्यों रे क़मरू ?

कमरू—मेरा तो हिसाब कर दीजिये मुसाहबजी, मेरा अब

इस घर में निबाह न होगा। यह मुई दल्लाला—

अल्लामा—चुप तेरा मुंह काला। दल्लाला होगी तेरी अम्मा तेरी फूफी, तेरी नानी, तेरी ख़ाला।

क़मरू—देखिये, यह खिसियानी बिल्ली मुझ पर झपटती है।

अल्लामा—देखिये, यह बावला कुत्ता मुझे फिर काटता है।

सलामत—अजीब झगड़ा है, अजीब ग़ुस्सा है। एक भट्ठी की तरह गरम हो रही है, तो दूसरा भाड़ की तरह जल रहा है।

क़मरू—सरकार, सरकार, मैंने आपकी बहुत ख़िदमत की। अब हिसाब चाहता हूँ।

सलामत—वाह! हिसाब कैसा? तू तो मेरा चहीता बेटा है। ले यह पांच रुपये जेबमें रख। आज से तेरी तनख़ाहमें भी पांच रुपये माहवार का तरक्की होगई। (अल्लामा से) अल्लामा!

अल्लामा—उसीको, उसीको, चाहें पाँच रुपये दो या दस रुपये। मैं तो बाज़ आई ऐसी बावर्चीगीरी से। मैं अब एक घड़ी को भी यहाँ न रहूंगी।

सलामत—रहोगी कैसे नहीं? तुम तो मेरी मुसाहबन हो।

अल्लामा—यह सब कहने की बातें हैं। क़ाज़ी को तो आज तक न बुलाया। निकाह तो अब तक न पढ़ाया।

सलामत—आज सब काम किये डालता हूं। अरे क़मरू, जा किसी क़ाज़ी को बुला ला।

.कमरू—मैं क्यों बुला लाऊँ ? मेरा निकाह थोड़े हो है। जो निकाह पढ़वाएगा, वह ही क़ाज़ी को भी बुला लाएगा।

सलामत—तू तो ख़ामख़ाह रूठता है ? (आहिस्ता से) उसे तो सिर्फ़ बीबी बनाऊँगा। लेकिन बेटा, अपनी जायदादका वारिस और मालिक तो तुझ ही को ठहराऊँगा।

.कमरू—तब तो ठीक है! (जाता है)

अल्लामा—क्यों जी, यह तुमने उसके कान में क्या कहा?

सलामत—कुछ नहीं, सिर्फ़ यह झांसा दिया कि-जब निकाह पढ़ जायगा तो तेरी तनखाह में पाँच रुपये महीना और बढ़ जायगा। अच्छा जाओ, एक गिलास पाने का पानी ले आओ

(अल्लामा का जाना)

सलामत—(खुद से) बड़ी चालबाज़ी का यह व्योपार है दोनों को राज़ी रखने पर ही अपनी तरक्की का दारोमदार है एक अगर सुलतान को खुश रखने के काम में पूरी मददगार है, तो दूसरा दौलत पैदा कराने की बात में खूब होशियार है-

गाना

आंगा अपना, फांसा अपना, है पूरे उस्ताद का।
पंजा है अपना फ़ौलाद का, कंपा है अपना मेंगाद का।

यार बनकर ऐयारी करते हैं,
ग़मख़्वार होकर खूंख़्वारी करते हैं।
जिसमें अपना उल्लू सीधा हो वह चालें चलते हैं ॥
हाथ हम डाल दें जिस पे वह हमारा होजाय ॥
चार ही दिन में वह हालत हो कि अन्धा होजाय।
इस सफ़ाई से लहू जिस्म का हम पीते हैं।
हो न तकलीफ़ ज़रा और सफ़ाया हो जाय।
फंदा है अपना जल्लाद का ॥

(अल्लामा का पानी लेकर आना)

—※—

सलामत—(पानी पीकर) अच्छा, लो यो मुसाहबन, अबतो होजाओगी पक्की मुसाहबन। अब कौन कहेगा बाअर्दिन ? आज से हम दूल्हा और तुम—

अल्लामा—दुल्हन।

(कमरू का काजी के साथ आना)

काज़ी—आदाब अर्ज़ है मुसाहब जी।

सलामत—तसलीम क़ाज़ी जी।

क़ाजी—कहिये क्या हुक्म है ?

सलामत—अर्ज़ यह है कि इन्सान की ज़िन्दगी में, शादी भी एक ज़रूरी चीज़ समझी गई है। इसीलिए आप को तकलीफ दी गई है।

क़मरू—आपको तकलीफ़ दी गई है! तो क्या आपके साथ शादी की जायगी? .काज़ी साहब, ज़रा ठहर जाइये। हुलिया लिखने की भी तो ज़रूरत होगी।

.काज़ी—हुलिया कैसा?

.कमरू—ऐसा कि जब कोई चार आने की कुतिया भी ख़रीदता है, तो हुलिया लिखवा देता है। यह तो औरत है।

सलामत—अबे कुतिया, भैंस, घोड़ी वग़ैरह का ही हुलिया लिखा जाता है, औरत का नहीं।

.कमरू—क्यों नहीं सरकार? अगर यह चोरी का माल निकला, तो? आपके और .काज़ी साहब के साथ साथ मैं भी होजाऊँगा गिरफ्तार।

.काज़ी—(मुंह फेर कर) मुसाहब जी, यह आप का नौकर बड़ा ख़ुशमिज़ाज है।

सलामत—जी, बड़ा दिल्लगीबाज़ है।

.काज़ी-जब तलक आस्माँ के ऊपर तारों की चादर तनी रहे-
(हाथ मिलाना चाहताहै कि एक तीर सलामतके पैरों पर आकरगिरताहै)

सलामत—अरेरेरे यह क्या? (चौंकना और उछलना)

.काज़ी—क्या है? क्या है?

सलामत—कोई तीर सा लगा (उठाकर) सचमुच तीर है।

क़मरू—(मुंह फेरकर) इश्क़ के तोर के साथ साथ यह तीर भी बड़ा मौज़ूँ रहा।

सलामत—इसमें तो एक पर्चा भी है। ठहरिये काज़ी साहब, पहले इस पर्चे को पढ़ लूं। (पढ़ता है) "सलामत! अब दुनिया में आठ रोज़ से ज्यादा तुम सलामत नहीं रहोगे। आज ही के दिन तुम्हारा सर काटा जायगा।"

राक़िम,—'हमीद'

हाय! हाय! यह क्या लिखा है? यह तीर कितने फ़ासले से आया है? अभी इसका तहक़ीक़ात कराता हूँ। अभी सुल्तान के पास इस वाक़यः की इत्तला पहुंचाता हूँ। देख लूँगा, सबको देख लूँगा, ओह! सुल्तान के मुसाहब का सर काटना चाहता है? एक छोटा सा नाला समन्दर के पीने के लिये आता है?—लेकिन, लेकिन, वह है कौन? हमीद! कौन हमीद? कहा वही छोकरा तो नहीं, जो उस दिन जलाल को छुड़ाने आया था? अगर वह है, तब तो:…… ……ख़ैर, देखा जायगा। काज़ी साहब, फिर कभी राज़ आपको तकलीफ़ दी जायगी। आज की मुआफ़ी चाहता हूं। अब चलूँ—चलूँ—लेकिन-कहीं, कहीं वह रास्ते हो में खड़ा हुआ न मिल जाय। आठवां दिन जो वार है, आज भी वही वार है! कहीं आज ही वार न कर जाय।

इसलिए—अभी घर ही में रहना अच्छा है। अल्लामा, मुझे छुपाना—

सख्त मनहूस घड़ी है यह घड़ी सेहरे की।
बन गई तार कफ़न का यह लड़ी सेहरे की॥

(जाना)

अल्लामा—हाय! मैं तो शादी से पहले ही रांड हो गई।

(सलामत के पीछे पीछे जाना)

क़मरू—हाय! मैं तो जीते जी ही रंडुआ हो गया?

क़ाज़ी—हाय! मेरे तो पैसे भी मर गये।

क़मरू—रोओ, रोओ, बूढ़े मियाँ, तुम भी मेरे रंडुए होने पर रोओ।

क़ाज़ी—अबे तू रंडुआ कैसे होगया?

क़मरू—ऐसे कि मालिक मिस्ल शौहर के होता है वह जब मर गया, तो नौकर रंडुआ होगया।

क़ाज़ी—अबे रंडुआ या राँड?

क़मरू—चूँ कि मैं मुज़क्कर हूं, इसलिये अपने वास्ते रंडुआ इस्तेमाल करता हूं। अच्छा, अब उड़न्छू, नहीं तो जड़ता हूँ एक मोटा सा मख़न्चू।

हुए हैं आज तो हम सर फ़िज़ूल सेहरे के।
लहद के फूल बने हैं, यह फूल सेहरे के॥

(जाना)

कमरू—भई वाह, यह दुनियां भी बड़ी दिल्लगीबाज है। घड़ी में खुशी और घड़ी मे गम। घड़ी में शादी और घड़ी मातमः—

गाना।

दुरंगा है दुनियां का दौर,
कभी कुछ और कभी कुछ और।
कभी है दिन और रात कभी है,
कभी धूप बरसात कभी है।
कभी कभी की बात कभी है,
अजब हैं इसके तौर।
जब देखो तब चंचलपन है,
गोया थाली का बैंगन है।
कभी लुढ़क इस ठौर को आया,
कभी गया उस ठौर।

(जाना)

चौथा सीन
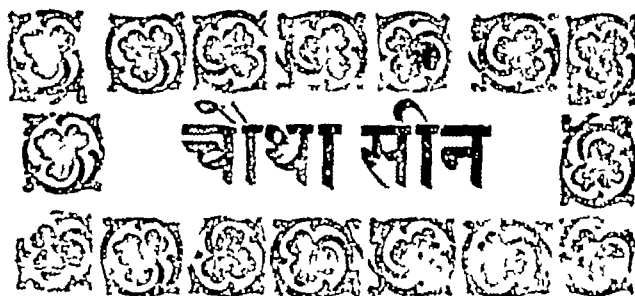
मुक़ाम—सुलतान ग़ज़नीख़ां का महल।

—❀❀❀❀—

(एक लड़की बाल काढ़ रही है। एक हारमोनियम बजा रही है। दो शतरंज खेल रहीं हैं। सुल्तान आकर बाल काढ़नेवाली की आंखें अपने हाथ से मींचता है।)

—❀❀❀—

बाल काढ़नेवाली—हैं! कौन?

सुल्तान—बताओ कौन?

बाल काढ़नेवाली—ज़ेबुन्निसा, नहीं-बदरुन्निसा, नहीं-गुलनार।

(बाक़ी लड़कियाँ हँसती हैं)

सुल्तान—नहीं, इस हुस्न का एक ख़रीदार।

बाल काढ़नेवाली—कौन? सरकार? मै तो घबरा गयी:-

वह इन आँखो में आबैठें कि जिन पर हैं लगी आँखें।
तरीका यह कहां का है जो आकर बन्द की आँखें॥

सुल्तान—

न फिर देखें किसी को एक की जब हो चुकीं आँखें।
मुकाबिल आइना देखा, तो हमने बन्द कीं आँखें॥

अच्छा अब यह तो बताओ, यह बाल किसको उम्र भर बांध रखने के लिये बाँधे जारहे है? यह गेसू किसको डसने के लिये सँवारे जारहे हैं?—

यह लटके जोड़े न रुख़ पै मोड़े, हैं तुमने छोड़े दो नाग काले।
ग़ज़ब सँभाले यह कौड़ियाले कि इनके पाले खुदा न डाले॥

बाजा बजानेवाली—(अपनी जगह से उठकर) हाँजो जवाब दो ना? शर्माती क्यों हो?

जो जाएँ कुछ हिल, तो खाएँ सौ बल,
करे हैं बिस्मिल हर एक को डसके।
किसी को ताड़ा, किसी को मारा,
कोई बिचारा पड़ा हो सिसके॥
यह दोना इतने बड़े हैं फ़ितने,
इन्हो ने कितने ही घर हैं घाले।
ग़ज़ब सँभाले यह कौड़ियाले,
कि इनके पाले खुदा न डाले॥

गाना

—※—

बला तेरी जुल्फ़ों के काले हुए हैं।
यह दो सांप चोटी के पाले हुए हैं॥

डराते हो हो तुम नोके मिज़गां से किसको ।
यह बर्छे मेरे देखे भाले हुए हैं ॥
किया काबये दिल में घर इन बुतों ने ।
यह काफ़िर भी अल्लाहवाले हुए हैं ॥
ज़रा आइने में तो मुँह देख रखिये ।
बड़े आर दिल लेने वाले हुए हैं ॥

—o—

बाल काढ़नेवाली—वाह जी, हमारे बालों के बलों पर ऐसे आवाज़ेकसे जाते हैं और अपने बाजे के सुरका जिक्र तक नहीं?

बाजा बजानेवाली—उसका क्या जिक्र? वह बाजा तो तुम्हारे हुस्न का एक पहरेदार है।

शतरंज खेलनेवाली—(सुलतान की तरफ इशारा करके) पहरे-दार के रहते हुए भी चोर आगया।

बाल काढ़नेवाली—यह हुआ एक प्यादा शा मात। सरकार दें इसका जवाब।

दूसरी शतरंज खेलने वाली—अजी इस फ़िकरे का जवाब ज़रा मुश्किल है। बहन बदरुन्निसा जिस तरह शतरंज खेलने से शातिर है इसी तरह फ़िकरा कसने में भी बड़ी मुँहफट है। यह देखो ना—इधर भी इन्होंने शाह को जिच कर दिया है और उधर भी रुख़ बदलते ही सरकार को—

सब लड़कियां—लाजवाब कर दिया है।

दूसरी शतरंज खेलने वाली-(पहली शतरंज खेलनेवाली से) अच्छा बहन, अपने फ़िकरे का तुम्हा जवाब बतादो। पहरेदार के रहते हुए भी चोर क्यो आगया ?

पहली शतरंज खेलने वाली-बतादू (बाल काढ़ने वाली की तरफ देखकर) जाहरा बहन की (आंखों की तरफ इशारा करके) इन खिड़कियों में भी एक चोर बैठा हुआ है, जिसने दूसरे चोर को बुला लिया।

सुल्तान—भाई वाह, बदरुन्निसा, तुम शतरंज ही में नहीं-शायरी में भी कमाल रखती हो। अच्छा इस हुस्न के बाजार में इस ख़रीदार की एक ख़ाहिश है।

बाजा बजाने वाली—फ़र्माएँ सरकार। हम सब सर आंखों से बजा लाने को तैयार हैं।

सुल्तान—जी चाहता है कि आज तुम सबके साथ नाचूं।

पहली शतरंज खेलनेवाली—वाह, मर्द कहीं औरतों के साथ नाचते है ?

सुल्तान—नाचते हैं। मग़रबी मुल्क वाले हमेशा औरतों के साथ नाचते हैं।

बाजा बजाने वाली-अच्छा, तो आओ बहनो, आज हम सब मिलकर सरकार की हरमसरा को मग़रबी नाचघर बना दें।

(नाच होता है)
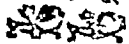
मलका हुस्नआरा—(दाखिल होकर) आह ! कौमे निस्वाँ इस देशमें ज़िन्दगी से ? (सुल्तान से) मेरे सरताज ?

सुल्तान—कौन ? मलका-! तुम ? इस जगह ? इस वक़्त ?

मलका—हां, मैं, इस जगह, इस वक्त इसलिए आयी हूँ कि तुम्हारी यह इन्सानियत और फ़ितरत से गिरी हुई नापाक जश्न-गाह को देखूँ और दोनों हाथ फैलाकर खुदावन्द करीम की दरगाह मे दुआ मागूँ कि 'ऐ अल्लाह, मेरे शौहरको अक्ल दे।"

सुल्तान—अक्ल क्या मुझ में नहीं है ?

मलका—हाय ! अगर अक्ल होती तो इन छोटी छोटी लड़कियों के साथ इस तरह नाचने के लिये, तैयार न हो जाते। हाय ! अगर अक्ल होती, तो एक वालियेमुल्क होकर इस तरह शराब और ऐश के तख्त पर न बैठते—

बे फ़ायदा है करना शिकवा गिला किसी का।
तुम कर रहे हो खुद ही खूं अपनी ज़िन्दगी का॥

सुल्तान—मलका, मैं तुम्हारी इज़्ज़त करता हूँ।

मलका—मेरे शौहर, मैं तुम्हें जान से भी ज्यादा प्यार करती हूँ। सुनो-देखो-समझो-जब किसी की जान जाने का वक्त आता है, तो उसको इतनी तकलीफ होती है जितनी कि ज़िन्दगी भर मे एक वक़्त भी नहीं होती। तो फिर बताओ कि मेरी जान से

ज़्यादा प्यारी चीज़ जब बरबाद हो रही हो, तो मैं आह न करूँ ? यह कैसे हो सकता है ?–

खून करदो तुम बला से मेरे जिस्मे ज़ार का।
सर उड़ादो, डालदो गरदन में फन्दा दार का॥
पर खुदा के वास्ते सुल्तान, तुम हुशियार हो।
मत करो वह काम, जिसमें अब ज़लीलोख्वार हो॥

सुलतान—खामोश ! बदज़बान औरत ! मैं ज़लीलो ख्वार हूँ ?

मलका—नहीं थे, नहीं थे, पर अब शैतानों ने कर दिया है। देखो शराब के नशे में आज तुम कितने बहक गये हो ! यह लड़कियाँ–यह भोली भाली लड़कियां–जिनके साथ तुम नाच रहे थे, कौन है ? यह तुम्हारी बेटी रोशनआरा की सहेलियाँ हैं। खोलकर देखो, इन्सानियत की किताब का वरक़ यह बतायगी कि बेटी की सहेलियां भी अपनी बेटियां हैं। क्यों ? शर्म आई ? नशा उतरा ?

सुलतान—आह ! इन्होंने भी अब तक मुझ से यह नहीं कहा कि हम शहज़ादी की सहेलियां हैं।

मलका—यह–कहतीं, कब ? जब यह–यह होतीं। इन्हें तो तुमने अपने से भी ज़्यादा पिला रक्खी है। (लड़कियों से)

जाओ बेशर्मों, चली जाओ। अब से इस कमरे में न आना। (लड़कियों का जाना) सरकार!

सुल्तान—कहो।

मलका—एक भीख मांगती हूँ।

सुल्तान—मांगो!

मलका—आज से शराब पीना छोड़दो।

सुल्तान—मलका, मलका, मैं जानता हूँ कि यह बुरी चीज़ है। पर, पर, मैं इसको छोड़ नहीं सकता।

मलका—क्यों ?

सुल्तान—आह! क्या बताऊँ क्यों? मेरी प्यारी बीबी, मैं तुम्हारे ही सर की कसम खाकर कहता हूँ कि अक्ल मेरे पास है, मगर मैं सोच नहीं सकता। आँखें मेरे पास हैं, मगर मैं देख नहीं सकता।

मलका—क्यों ?

सुल्तान—इसी शराब की बदौलत। इसने मुझे अन्धा कर दिया। बहरा कर दिया। इन्सान से एक दम हैवान बना दिया। मैं कहता हूँ—तुमसे कहता हूँ—सारी दुनियां से कहता हूँ—कि इस दुख्तेरिज़ को कोई मुँह न लगाये। लेकिन यह सब कहते हुये भी, मैं इसे छोड नहीं सकता।

मलका—यह किसलिये ?

सुल्तान—यह इसलिये-कि मैं इस बढ़ते हुए दरिया में अब उस जगह पहुँच गया हूं, जहां से पीछे नहीं हट सकता। डूब जाने के सिवाय अब और कोई सूरत नहीं है।

मलका—तो फिर मेरे लिये क्या हुक्म है ?

सुल्तान—तुम समझ लो कि मैं राँड होगई।

मलका—हाय ! मेरे शौहर, तुम यह क्या कह रहे हो ?

सुल्तान—बस, जहाँ तक कहना था, कह चुका।

मलका—हाय ! मेरे मालिक, यह तुम्हारी कैसी हालत है। देखो-तुमने अपने दामाद और नवाबों की आंखें निकलवाईं, मैंने कुछ न कहा। तुमने मेरे भाई महमूद को विज़ारत से अलहदा किया, मैंने कुछ न कहा। पर आज, आज, जब मैं देख रही हूँ कि रिआया तुम से बागी होकर, तुम्हें तख्त से उतारना चाहती है, तो मैं गिड़गिड़ा कर, दामन फैलाकर, तुम्हारे दोनों कदमों मे अपना सर झुकाकर, तुम से दरख्वास्त करती हूँ कि तुम मेरी मान जाओ।

सुल्तान—मलका, तुम कौन हो ?

मलका—मै, तुम्हारी फ़र्माबर्दार बीबी।

सुल्तान—और मैं कौन हूं ?

मलका—मेरी जान माल के मालिक-शौहर।

सुल्तान—तो बस तुम्हे अपने शौहर हो के सर की कसम है कि तुम इसवक्त यहाँ से चली जाओ। जाओ, फिर किसी वक्त आना। इस वक्त चली जाओ।

मलका—अफसोस! ऐ खुदावन्द करीम, इन्हें होश दे।
(जाना)

सुल्तान—कोई है? (एक लड़की का आना) जाओ, एक जाम और ले आओ। (लड़की का जाना) पियूँगा जी भरकर आज पियूँगा। (लड़की का शराब लाना) सारी दुनियां का तर्क करके मैं आज तुझे पियूँगा। (उसी लड़की से) जाओ, गाने वालियों को भी बुला लाओ।

(लड़की का गानेवालियों को बुलाकर लाना)

गाना

—o—

गाने वालियां—

बदरा उधर रहे झरलाय,
नयना इधर रहे बरसाय।
उधर घुमड़ कर उठो है घनवा,
इधर उमड़कर कर उठो जोवनवा॥

उधर करे कू कू कोयलिया,
इधर करूँ मैं हाय !
झींगुर झनकारत झननननन,
पुरवाई रमकत सननननन,
इधर रही है चमक बिजुरिया,
इधर जिया तड़पाय ॥

(हमीदा का फेंका हुआ एक तीर सुलतान के पास आकर गिरता है, सुलतान उसे हैरतजदा होकर उठाता है, गानेवाली चली जाती है)

सुलतान—हैं ! यह क्या ? यह तो कोई तीर आकर गिरा ? मगर इसमें यह पर्चा कैसा बंधा है ? (पर्चा खोलकर) इसमें तो कुछ लिखा है (पढता है) "ऐशो-इशरत में गाफिल रहने वाले सुलतान ! जाग, चौबीस घण्टे के अन्दर तेरा खजाना लूटा जायगा। राकिम-हमीद।" हैं ! हमीद ? कौन हमीद ? वह ही तो नहीं, जो उस रोज जलाल को छुडा कर ले गया था। वह ही तो नहीं, जो उस रोज भरे दरबार में एक खून कर गया था। ओह ! कुछ पर्वाह नहीं। इन डाकुओं और चोरों से दब जाने वाला, यह सुलतान गजनीखां नहीं:—

अभी मैं इन सभों को गोर में दफना के छोडूँगा।
या मैं-मैं हूँ दीवारों में बस चुनवा के छोडूँगा॥

रिआया सर उठाएगी तो उसको भी समझ लूंगा।
जहन्नुम की दहकती आग में भुनवा के छोड़ूंगा ॥

कोई है ?

मलका—(दाखिल होकर) हाजिर ।

सुलतान—हैं ! मलका, तू फिर आ गयी ?

मलका—मैं गयी ही कहाँ थी ? आपकी कसम से मजबूर होकर इस कमरे से बाहर होगयी थी । लेकिन साये की तरह आपके पीछे थी । इन दीवारों की तरह आपके चारो तरफ थी । मैंने वह तीर गिरते हुए देखा है । तीर के साथ में बंधे हुए उस पर्चे के मजमून को तुम्हारे मुंह से सुना है । मैं तो कहूँगी कि यह किसी खुदा के बन्दे के जरिये से आस्मानी ऐलान है, या किसी वफादार दोस्त की तरफ से गरीब रिआया की आहों का जरा सा धुआं है, जिसकी मन्शा, जिसकी गरज़, जिसका मुद्दआ सिर्फ यह है कि तुम होश में आओः—

बगौर देखो, बगौर समझो, तुम्हें फरिश्ते, जगा रहे हैं ।
जमीं के ऊपर, फलक के नीचे खुदा के बन्दे जगा रहे हैं ॥
यह ख्वाब कबतक,यह नींद कब तक,उठो नसीमे सहर चली है।
हर एक रोजन से और दर से, हवा के झोंके जगा रहे हैं ॥

सुलतान—समझा, समझा; यह तीर और पर्चा कुछ नहीं है। तेरी ही बदमाशी है, तेरी ही चालाकी है।

मलका—या इलाही! यह तुम क्या कहने लगे?

सुलतान—बस, तूफानी समन्दर की तरह-आँधी के झोंके की तरह-आग के शोले की तरह-तेरी तरफ बढ़कर पहले तुझे ही ख़त्म करूँगा। (गला दबाकर) बोल, बोल, शौहर की दुश्मन मेरे ऐश के रास्ते को ठोकर........

(एक लडकी का आना)

लडकी—हुजूर, मुसाहब जी आना चाहते है।

सुलतान—जा, मनां करदे। इस वक्त मुलाकात नहीं हो सकती।

लड़की—हुजूर, वह बहुत घबराये हुए हैं। बहुत ही जरूरी काम से आये हुए हैं।

सुलतान—अच्छा, आने दे। (मलका से) जा, खुशनसीब औरत, चलीजा। अगर सलामत बेग की आमद हारिज न हो जाती, तो इसी वक्त तेरी लाश इस कमरे से उठवायी जाती।

मलका—(जाते जाते)

खुदाया, होता है गर्क बेड़ा, अलम के बादल बस अब हटादे।
यह तेरा मुजरिम है बख्श इसको, यह तेरा बीमारहै शिफादे।

(मलका का जाना और सलामत का आना)

सलामत—खुदावन्द !

सुलतान—कहो ?

सलामत—बड़ी मुसीबत है !

सुलतान—हां, बड़ी मुसीबत है।

सलामत—हुजूर क्या कह रहे हैं ?

सुलतान—तुम क्या कह रहे हो ?

सलामत—मेरे पास एक पर्चा आया है।

सुलतान—हां, मेरे पास एक पर्चा आया है।

सलामत—देखिये। (अपना पर्चा दिखलाता है)

सुलतान—देखिये। (अपना पर्चा दिखलाता है)

सलामत—हैं ! एक ही सा खत ! एक ही सा मजमूं निगार !

सुलतान—कहर—आफ़त—तबाही। सलामत, होशियार।

सलामत--हुजूर, मेरी राय में तो दिलेरजंग की इस में शरारत है। उसी नमकहराम नौकर की बरपा की हुई यह कयामत है।

सुलतान—ठीक है, ठीक है। अब तक मेरा शुबह एक दूसरी ही तरफ़ था। कोई है (एक लडकी का आना) जाओ, किसी सवार को भेजकर,इसी वक्त दिलेरजंगको यहां बुलवाओ। (लडकी का जाना) सलामत अब क्या होगा ?

सलामत-हुजूर अब क्या होगा ?

सुलतान--सलामत, तुम तो कांप रहे हो! बढो और इस मुसीबत से मुकाबला करो। मेरे पास जो पर्चा आया है, उसमें चौबीस घण्टे के अन्दर खजाना लूटने का जिकर है। और तुम्हारे पास जो पर्चा आया है, उसमें अभी एक हफ्ते का वक्त है। लिहाजा खजाना तुम अपने हाथ में लो। खुद मुसल्लह हो कर वहां का पहरा दो।

सलामत—हुजूर ।

सुलतान—कहो क्या कहना चाहते हो ?

सलामत—मैं तो आपके दामन में छुपने आया था। आपने तो मौत के मुंह में जाने का हुक्म दे दिया। मैं जरुर खजाने का

पहरा देता, अगर मुझे अपने सर के काटने का अन्देशा न होता।

सुलतान—ओह! तू सचमुच बुजदिल है। आज मैंने समझ लिया कि तू सचमुच बुजदिलहै। अच्छा मैं खुद यह काम करूंगा

मेरी ताकत के आगे एक कमसिन छोकरा क्या है।
खजाना लूटलेना खेल क्या लडकों का समझा है?
वह खुद यह चाहता है मेरी पेशानी पै बल आए।
अजल आई है; मोरे नातवां के पर निकल आए॥

(दिलेरजंग का आना और सलाम करना)

कौन, दिलेरजंग?

दिलेरजंग—जहांपनाह।

सुलतान-दिलेरजंग, डाकू इस सलतनत को बर्बाद कर देना चाहते हैं। इस सलतनत के खजाने को लूट लेना चाहते हैं।

दिलेरजंग—ऐसा हर्गिज नहीं होगा।

सुलतान—जुरूर होगा। जब तुम जैसा सलतनत का बागी और नमक हराम आदमी इस साजिश में शरीक है-तो ऐसा जुरूर होगा।

दिलेरजंग—मैं और इस साजिशमें शरीक हूं? हर्गिजनहीं:-

कौन कह सकता है बदअहद हूं, गद्दार हूं मैं।
खैरख्वाह उसका हूँ जिसका कि नमकखारहूं मैं॥
रब्त है जां को अगर कुछ तो वफादारी से।
है मेरे दिल में वफा और वफादार हूं मैं॥

सुलतान—झूंठी बात है।

सलामत—मुंह देखी बात है।

दिलेरजंग—नहीं, खरा लगती बात है:—

यह हैं कमजर्फ कि जो मिल के दगा करते हैं।
उन पै तुफ है जो खुशामद में रहा करते हैं॥
मय का प्याला नहीं सुल्तान मुझे प्यारा है।
मैं मुसलमान हूं, ईमान मुझे प्यारा है॥

सुलतान—तो क्या तुम सचमुच ईमानदार हो?

दिलेरजंग—शाहे जीविकार की कसम।

सुलतान—वफादारहो?

दिलेरजंग—परवरदिगार की क़सम।

सुलतान—जांनिसार हो?

दिलेरजंग—इस तलवार की क़सम।

सुलतान—अच्छा, तो क़सौटी पर तुम्हारा खरा खोटापन कसा जायगा। जाओ, इसी वक़्त से चौबीस घण्टे तक खुद खजाने का पहरा दो। अगर तुम्हारी पहरेदारी में वहां से एक हव्वा भी चला जायगा, तो उसका इलजाम सबसे पहले तुम्हारे ही सर आयगा।

दिलेरजंग—जो हुक्म।

(जाता है, सुलतान और सलामत खुश होते हैं)

पांचवां—सीन

मुकाम—सुलतान गजनीखां का पाईबाग।

(अकमलशाह का हमीदा और कमालो जमाल के साथ दाखिला)

अकमलशाह—(हमीदा) तुमने यह समझा है कि सुल्तान गजनीखाँ बे खबर है ?

हमीदा—नहीं, मैं यह नहीं कह रही हूं कि वह बे खबर है, बल्कि मेरा कहना तो यह है कि होशियारी करने पर भी वह हम पर कामयाब नहीं हो सकता।

अकमलशाह—क्यों ?

हमीदा—यों कि उसकी तरफ बदी है और हमारी तरफ नेकी। उसकी तरफ जुल्म है और हमारी तरफ रहम। उसकी तरफ शैतान है और हमारी तरफ खुदा। एक बेईमान, ईमानदार पर किसी तरह भी फतेहयाब नहीं हो सकता।

अकमलशाह—जीती रह, दिलेरदिल लडकी, खुदा तेरी मदद करे। हालां कि तेरी मुहब्बत और हिफाजत की वजह से मैं भी इस शादियाबाद मे एक हफ्ते से तेरे साथ हूं लेकिन

इसका मुझे कामिल यकीन है कि तू अपने मरहूम बाप की वसीयत को जरूर पूरा करेगी। जलाल की सच्ची औलाद, तू जरूर उसकी रूह को तिस्कीन देगीः—

वह ही बच्चे हैं ख्वाहिश जो मां बाप की पूरी करते हैं।
वर्ना इस दुनिया में कितने पैदा हो हो कर मरते हैं॥

हमीदा—मेरे मुर्शद, आपकी तालीम, खुदा का भरोसा, वालिदे मरहूम की तमन्नाएँ, इस कदर जबरदस्त ताकते हैं कि इन बाजुओं के जरिये से एक मर्तबा पहाड़ की भी छाती को हिला देंगी। ना मुमकिन को भी मुमकिन बना देंगी:—

उस्तादों और बुजर्गों का साया जिस सर पर रहता है।
बे ताजका ताजहै उस सरपर,वह सर सबसे सर रहताहै॥

अकमलशाह—अच्छा, जाओ। खुदा निगहबान रहे। कमाल और जमाल तुम क्या चाहते हो?

कमालो जमाल—आपका हुक्म।

अकमलशाह—मेरा हुक्म? वह तो इस कदर दुश्वार गुजार रास्ता है जिस पर चलना तुम्हारी हिम्मत और ताकत से बाहर है। इसलिए बेहतर है कि तुम वापिस चले जाओ। और हमीदा ने अपने वालिद की जो दौलत तुमको देदी है, उससे अपनी जिन्दगी बसर करो।

कमाल—उस्ताद साहब, हमीदा के इन्हीं अहसानात ने हमारा सर झुका दिया है।

जमाल—गाफिल मुसाफिरोंको एक पाक रास्ता दिखा दियाहैः

आमाले वद का इतना, अच्छा सिला दिया है।
हैवान हम थे दोनों, इन्सां बना दिया है॥

अकमलशाह—तो फिर क्या इरादा है?

कमाल—यही कि उन अहसानात का शुक्रिया बजा लाएँ। ऐसो-इशरत की झूंठी खुशी छोड़कर, खिदमात और इताअत से जो सच्ची खुशी हासिल होती है, उसका लुत्फ उठाएँ।

अकमलशाह—तो जाओ, तुम दोनों भी हमीदा के साथ जाओ। और जिस काम का इसने बीडा उठाया है, उसमें इस का हाथ बटाओ।

हमीदा—जाने के पेश्तर सिर्फ एक बात दरियाफ्त करनी है।

अकमलशाह—पूछो, लेकिन जल्द। क्यों कि यह सुलतान गजनफरखां का पाईं बाग हम लोगों के लिए निहायत खतरे की जगह है।

हमीदा—शादियाबाद की रिआया का सुलतान की निस्बत कैसा ख्याल है?

अकमलशाह-जैसा कि एक पामाल और बर्बादशुदा रिआया का अपने बादशाह की निस्बत हुआ करता है।

हमीदा—तब तो उम्मीद है कि वक्त पड़ते पर रिआया भी हमारा साथ देने के वास्ते तैयार हो जायगी।

अकमलशाह—अब भी तैयार है और आगे भी रहेगी। मैं ने इस एक हफ्ते ही में शहर के तमाम पढ़े लिखे, शरीफ और मुहज्जब अशखास के दिलों पर, सुलतान गजनीखां के जौरो जुल्म, ऐयाशी और बदमस्ती को अच्छी तरह मुन्कशिफ कर दिया है।

हमीदा—तब तो फतह ही फतह है:—

दिले महकूम ही हाकिम से जहां शाद नहीं।
कौन सी आएगी उस मुल्क पै उफ्ताद नहीं॥
आह मजलूम की जालिम को मिटा देती है।
धौंकनी सांस से लोहे को गला देती है॥

अच्छा, वक्त तंग है। पीर मुर्शद सलाम।

कमालो जमाल—उस्ताद साहब, बन्दगी।

अकमल—बेटी खुदा हाफिज। बच्चो, खुदा हाफिज। (तीनों का जाना) खुफिया राजों का किला टूटने में अब ज्यादा देर नहीं है। बारूद भरी हुई है, तोप चढ़ी हुई है, फलीता लगा और काम खतम हुआ।

(रौशनआरा का दाखिला)

रोशनआरा—वही था, वही था, वह इधर ही को गया है (अकमलशाह को देखकर) हैं। तुम कौन ? अभी जो नौजवा तुमसे बातें कर रहा था, वह इधर ही को गया है न ?

अकमलशाह—हां इधर ही को गया है।

रौशन०-क्या बता सकोगे कि उसका इरादा कहाँ जानेका है

अकमलशाह—नहीं बता सकता।

रौशन०-क्यों ?

अकमलशाह—क्यों कि मैं फ़कीर हूँ, और फ़कीर को इ झगडो से क्या वास्ता ?

रौशन०—अच्छा यह ही बतादो कि उसका नाम क्या है

अकमलशाह—फकीर नहीं जानता !

रौशन०—उसका वतन कौन सा है ?

अकमलशाह—फकीर को नहीं मालूम।

रौशन०—आह ! जुल्म—सितम—

फिरे वह हमारे यहां आतें आतें।
गई लौट कालिबमें जां आते आते ॥

प्यारे मैंनें तुम्हें देखा है—एक वार देखा है—दो वार देखा है। लेकिन हाय, तुमने मुझे आजतक, इस वक्त तक,नहीं देखा। हैं ! किसने देखा है ? मैंने ? नहीं। मैंने नहीं देखा—मेरी इन आंखों ने देखा है, इसी पर तो मेरा इन आँखों से झगडा है कि इन्होंने

पहली ही नज़र में, मेरी प्यारी से प्यारी चीज़-दिल नजराने में देदी। वताओ, वताओ, ऐ वेवफ़ा आंखों, जिसके लिए तुम हर वक्त अश्कवार हो वह कहां है ? उसे तुमने देख भाल कर भी क्यों जाने दिया ? अपनी पुतलियों ही में क्यों न छुपा लिया।—

मुझको ही तेरा पता ऐ जाने जां कुछ भी नहीं।

था तेरा ओ बेनिशां नामोनिशां कुछ भी नहीं॥

खानये दिलमें मेरे तू आज आकर देखले।

तू है या तेरी मुहब्बत और यहां कुछ भी नहीं॥

अकमलशाह—लड़की, तू दीवानी मालूम होती है।

रौशन०—हां, मैं दीवानी हूँ, पर किसकी ? जिसका नाम तक नहीं जानती, ज़िसके रहने का मुकाम तक नहीं जानती। (अकमलशाह को गौर से देखकर) लेकिन, हैं,—हैं,—आपको तो मैंने कहीं देखा है।

अकमलशाह—देखा होगा। फ़कीर तो हर गली कूचे में फिरा करता है। सबसे अलग भी रहता है, और मिला हुआ भी रहता है।

रौशन०—अच्छा साईं वावा, खुदापरस्त दुर्वेश, तुम दुनिया को रास्ता दिखाया करते हो, आज मुझे भी दिखाओ।

अकमलशाह—अपने महल मे जाकर सो जाओ।

रौशन०—हैं ! यह तुमने कैसे जाना कि मैं महलों की रहने वाली हूँ !

अकमलशाह—फकीर सब जानता है। फकीर से कुछ नहीं छुप सकता है।

रौशन०—अच्छा मेरा नाम तो बताओ-क्या है ?

अकमलशाह—लड़की, क्या फकीर का इम्तिहान लेने आई है ? जा चली जा। तेरा क्या, मैं तेरी मां तक का नाम बता सकता हूँ।

रौशन०—(खुद से) यह ज़रूर कोई पहुंचा हुआ फकीर है। (जाहिर में) अच्छा बाबा, मेरा नाम बताओ तो सही।

अकमलशाह—तेरा नाम ? रौशनआरा है।

रौशन०—बस, मैं जान गयी। तुम जरूर खुदा से मिले हुए फ़कीर हो। तुम उसका भी नाम जानते होगे-जिसका मैं नहीं जानती। बतादो, बतादो, लिल्लाह मुझे मेरे प्यारेका नाम बतादो। खुदा के नाम पर मेरे प्यारे का नाम बतादो।

अकमल०-तू उसका नाम क्यों पूछती है ?

रौशन०—इस लिए कि मैं उसे प्यार करती हूँ।

अकमल०-दिलसे प्यार करती है ?

रौशन—हां दिलसे, जानसे, दीनसे, ईमान से।

अकमल०—मगर वह तो एक डाकू का लड़का है।

रौशन०—हां, तभी तो उसने मेरे दिल पर भी डाका डाला है। वह रहता कहां है ?

अकमल०—जंगलों मे।

रौशन०—उसका नाम ?

अकमल०—हमीद।

रौशन०—इस वक्त वह कहां गया है ?

अकमल०—मौत के मुंह में।

रौशन०—हैं ! मौत के मुँह में !

अकमल०—हां, मौत के मुंह में।

रौशन०—तो मैं भी वहीं जाऊँगी। मौत के खूंखार दरिन्दे के सामने अपनी जान रखदूंगी और उसकी जान बचाऊँगीः—

फ़िदा है उसपै दिल, कुर्बान उसपर मेरी हस्ती है।
मिले जिन्से मुहब्बत जान देकर भी तो सस्ती है॥
बिरहमन बुत को पूजे शेख काबे की करे सिजदा।
मैं उसकी हूं पुजारन जिसकी सूरत दिलमें बस्तीहै॥

अकमल०—तो तुम उसकी जान बचाने का वादा करती हो?

रौशन०—हजारबार।

अकमल०—तो जाओ अब से तीन घण्टे में, शाही खजाने पर हमीद–मौत से कुश्ती लडता हुआ–तुम्हे मिलेगा।

रौशन०—बस, मैं समझ गया। वह वही है जिसने शाही हरमसरा में तीरके जरिये से खत पहुंचाया है। वह वही है जिस के निगाहों के तीर ने मेरे दिलोजिगर को जख्मी बनाया है.—

नहीं मोलूम डूबूंगी कि पहुंचूंगी किनारे पर ।
समन्दर में पड़ी है नाव उसके ही सहारे पर ॥

गाना ।

—:o:—

दिल में खयाल आंखों का लाया न जायगा ।
मयख़ाना घर खुदा का बनाया न जायगा ॥
गमजे तेरे हजार भी कातिल उठायेंगे ।
खञ्जर का तेरे वार उठाया न जायगा ॥
क्यों तोडती है यास मेरे दिल का आसरा ।
यह घर उजड गया तो बसाया न जायगा ॥

(जाना)

अकमल०-बस, मेरा काम खत्म हुआ। उधर रिआया सुलतान से बरसरे पैकार है। इधर सुलतान की लडकी रौशन-आरा हमीशा की मुआविनो मददगार है। खुदा ने चाहा तो अनक़रीब ही बेडा पार है:—

हां तभी मैं-मैं हूं जब बदला लूं उस मलऊन से ।
मैंने गेरू से नहीं—कपड़े रंगे हैं खून से ॥

(जाना)

छटा-सीन

मुकाम—खजाना।

(दिलेरजंग खज़ाने का पहरा दे रहा है)

दिलेरजंग—

कोहे-गरां को अपनी गिरानी पै नाज है।
बिजली को आग, अब्र को पानी पै नाज है॥
खुरशीद को शुआअ पै, दरियो को मौज पर।
ऐ तेग मुझ को तेरी रवानी पै नाज है॥

मेरी प्यारी तलवार, आज मेरा भी इम्तिहान है और तेरा भी। आज मुझे भी अपना जौहर दिखाना है और तुझे भी। मैं मानता हूँ कि तूने बड़े बड़े मार्कों में मेरा साथ दिया है, लेकिन उन लड़ाइयों में सिपहसालारी की शान थी, और इस पहरेदारी में वफादारी का इम्तिहान है। पूरे बाईस घण्टे गुजर गये। खाना, पीना ख़ाबो—आराम सब इस पहरे को नजर कर दिया, मगर अब तक न कोई चोर आया न डाकू।

तो क्या सुल्तान को किसी ने गलत इत्तिला दी है ? नहीं नहीं, शाहियाबाद के सुल्तान से, कोई ऐसा मजाक नहीं कर सकता। कौन ? कोई नहीं, सिर्फ मेरा वहम है, जो कभी—कभी मुझे चौंका देता है ?:—

कौन सर टकराने आएगा यहां तूफान से।
कौन ऐसा है जो हो बेजार अपनी जान से॥
देख भी सकता नहीं कोई इधर दीवार को।

हमीदा—(आकर)—

आने वाले आते हैं यों फांद कर दीवार को॥

दिलेरजंग—कौन? कौन? हमीद, तुम डाकुओं के सरदार हो

हमीदा—कौन? कौन? दिलेरजंग, तुम खजाने के पहरेदार हो

दिलेरजंग—हां, मैं इस खजाने का पहरेदार हूं—लेकिन तुम

हमीदा—मैं इस खजाने को लूटने के लिये तैयार हूं।

दिलेरजंग—क्या कहा ? तुम उस खजाने को लूटने के लिए तैयार हो जिसका दिलेरजंग पहरा दे रहा है ? जिसकी हिफाजत के लिए दिलेरजंग तलवार हाथमें लेकर कसम खा चुका है ? हमीद, तुम वह शख्स हो, जिसको मैंने शिकार—गाह के मैदान में, दो आदमियों के हाथ से बचाया था। जिसको मैंने उस रोज मौत के मुंह में हाथ डाल कर छुड़ाया था:—

जाओ तुमको जिन्दगी देता हूं मैं इस बार भी।
छोड़ता हूं तुमको मैं भी और मेरी तलवार भी॥
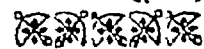
हमीदा—(खुद से) या अल्लाह ! यहां आकर मैंने किसे मुकाबले में पाया ? जिससे पहले मुकाबले ही मे हार चुकी हूँ। जिसके पहले ही वार के जवाब में दिल वार चुकी हूं—

जिस पर जान निछावर है यह दिल जिसका दीवाना है।
जिसकी सूरत का कुल आलम, एक आईना खाना है॥
आज उसी जोरावर को कुछ अपना जोर दिखाना है।
जिस पर आंख नहीं उठती, उस पर तलवार उठाना है॥

दिलेरजंग—क्यों ? हमीद, क्या सोच रहे हो ?

हमीदा—कुछ नहीं।

दिलेरजंग—क्या तुम यहां से जाने के लिए तैयार नहीं हो ?

हमीदा—नहीं।

दिलेरजंग—नहीं ? सुनो हमीद, दिलेरजंग के कान इस नहीं को बरदाश्त नहीं कर सकते। मैं तुमसे दूसरी बार कहता हूँ कि तुम यहां से चले जाओ—

जद पै आना मेरी इस तलवार के अच्छा नहीं।
तुम अभी नादान हो दुनियां मे कुछ देखा नहीं॥
वार करना मर्द का बच्चे पै कुछ जेबा नहीं।
तेग क्या ? तुम पर तो मेरा हाथ तक उठता नहीं॥

हमीदा—तो फिर खजाने की पहरेदारी छोड़ दीजिए।

दिलेरजंग—खजाने की पहरेदारी तो मेरा फर्ज और ईमान है।

हमीदा—अगर खजाने की पहरेदारी, तुम्हारा फर्ज़ और ईमान है, तो खजाने को गारत करना, मेरा अहदो पैमान है:—

तुम अपने फर्ज पर हो और अपने अहद पर मैं हूं ।
खुदा है दरमियां में अब उधर तुमहो इधर मैं हूं ॥

दिलेरजंग—खामोश, हमीद, खामोश—

कर गौर जरा सामने तू किसके खड़ा है ?
मैं मौत हूं तलवार मेरी हुक्मे क़ज़ा है ॥

हमीदा—

मुझको यक़ीन है कि मैं गालिब क़ज़ा पै हूं ।
मेरी है जीत, क्यों कि मैं राहे खुदा पै हूं ॥

दिलेरजंग—एक डाकू या चोर, अपने आप को खुदा की राह पर समझता है ?

हमीदा—एक जालिम और ऐयाश का मददगार, अपने आपको बहादुर समझता है ?

दिलेरजंग—जो कुछ भी हो । चाहे इस खजाने की एक एक ईंट, गारे की बजाय खून से चस्पां की गई हो, चाहे इस दौलत का एक एक टुकड़ा, परवरिश और आराम पहुंचाने की बजाय जहरे कातिल का काम करता हो, लेकिन मैं उस वक़्त तक इसकी हिफाजत करूंगा, जब तक कि आफताब इस दुनिया में अपनी सुनहरी किरनें न फैलायेगा ।

हमीदा—तो यह हमीद, आफताव निकलने के पहले ही इस खजाने की दौलत को, खजाने से ले जायगा।

दिलेरजंग—यह नहीं होगा।

हमीदा—यही होगा।

दिलेरजंग—किसकी ताकत से ?

हमीदा—इस तलवार की ताकत से ?

दिलेरजंग—अच्छा, तो आजा। (तलवारों से लडाई होने के वाद) वेशक हमीद तुम एक दिलावर आदमी हो।

हमीदा—वेशक दिलेरजंग, तुम एक वहादुर आदमी हो। (खुद से)—

जानती हूं इनसे लडने में है खतरा जान को।
जान को देखूं कि देखूं बाप के फरमान को॥
सर हथेली पर लिए हूं और खन्जर हाथ में।
जिन्दगी और मौत दोनों हैं वरावर हाथ में॥

दिलेरजंग—हमीद, तलवार की लडाई में हम और तुम दोनो वरावर रहे। अव आओ यह सर उस सर से टकरायगा। यह छाती उस छाती के घमंड को दूर करेगी।

हमीदा—यानी ?

दिलेरजंग—यानी तलवार फेंक दो, मेरी और तुम्हारी कुश्ती होगी।

हमीदा–नहीं, मेरी–और तुम्हारी कुश्ती–नहीं होगी।

दिलेरजंग—क्यों ?

हमीदा—(खुद से) इस क्यो का क्या जवाब दूं ? कुश्ती लडने में तो हमीद और हमीदा का भेद खुला जाता है। फिर, फिर, क्या करूं ? पर्दा हटादूं ? टोपी उतार कर अपनी असली सूरत दिखादूं ? दिखानी ही पडेगी। कहां तक छिपाऊँगी ? जिस पर हमीद बन कर, फतह नहीं पा सकती, उस पर अब हमीदा बनकर फतेह पाऊंगीः—

कब तक धोखा दूंगी उसको जो इस मकानका मालिक है ?
उस दिलवर से पर्दा कैसा, जो दिलोजान का मालिक है ?

दिलेरजंग—क्यों हमीद, कुश्ती लडने से इन्कार है ?

हमीदा—हां, इन्कार है।

दिलेरजंग—इन्कार ? इन्कार की वजह क्या है ?

हमीदा—वजह यह--कि यह हमीद, हमीद नहीं बल्कि हमीदा है।

(अपनी टोपी उतार देती है)

दिलेरजंग—(सकते में आकर) आह ! यह हुस्न नहीं है एक जागता जादू है। मैं इसे देख रहा हूं ! देखकर भी यह नहीं समझ सकता कि यह चांद जमीन से निकला है या आस्मान से उतरा है ? हमीदा, तूने लूट लिया। शाही खजाने से पहले मेरा वह खजाना लूट लिया, जिसपर अभी तक किसी ने निगाह नहीं

खायी थी। इस दिल ने आज की जंग में वह चोट खायी है, जो आज तक कहीं नहीं खाई थी:—

लोग कहते हैं कि माशूक पै दिल आता है।
मुझ से पूछे कोई, आता नहीं दिल जाता है॥
वह में दरिया के जो जाताहै नमक का टुकड़ा।
आप ही होता है गुम पानी मे मिल जाता है॥
खुद ही हैरत में हूं मैं क्या यह तमाशा देखूं।
ताब आंखों में कहां है कि यह जल्वा देखूं॥

(दिलेरजंग सकते के आलम में खड़ा रह जाता है, हमीदा सीटी बजाती है, जमालो कमाल आजाते हैं)

हमीदा—(जमालो कमाल से) जाओ, खजानेके बड़े संदूक को बहुत जल्द खजाने से बाहर ले जाओ।

दिलेरजंग—(कुछ होश में आकर) नहीं, यह नहीं हो सकता। मैं इस हुस्न की शराब से इतना बेहोश नहीं हुआ हूं कि अपने फर्ज को भूल जाऊं। मैंने मुहब्बत की बाजीपर अपना दिल लगा दिया है, लेकिन ईमान को कुर्बान नहीं किया है। खजाने का सन्दूक नहीं जाने दूंगा। जब तक जिन्दा हूँ इसकी हिफाजत करूँगा।

हमीदा—तो क्या बहादुर दिलेरजंग, एक औरत के मुकाबले में, तलवार उठाने के लिए आमादा है?

दिलेरजंग—हाँ, अमादा है, वह मुहब्बत के मुकाबले में अपने फर्ज को ज्यादा अजीज समझता है। वह मौत के मुंह मे खुशी से जायगा, लेकिन दुनियां मे धोके बाज, फरेबी और मक्कार कहलाकर जिन्दा नहीं रहेगा।

हमीदा—लेकिन, औरत से लडकर दिलेरजंग, दिलेरजङ्ग नहीं समझा जायगा। उसकी सारी बहादुरी और नेकनामी पर पानी फिर जायगाः—

मुझ से लडना शर्म्म है और मारने में मौत है।
जीतने में हार है और हारने में मौत है॥

(कमालो जमाल को इशारा करती है कि खजाने का बडा सन्दूक ले आओ)

दिलेरजङ्ग—(सोचकर) सच है! उधर भी मौत है और इधर भी मौत है। औरत से लडना भी मौत है और खजाने की हिफाजत न करना भी मौत हैः—

अगर औरत से लडता हूं तो अपनी शान खोता हूं।
नहीं लडता तो फर्ज मंसबी से हाथ धोता हूं॥
इधर भी एक बुराई है, उधर भी एक बुराई है।
अजब आंधी है जो दोनों तरफ से चढ के आई है॥

(कमालो जमाल खजाने का बडा सन्दूक ले जाने दे)

हमीदा—(खुद से) बस मेरा काम हो गया। खजाने का बडा सन्दूक उठ गया। अब, अब क्या करूं ? यहां से चली जाऊँ ? नहीं, नहीं, मैं अगर यहां से चली जाऊँगी, तो यह खजाना चोरी करा देन के जुर्म में गिरफ्तार हो जायँगे। न मोलूम क्या २ तकलीफ उठायेंगे। इस लिये हिम्मत कर ऐ औरत के दिल, हिम्मत कर, आने वाली मुसीबत से मुकाबले के लिए तैयार होजा। एक दिन शिकार गाह में इन्होंने तेरी जान बचाई थी। आज तू अपनी जान देकर इनकी जान बचा (जाहिर) लो सिपहसालार, मुझे गिरफ्तार करलो।

दिलेरजङ्ग—हैं ! तुम यह क्या कह रही हो ?

हमीदा—जो कुछ कह रही हूं, ठीक कह रही हूं। मुझे गिरफ्तार करलो, मैंने खजाना चुराया है।

(अपनी मर्दानी टोपी पहन लेती है)

दिलेरजङ्ग-(उस तरफ देखकर)हैं क्या खजाना चोरी होगया?

हमीदा—हां, खजाने का बडा सन्दूक उठ गया।

दिलेरजङ्ग—(कुछ सोच कर) ओह-अच्छा हमीदा, तुम जाओ। खजाना चुराने के जुर्म में जो सजा मिलेगी वह मैं बरदाश्त कर लूंगा:—

जो कुछ किया है मेरे दिले पुरकुसूर ने।
नीचा दिखा दिया मुझे मेरे गुरूर ने॥

इसमें खता किसी की नहीं मेरी भूल है।
फांसी हो या हो कैद मुझे सब कुबूल है॥

हमीदा—नहीं पहले हमीदा सूली पर लटकायी जायगी, उस के बाद तुम पर आँच आने पायगी। मैं खुशी से अपने आपको गिरफ्तार करादेने के लिए तैयार हूं। मैं शौक से मौतकी दहकती हुई आग में अपने लिए झोंक देने को तैयार हूं:—

नहीं इस दिल में खुदगर्जी, भरा है यह मुहब्बत से।
कदम हिलने न पायेंगे कभी राहे शराफत से॥
मेरी नजरों में जाना और मरना सब बराबर है।
दिया है तुमको दिल तो जान भी तुमपर निछावर है॥

दिलेरजङ्ग—हमीदा, हमीदा, शाह का खजाना लुटवा कर तुझे गिरफ्तार करूँ? कौन से हाथो से? कौनसी जञ्जीरो से:—

खुदा जाने कि आंखों ने मेरी कैसा समां देखा।
न दुनिया में कहीं देखा था जो मैंने यहां देखा॥
निगाहों में तेरी नकशा नजर आया खुदाई का।
लबों की मुस्कराहट में खुदा को मेहरबां देखा॥

जा, जा, ओ मुजस्सिम नूर! ओ सरतापा खूबसूरती! जितनी जल्दी जा सके इस खौफनाक चहारदीवारी से बाहर हो जा।

(सुलतान का सलामतबेग और सिपाहियोंके साथ दाखिला)

सुलतान—(हमीदा को दिलेरजङ्ग के पास खडा हुआ देख कर) हैं ! यह क्या ?

सलामत—दगा, फरेब, धोखा ।

सुलतान—दिलेरजङ्ग, तू होश में है ?

दिलेरजङ्ग—नहीं सुलतान, मैं बेहोश हूँ । होशहवास,अक़्लो फ़हम, सब खो चुका हूं ।

सुलतान—और खजाने का सन्दूक ?

सलामत—(सन्दूक की जगह पर सन्दूक को न देखकर) वह तो गायब है ? मालूम होता है, इसीने डाकुओ से मिल कर उसे उडवा दिया है ।

सुलतान—(दिलेरजङ्ग से) ओह ! नमकहराम,बिला शुबह तू डाकुओं के गरोह से मिला हुआ है । (सलामत से) अफसोस ! सलामत, तुमने मुझे आगाह भी किया लेकिन मैंने अपनी बेव-कूफी से इस दगाबाज का एतबार करके, खजाने का पहरा इसी के हाथ में दे दिया (दिलेरजङ्ग से) बोल, बोल, मेरे एतबार का खून करनेवाले, फ़रेब और मक्कारी के पुतले, वह तलवार हाथ मे लेकर कसम खाने वाली जुबान कहां है ? वह दिलेरी और बहादुरी की झूठी शान कहां है ?

दिलेरजङ्ग—सुलतान, मैं कुसूरवार हूं लेकिन दगाबाज या मक्कार नहीं हू ।

सुलतान—तो क्या तूने डाकुओं से मिलकर, मेरे खजाने का सन्दूक नहीं उठवाया ?

दिलेरजङ्ग—नहीं।

सुलतान—तूने डाकुओं का मुकाबिला किया ?

दिलेरजङ्ग—किया।

सुलतान—उस मुकाबिले में शिकिस्त खायी ?

दिलेरजङ्ग—नहीं।

सुलतान—तूने शिकिस्त भी नहीं खाई, मुकाबिला भी किया, फिर किस तरह खजाने का सन्दूक खजाने से बाहर चला गया ?

दिलेरजङ्ग—क्या बताऊं ?

सुलतान—(सलामत से) देखते हो सलामत ?

सलामत—हुजूर, यह सब बनावट है, बनावट।

सुलतान—बेशक बनावट है। (सिपाहियों से) इसे बहुत जल्द गिरफ्तार करके ले जाओ। और दिन निकलने से पेश्तर ही फाँसी पर लटकाओ।

हमीदा—ठहर जाइये, आप किसे गिरफ्तार कराते हैं। इस खजाने को चुराने वाला तो मैं हूँ। यहां की दौलत पर डाका

डालने वाला तो मैं हूँ। आप कुसूरवार की बजाय, बे कुसूर को फांसी पर क्यों चढाते है ? इन्साफ के माथे पर बे इन्साफी का दाग़ क्यों लगाते हैं ?—

मैं हाज़िर हूं, मुझे चाहो तो तुम फांसी पै लटकाओ ।
मेरा सर काट दो या खाल इस तन की उतरवाओ ॥
जमीं में दफन कर दो या कि दीवारों में चुनवाओ ।
मगर लिल्लाह इनके पांव में बेड़ी न डलवाओ ॥

सलामत—देखिये खुदावन्द, कैसी साजिश है ? चोर और पहरेदार की ऐसी साज़िश कभी किसी ने न देखी होगी ।

सुलतान—(सलामतसे) बिला शुबह एक जबर्दस्त साजिश है। एक जबर्दस्त मिली भगत है। (सिपाहियों से) अच्छा, दिलेरजंग के साथ ही इस डाकू को भी फांसी पर चढाओ ।

(रौशनआरा का दाखिला)

रौशनआरा—ठहर जाओ। अब्बाजान, ठहर जाओ। उस डाकू से पहले अपनी इस लडकी को फांसी पर चढाओ।

सुलतान—हैं ? कौन ? रौशनआरा ?

रौशनआरा—हां, रौशनआरा ।

सुलतान—तू यहां कैसे आयी ?

रोशनआरा—दिल ले आया।

सुलतान—क्या बकती है ?

रोशनआरा—बकती नहीं, सच कहती हूं। इन्सान अपनी आंखो को बन्द कर सकता है, अपने कानो पर हाथ धर सकता है, अपने मुंह पर ताला लगा सकता है, लेकिन इस दिल पर काबू नहीं पा सकता। जिस रोज मैंने पहली मर्तबा—दरबार मे—इस डाकू को देखा है, उसी दिन से अपना शौहर बना लिया है:—

नहीं पहचान रहती दोस्त दुश्मन की मुहब्बत में।
फना होती हैं सारी सूरतें इस एक सूरत में॥
यह वह डाकू है जिसने हर तरफ से मुझको घेरा है।
खजाना लूटने के पहले दिल को मेरे लूटा है॥

सुलतान—ओह! इतनी बेशर्म्म? इस कदर बेहया? कुछ पर्वाह नहीं। जा, तू भी जा। सिपाहियो, इसे भी गिरफ्तार करलो। इन दोनों के साथ साथ इसे भी फांसी देदो।

(हुस्नआरा का दाखिला)

हुस्नआरा—किसे गिरफ्तार करलो? किसे फांसी देदो? ठहरो, मलका का हुक्म है, (रोशनआरा की तरफ इशारा करके) इसे छोड दो।

सुलतान—हट जाओ, मल्का, तुम इस झगड़े मे न आओ।

हुस्नआरा—आऊँगी, मैं इस झगड़े में जरूर आऊँगी। बेटी के हाथों में हथकड़ी पड़ने से पहले, अपने हाथों में हथकड़ी डलवाऊँगी:—

किस तरह देखेंगी आंखें हाय इस बेदाद को।
सामने मां के ही जब फांसी लगे औलाद को॥
है यही मजूर तो पहले यह आंखें फोड़ दो।
आग देदो कोख में छातीको मेरी तोड़ दो॥

सुलतान—हां लगादो, लगादो, आग लगादो। मुजरिमों के साथ साथ उनके हिमायतियों को भी जलादो, इस शहर को भी जलादो, इस रियासत को भी जलादो इस ताज को भी जलादो। बगावत है, बड़ी जबर्दस्त बगावत है।

(अकमलशाह का दाखिला)

अकमल०—हां, बड़ी जबर्दस्त बगावतहै। और वह बगावत (सलामत बेग की तरफ इशारा करके) इसी खुशामदी और चापलूस मुसाहब की बदौलत है।

सुलतान—तू कौन है बदकिरदार ?
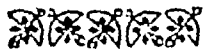
अकमल०—खुदाई फौजदार। इन्साफ का हिमायती और मजलूमो का मददगार। बस, अब तुम सुल्तान नहीं हो, फौज तुमको तख्त से उतारने के लिए तैयार है।
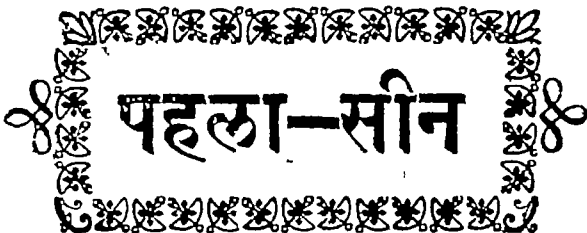
सुल्तान—ठहर नाहिजार। (तलवार निकालता है, फौज़ आकर अपने भालो से सुलतान को घेर लेती है)

फौज—बस खबरदार।

❀ ड्रापसीन ❀

नीरजा
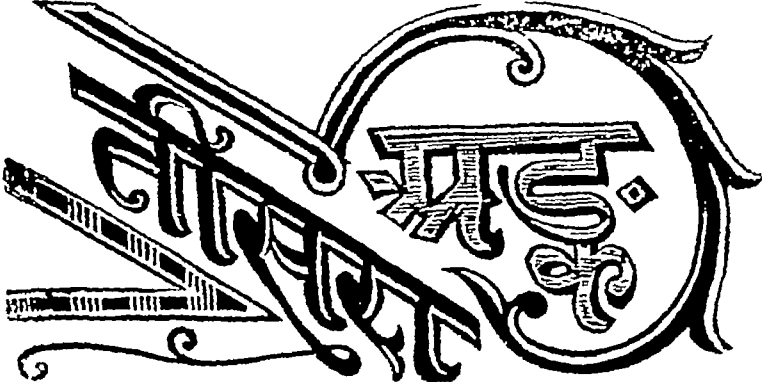
मुक़ाम—पाईं बाग ।

गाना ।

रोशनआरा—

विस्मिलों से बोसए लब का जो वादा होगया ।
खुदबखुद हर ज़ख्म का अंगूर मीठा होगया ॥
शर्म क्या है बेतकल्लुफ ख्वाब में आजाइये ।
दोनों आंखें बन्द करलीं मैंने परदा होगया ॥
कर दिया तारीक दिल सौदाये खाले यार ने ।
सारे घर मे एक नुक़्ते से अंधेरा होगया ॥

(हमी ा का आनो)

हमीदा—रौशनआरा, मुझे तुमसे बहुत ज्यादा मुहब्बत है। लेकिन यह वक्त मुहब्बत के राज़ो नियाज़ का नहीं है। लड़ाई के बिगुल के वक्त, गुलो बुलबुल की कहानी किसी तरह भी मौजूं नही है। (खुद से) खुदा जाने, यह धोखे की चौसर कब तक बिछी रहेगी !

रौशनआरा—यह सब सच है। मैं जानती हूँ कि फ़ौज ने सुलतान के खिलाफ बगावत की है, मैं जानती हूं कि रिआया अकमलशाह को अपना सुलतान बनाना चाहती है, लेकिन—हमीद—

हमीदा—हां कहो।

रौशनआरा—तुम्हे याद होगा कि मैं उस रोज खज़ाने में अपनी जान हथेली पर रख कर, तुम्हारी जान बचाने के लिए तैयार थी।

हमीदा—हां, मै उसे भूल नही सकता। तुम्हारा वह एहसान मेरे सर पर है।

रौशनआरा—तो उस एहसान को इसी वक्त अपने सर पर से उतार दो।

हमीदा—वह किस तरह ?

रौशन०—मैं जो मांगूं वह मुझे दे दो।

हमीदा—अच्छा, मांगो-क्या चाहती हो ?

रौशन०—मैं क्या चाहती हूँ ?-सिर्फ यह कि मेरे बाप की जान बचादो। सल्तनत लेलो, तख्त लेलो, मगर मेरे बाप को जिन्दा रहने दो।

हमीदा—शहजादी, तुम्हारी सिफारिश मंजूर है। मैं वायदा करता हूँ कि इस झगडे में सुलतान को कोई आंच न आएगी। उनकी जिन्दगी बख्श दी जायगी।

रौशन०—तो फिर मैं अपने मेहरबानका शुक्रिया अदा करूं ?

हमीदा—हाँ शुक्रिया अदा करो। और वह शुक्रिया इस तरह अदा करो कि मुझे अब इजाजत दो। बहुत देर हो गई है। बहुत काम बाकी है।

रौशन०—जाते हो ? कहाँ जाते हो ? ठहरो.—

जो-आये हो तो सुनलो और भी कुछ माजरा दिल का।
कि क्या हालत थी और अब होगया है हाल क्या दिलका॥
मेरे अरमान दिल से उठ के दिल में बैठ जाते हैं।
न होजाये कहीं यह दर्द बढकर लादवा दिल का॥

हमीदा—यह तुमने क्या सबक शुरू कर दिया ? (खुद से) जिन बातो से मैं बचना चाहती थी, वह ही सामने आ रही है।

रौशन०—हमीद, तुम्हे मेरी बात सुनाना पड़ेगी और जुरूर सुनाना पड़ेगी।

हमीदा—अच्छा, सुनूंगा और जुरूर सुनूंगा। (खुद से) सुनूंगी तो जुरूर, लेकिन जिस तरह कंगाल के दर पर फकीर की सदा खाली जाती है, उसी तरह इसकी आवाज मेरे कानों तक आकर मादूम हो जायगी।

रौशन०—अच्छा तो सुनो—जिस तरह एक नदी, पहाड़ घाटियों और जंगलों के दुश्वारगुजार रास्तों को तय करके समुन्दर से मिलने की तमन्ना रखती है, उसी तरह मैं दुनिया की तमाम तक्लीफों को बरदाश्त करके तुम्हारे साथ एक हो जाना चाहती हूं।

हमीदा—यह तुम क्या कहने लगीं, शाहजादी! (खुद से) खुदा जाने,इस बहरूपकी भूल भुलैयाँ में यह कबतक भटकेगी?

रौशन०—प्यारे हमीद, मैं क्या कह रही हूँ—यह मुझे भी खबर नहीं। इतना ज़रूर कहूँगी कि जिस वक़्त दरिया का बाँध टूट जाता है, तो उसके सैलाब को कोई नहीं रोक सकता:—

लबालब भर गया है अब तो पैमाना मुहब्बत का।
हुआ है आह! वश्त अजनाम अफसाना मुहब्बत का॥
न समझाने से समझेगा न बहलाने से बहलेगा।
दिले वहशी फकत है एक दीवाना मुहब्बत का॥

हमीदा—प्यारी रौशनआरा, मालूम होताहै कि तुम मुहव्वत के हकीकी राज से कतई नावाकिफ हो। जिस तरह जिस्म की जीनत जान से है, उसी तरह जानकी जीनत मुहव्वत से है। मुहव्वत का जहूर, हर संगो शजर में नजर आता है। मुहव्वत का राग, फूल का हर रगो रेशा गाता है। लेकिन इनमें से कोई भी मुहव्वत का जिक्र अपनी जुवान पर नहीं लाता है:—

यही है हक़ परस्ती दिल में बस इश्के बुतां रखना।
मये उल्फत को पी पी कर सुरूरे जाविदां रखना॥
उठाना कोहे गम सर पर, न उफ दिल से कभी करना।
हमेशा राजे उल्फत अपने सीने में निहां रखना॥

रौशन०—खूब सूरत फ्लासफर, मालूम होता है कि तूने अभी तक अपना दिल किसी को नहीं दिया। तू उस फूल की तरह है जिसे जमाना चाहता है लेकिन उसने कभी किसी को प्यार नहीं किया।

हमीदा—नहीं, नही, मैं वह फूल हूँ जिसकी छाती में हजार दाग है और दामन चाक है। जो वजाहिर खूबसूरत और खुशनुमा नजर आता है, लेकिन असल में ग्वाक है।

रौशन०—अच्छा, बताओ हमीद, तुमने इस दुनिया में किसी को चाहा है? किसी को प्यार किया है?

हमीदा—हाँ, किया है।

रौशन०—फिर कहो।

हमीदा—अगर मैं मर्द हूँ, तो वायदा करता हूं कि तुम से जरूर शादी करूंगा।

रौशन०—देखना, मर्द होकर अपने कौल से फिर न जाना?

हमीदा—हर्गिज नहीं। जो मर्द होगा, वह अपने कौल से हर्गिज नहीं फिरेगा। अच्छा, अच्छा, बन्दगी। (जाना)

रौशन०—कितनी जल्दी चले गये? नहीं जानती कि वह मुझ से सचमुच मुहब्बत करते हैं या पीछा छुडाते हैं। अगर इन्होंने अपना वादा पूरा नहीं किया, तो मैं कहदूंगी कि 'हमीद तुम मर्द नहीं—औरत हो।

गाना।

—:o:—

तिर्छी नजर से देखिये तलवार चल गयी।
जख्मी जिगर की राह से हसरत निकल गयी॥
मट्टी मेरी खराब हुई राहे इश्क में।
बर्बाद करके उनकी सवारी निकल गयी॥
मुझ से ही पूछता है मेरा नामाबर पता।
ऐसी फिराके यार में सूरत बदल गयी॥

(जाना)

दूसरा—सीन

मुकाम—सलामतबेग का मकान

(अल्लामा और कमरू का आना)

अल्लामा—हाय! मैं तो कहीं की न रही!

कमरू—हाय! मैं तो कहीं का न रहा!

अल्लामा—मेरी सारी आरजुओं पर पानी फिर गया!

कमरू—और मेरे सारे इरादों को साँप सूंघ गया!

अल्लामा—अब क्या करूं? कहाँ जाऊं? आज ही तो आठवाँ दिन है। आज ही के दिन तो उनका सर कटनेवाला है। आज ही के दिन तो सुहाग लुटने वाला है!

कमरू—बावर्चिन साहबा, तुम्हारी क्या है? तुम तो सदा-सुहागिन हो! एक शौहर मर जायगा तो दूसरे किसी उल्लू के पट्ठे को ढूंढ लोगी। मुश्किल तो मेरी है कि अब ऐसा मालिक, चिराग लेकर भी ढूंढूंगा, तो नहीं पाऊंगा।

अल्लामा—हायरे! मुझे अब ऐसा शौहर कहां मिलेगा?

कमरू—हायरे! मुझे अब ऐसा मालिक कहाँ मिलेगा ? माँ-बाप-भाई-वहन-वीवी-बच्चे, सब कुछ मेरे तो वही हैं। वही नहीं मरने वाले हैं, बल्कि आज मेरा सारे का सारा खानदान मरने वाला है। हाय! मेरे मुसाहबजी, तुम मुझे छोड कर कहाँ जा रहे हो ? (रोना)

अल्लामा—अरेरेरे! यह क्या कहता है ? मियां के मरने के पहले ही फूट फूट कर रोता है!

कमरू—अजी, रोना तो मरने के पहले ही चाहिए। ताकि मरने वाला भी यह देख ले उसके रोने वाले मौजूद हैं। और मरने वाला जब मर गया तो रोने से क्या फायदा ?

अल्लामा—चल चुप डफाली, तुझे हर वक्त मजाक ही सूझता है। यहां तो बना—वनाया घर उजडता है।

कमरू—अजी, तुम्हारा घर क्यों उजडने लगा ? घर तो उस का उजडता है जो रोज नयी नयी जोरुओं की तलाश में रहता है। तुम तो लोगों के घर वसाया करती हो, तुम्हारे लिए घरों और वर वालों की क्या कमी ? सलामत नहीं, तो करामत सही। करामत नहीं, तो लताफत सही। रोना तो हमारा है कि हंसी—दिल्लगी भी गयी और रोज की रोजी भी।

अल्लामा—तुझे अपनी ही रोजी की पडी रहती है! यह नहीं देखता कि यहां रोज़ा हो रहा है।

क़मरू—बावर्चिन साहबा, क्यों झूठ बोलती हो ? तुम्हारा, और रोज़ा हो ? हर्गिज़ नहीं। रोज़ा तो खाना खानेवाले का हुआ करता है—खाना पकानेवाले का नहीं। क्यों कि वह तो अपने लिये अच्छे से अच्छा माल पहले निकाल कर अलग रख लिया करता है। मालिक चाहे एक वक्त सूखी रोटी खा भी ले, लेकिन बावर्ची हमेशा चुपड़-चुपड़ी ही खाया करता है।

अल्लामा—अच्छा, चुप, अब तुम्हीं को चुपड़ी-चुपड़ी खिलाया करूँगी।

क़मरू—अगर मुझे चुपड़ी चुपड़ी खिलाया करोगी, तो कभी रांड न होगी। हमेशा सुहागिन बनी रहोगी।

अल्लामा—अच्छा, यह दिल्लगी छोड़ और यह बता कि उन के मरजाने के बाद मुझे क्या करना चाहिए।

क़मरू—तुम्हें ? बाज़ार में बैठकर पान बेचना चाहिए।

अल्लामा—चल।

क़मरू—अगर यह धन्धा नहीं पसन्द है, तो किसी मनचले रईस के घर जाकर, उसके बच्चों को खिलाने की नौकरी कर लेना चाहिए। जिस रोज़ उस रईस की नज़र तुम पर पड़ जाय, उसी रोज़ बच्चों को खिलाने का काम छोड़कर उस रईस को खिलाने का काम शुरू कर देना चाहिए।

अल्लामा—तेरा नाश जाय ! यह क्या कह रहा है ?

क़मरू—यह भी नहीं पसन्द है, तो एक काम करो।

अल्लामा—वह क्या ?

कमरू—किसी नाटक कम्पनी मे जाकर नौकर हो जाओ।

अल्लामा—इससे क्या होगा ?

क़मरू—बड़ा फ़ायदा होगा ! जब इन्दरसभा के तमाशे में, तुम सब्ज़परी बनकर आओगी, तो बड़े बड़े रईसो की नज़रों मे चढ़ जाओगी। तो इतना ही नहीं, किसी रोज़ क़िस्मत ने जोर मारा, तो किसी नवाब की बेगम बन जाओगी।

अल्लामा—तेरी दिल्लगी ख़त्म नहीं होती। मैं तो अपने लिए ठिकाना पूछती हूं, और तू दिल्लगी उड़ाता है।

क़मरू—दिल्लगी न करूँ तो क्या करूँ ? तुम भी तो दिल्लगी करती हो ? भला तुम्हारे लिए और ठिकानों की कमी ? इन मर्दों पर इन आंखों पर, इन गालों पर, इन बालों पर, अब भी बहुत से जान देने को तैयार हैं। अच्छा अगर तुम्हारी इजाज़त हो, तो तुम्हें अभी किसी खूबसूरत शौहर से मिलाऊं।

अल्लामा—अभी और इसी जगह ?

क़मरू—हां अभी और इसी जगह।

अल्लामा—अच्छा तो बता। मेरे उस होनेवाले शौहर का नाम बता। लेकिन खूबसूरत हो!

क़मरू—अजी खूबसूरत, खूबसूरत ऐसा खूबसूरत, जैसा चांद।

अल्लामा—तब तो मैं उससे जरूर शादी कर लूंगी।

क़मरू—अच्छा तो सुनो,-तुम्हारे होने वाले शौहर का नाम है-'मियां क़मरुद्दीन वलद बकरुद्दीन शेख'।

अल्लामा—चल मुए खुदाई ख्वार तुझ पर खुदा की मार, मुए का मुर्गी के अंडे के बराबर क़द, और मेरा शौहर बनने की हविस! कोई देखेगा, तो बीवी को अम्मा और मियां को बेटा समझेगा!

क़मरू—अजी तुमने वह कहावत नहीं सुनी है?—छोटी बहू छोटा भाग, बड़ी बहू बड़ा भाग।

अल्लामा—अरे, पर बड़ी भी कितनी बड़ी? दो चार बरस की छुटाई बड़ाई हो तो खप भी जाय यहां तो बारह दूनी चौबीस का फ़र्क़ है!

क़मरू—तो क्या हुआ? आज कल दौलत की वजह से कितने ही घरों में चौबीस-चौबीस बरस की लड़कियां बारह बारह बरस के लड़कों को व्याह दी जाती हैं।

अल्लामा—पर दौलत की वजह से ना! तुझ पर कौन सी दौलत है मुए निहंग?

क़मरू—मुझ पर ? यह देखो मुसाहबजी के जवाहरात-खाने की चावी ?

(चावी दिखाता है)

अल्लामा—अरे रे रे ! यह चाबी तेरे हाथ कैसे आगयी ?

क़मरू—कैसे आगयी ? अजी, आज ही का दिन तो हाथ मारने का है। मियां उधर चारपाई पर पड़े मौत की घड़ियें गिन रहे हैं और यार लोग माल-असबाब पर हाथ साफ कर रहे हैं। बी अल्लामा, आज मियां का ही खातमा नहीं है, इस घर का भी पूरा सफ़ाया है।

अल्लामा—अच्छा तो जा, लोहे के सन्दूक का ताला खोल कर उसमें से जवाहरात का डब्बा ले आ। अगर, तू वह डब्बा ले आयगा, तो मैं तुझ से ज़रूर शादी कर लूँगी।

क़मरू—जरूर शादी कर लोगी, तब तो वह डब्बा अभी लाया ! आज बड़ी खुशी का दिन है। उधर जवाहरात हाथ में आते हैं, इधर-इतनी बड़ी जोरू ! वाहरे क़मरू ! तेरी तक़दीर की उंचाई, तूने आसमान पर सीढ़ी लगाईः—

मुरदार राग निकला क़िस्मत की बांसुरी से।
क़मरू मियां की शादी होगी अब इस परी से॥

(जाना)

अल्लामा—मुए का इरादा तो देखो ! मुझसे, और शादी करना चाहता है ? बौना होकर चांद को छूना चाहता है ? खैरजी

मेरा इसमें क्या जाता है ? जवाहरात लाने तो दो। मैं भी वह घर दिखाऊँ कि सब दिल्लगी भूल जाय। शौहर तो क्या, मैं उसे अपना खिदमतगार भी न बनाऊँ। जवाहरात उड़ाकर इतनी जूतियें लगाऊँ कि चांद गंजी हो जाए:—

वह आफत का परकाला है तो मैं भी एक दल्लाला हूं।
वह गर इबलीस का बच्चा है तो मैं शैतान की खाला हूं॥

(सामने देखकर) हैं! यह तो सामने से सरकार आ रहे हैं।

(सलामत का आना)

सलामत—नींद, नींद नींद नहीं आती। दिल घबराता है, बुखार सा चढ़ा आता है। नहीं मालूम क्या वक्त है? वह आया! तीर के जरिये से मौत का पैगाम भेजने वाला! हमीद, वह आया! आह! मैं मरा, मेरा सर कटा! हां, हां, मैंने ही रिश्वतें लेले कर अपने गुनाहों का बोझ बढ़ाया है। मैंने ही शहर की बहू बेटियों की अस्मत बर्बाद कराके, अपने लिए जहन्नुम का दरवाजा खुलवाया है। ओह! वह मेरे जवाहरात कोई चुरा रहा है। आह! वह मेरी अल्लामा को कोई लिए जा रहा है? काटो, काटो, जरूर मेरा सर काटडालो। मुझे मारडालो, मुझे मारडालो—

हो फना हस्ती मेरी किस्सा मेरा बेवाक हो।
या खुदा, अब जल्द दुनियां गन्दगी से पाक हो॥

अल्लामा—मेरे आका।

सलामत—कौन, हमीद ? तू सर काटने के लिए आगया ?

अल्लामा—खुदाया ! इन्हें तो पूरा जुनून हो गया। मेरे सरकार, मैं तुम्हारी तावेदार लौंडी अल्लामा हूँ।

सलामत—अल्लामा है ! हाँ, अल्लामा है। अल्लामा, तू कोई ऐसी दवा दे सकती है, जिससे मुझे नींद आजाय ?

अल्लामा—आप कौच पर आराम से लेट जाइये, मैं आप का पंखा झलूंगी, नींद आ जायगी।

सलामत—नहीं, नहीं, पँखे से नींद नहीं आयगी।

अल्लामा—तो ठण्डा पानी लाऊँ ?

सलामत—नहीं, नहीं, उससे भी कुछ नहीं होगा। शराब, शराब, थोड़ी सी शराब ले आ।

अल्लामा—अभी लाई। (जाना)

सलामत—चाहे जहन्नुम से भी ज्यादा गन्दी जगह में क्यों न भेज दिया जाऊँ। लेकिन जब तक होश बाकी है, शराब नहीं छोड़ूंगा। शराब ही की बदौलत जब इतना जलील-ख्वार हुआ, तो शराब ही की घूँट पीकर आखिरी सांस तोड़ूंगा।

उम्र सारी तो कटी इश्के बुतां में मोमिन।
आखिरी वक्त में क्या खाक मुसल्मां होंगे॥

(सलामत का कौच पर गिरना। हमीदा का पीछे से रस्सी से उतरना)

हमीदा—(खुद से) गाफिल है। दुश्मन गाफिल है। गाफिल दुश्मन पर वार करना गुनाह है। (ज़ाहिरा) जाग, जाग, अदम की तरफ जाने वाले मुसाफिर, जाग।

सलामत—कौन ?

हमीदा—तेरा आखिरी वक्त।

सलामत—यानी ?

हमीदा—मलक-उल-मौत।

सलामत—तू यहाँ क्यों आया है ?

हमीदा—तेरा सर काटने के लिये।

सलामत—और ?

हमीदा—तुझे जहन्नुम भेजने के लिये।

सलामत—किस खता पर ?

हमीदा—किस खता पर ? इस सवाल का जवाब मेरे मरहूम बाप की रूह देगी। इधर देख, सुलतान गज़नीखां के दर्बार में, जिस बहादुर डाकू की पीठ पर तूने वार किया था, आज उसी

की औलाद,—दगा से नहीं, धोखे से नहीं, छुपकर नहीं, पीछे से नहीं, होशियार करके, मुकाबले मे सामने खड़े होकर, तुझ से वदला लेती है। ले यह तलवार-अगर ताकत हो तो वचा मेरा वार।

(दोनो का लड़ते लड़ते अन्दर जाना। हमीदा का सलामत का सर काटकर लाना। कमरू का जवाहरात की गठरी, और अल्लाम का शराब का प्याला लेकर निकलना। कमालो जमाल का आकर इन दोनो को पकड़ना)

हमीदा—(कमालो जमाल से) भाई जान, इन वेचारो को क्यों पकड़ते हो? इन्हे छोड़ दो। अपना काम हो गया, चलो अब शाहसाहब के पास चलो :—

कामियाबी मिली मालिक का करम हम पर है।
फतह इन्साफ की नामुन्सिफी के सर पर है॥

(जाना)

—:०:—

चौथा—सीन

मुकाम—रिआया का दरबार।

(अकमलशाह, दिलेरजङ्ग खड़े हुए हैं। ताज तख्त पर रक्खा हुआ है। सुल्तान जंजीरों से जकड़ा हुआ है। रिआया के बहुत से लोग भी मौजूद हैं।)

अकमलशाह—क्यो सुलतान, वह शानो शौकत अब कहां है? वह शराब की धत, वह जिनाकारी की आदत, अब कहां है? वह रिआया की बहू बेटियो को ताकनेवाली आंखे, वह फरियादयो की फरियाद न सुननेवाले कान, वह गरीब कौम पर तलवार खेंचने वाले हाथ, और वह ईमानदारो को गालियां देनेवाली जुबान अब किस हाल मे है? देखा? अपनी ही आंखो से तुमने अपने अंजाम को देखा? तुम क्या! दुनिया का हर दौलतमन्द आदमी जब बुरी सोहबत में फँस जाता है तो एक रोज, इसी तरह बर्बाद होजाता है। दुनिया का हर जालिम सुल्तान, जो अपने जुल्म को कम नहीं करता है, एक रोज इसी नतीजे पर आ जाता है—

सुबह थी एक दिन तुम्हारी अब तुम्हारी शाम है।
नेक का नेक बदला बद को बद अंजाम है॥

सुलतान—बन्द कर। डाकुओ के हिमायती फकीर, अपनी जुबान बन्द कर। यह वाइज की तकरीर रहने दे। गो मैं इस

वक्त ताजदार नहीं हूं, तख्तनशीन नहीं हूँ, लेकिन फिर भी सुल्तान हूँ।

दिलेरजंग—बिलाशुबह, सुल्तान आप अब भी सुल्तान हैं। जिस तरह जिस्म के आजा में दिमाग का दर्जा सब से बड़ा है, उसी तरह इन्सानों में सुल्तान का मरतबा सब से ऊंचा है। लेकिन आप जानते हैं कि दिमाग में फ़ितूर आजाता है, तो हरएक मुमकिन तदबीर से, उस बिगड़े हुए दिमाग का इलाज किया जाता है।

सुलतान—तुम सब लोग सल्तनत के बाग़ी हो।

दिलेरजंग—नहीं, हम सब लोग, सल्तनत के खैरख्वाह हैं।

सुल्तान—तो मुझे तख्त से क्यो उतारा है ?

अकमलशाह—इसलिए कि तुम्हारे कारकुनों ने सल्तनत में ग़दर मचा रक्खा था ! तुमने उन बदमाशों को सरपर चढ़ाकर इस बिहिश्त को दोजख बना रक्खा था। जहां रिश्वतखोर हाकिम, रुपए के लालच में, इन्साफ़ को बेचने के लिए तैयार हो, जाते हैं वहां कोई दादाख्वाह अपनी फ़रियाद की दाद कब पाता है ? जिस राज में खुशामद का पांसा फेंका जाता है वह राज राज नहीं एक क़िमारख़ाना कहलाता हैः—

जली आहें निकलती थीं, हर एक इन्सां के सीने से।
हरएक मांडो का बाशिन्दा हुआ था तंग जीने से॥

ख़ुशी कैसी हरएक दर्दो अलम से सर को धुनता था।
कहां इन्साफ़! जब फ़रियाद भी कोई न सुनता था॥

सुल्तान - तो इस बात का मैं ही ख़तावार हूं?

अक्मलशाह—बेशक। तुमने अपनी आंखो पर पट्टी बांध ली थी।

सुल्तान—मैं ही कसूरवार हूं?

अकमलशाह—बिलाशुबह! तुमने सल्तनत की बाग, एक हरामज़ादे के हाथ में देदी थी।

सुल्तान—तो फिर मेरे लिए अब क्या फ़ैसला है?

अकमलशाह—तुम अगर इस रिआया के सामने झुक कर अपनी हैवानियत को इन्सानियत में तबदील कर सको तो तुम्हारे लिए मुआफ़ी।

सुल्तान—वर्ना?

अकमलशाह—वर्ना मैं रिआया के रहनुमा की हैसियत से, तुम्हारे लिए सज़ाए मौत तजवीज करने के लिए तैयार हूं।

सुल्तान—ओ बाग़ियो! सरकशो! आज तुम इतने आगे बढ गये? अपने सुल्तान को मार डालने के लिए तैयार होगये? क्यों दिलेरजंग?

दिलेरजंग—सुल्तान मैं अब भी आपका वफ़ादार मुलाज़िम हूं। लेकिन मुझे अफ्सोस है कि आपने मेरी न उस वक्त मानी और न अब मानने के लिए तैयार हैं।
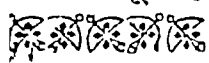
सुल्तान—तुम क्या कहना चाहते हो ?

दिलेरजंग—वही, जो शाहसाहब कह रहे हैं ?

सुल्तान—यानी ।

दिलेरजंग—यानी आपको रिआया की आवाज के सामने अपना सिर झुका देना चाहिए ।

सुल्तान—वर्ना क्या होगा ?

(हमीदा का सलामतबेग का कटा हुआ सिर लेकर आना)

हमीदा—वर्ना इस सर की तरह तुम्हारा सर भी तन से जुदा होगा ।

सुल्तान—हैं ! यह किसका सर ।

अकमलशाह—उसी मलऊन सलामतबेग का जिसने तुम्हारी पाक जिन्दगी को बर्बाद किया जिसने सल्तनत की हरी भरी खेती को तबाह किया—

यह वह मूजी है जिसका दिल गुनहगारी से काला था ।
मुसाहब क्या ! यह तुमने आस्तीं में सांप पाला था ॥

दिलेरजंग—सुल्तान, इस कटे हुए सरको देख चुके तो अब हम लोगों की तरफ देखिए, और गौर कीजिए, समझिए, कि आपके सामने खड़े हुए दुश्मनों में और उस मरे हुए दुश्मन में क्या फर्क है । हम वह दुश्मन हैं जो आपके सामने खड़े होकर आपके जिस्म से गंदा खून निकाल रहे हैं, और यह वह दुश्मन था-- जो जी हुजूर कहकर आपके जिस्म का खून पिया करता था—

एक दुश्मन वह है जिसके हाथ मे तलवार है।

एक की मीठी हँसी है जो छुरी की धार है॥

सोचिए दो दुश्मनों में किससे डरना चाहिए।

उस हँसी के वार से परहेज करना चाहिए॥

सुलतान—बस, बस दिलेरजंग मैं अब समझगया। छुपा दो, यह नज्जारा छुपा दो। इस खौफनाक सर को मेरी आखो के सामने से हटा दो। आज मुझे सब याद आगया। इसी पाजी की वजह से मैंने जलालुद्दीन हैदर को शहर बदर कराया। इसी बदमाश की चालाकियों का शिकार होकर, मेरा प्यारा वजीर महमूद विजारत से अलहदा हुआ लाओ यह कटा हुआ सर मुझे दो, मैं इसे अपने पाओ से ठुकराकर अपनी हविस पूरी करूगा। रिआया से मुआफी तो अब भी नहीं मागूंगा, लेकिन रिआया की तरफ से तुम जो मेरे लिये सजाए मौत तजवीज करने वाले हो, उसको मानने के लिए अब तैयार हूँ —

होगयी है आज मुझ पर भी वही सादिक मिसाल।

हर कमालेरा जवाले हर जवालेरा कमाल॥

अकमलशाह—मुझे अफसोस है सुलतान, कि तुम अब भी रिआया से मुआफी नहीं मांगते। लिहाजा मजबूरन मुझे तुम्हारा सर काटने का हुक्म नाफिज करना पडता है (एक सिपाही से) तलवार निकालो और इस जिद्दी सुलतान का सर काट डालो।

(मलका का दाखिला।

मलका—ठहर जाओ, किसका सर काटडालो ? जबतक मलका जिन्दा है कोई उसके शौहर का बाल बांका नहीं कर सकता । जहांपनाह इस वक्त यहां के सुलतान नहीं हैं, लेकिन मलका अब भी यहां की मलका है। मलका, मलका, होने की हैसियत से हुक्म देती है कि तुम लोग जहांपनाह को छोड़ दो और यहां से चले जाओ। (थोड़ी देर के बाद) हैं कोई नहीं सुनता ? मलका का हुक्म भी कोई नहीं मानता ?

अकमलशाह—मुअज्जिज मलका, हम सब आपकी सुनने के वास्ते तैयार हैं, हम सब आपका हुक्म मानने के वास्ते तैयार हैं। लेकिन आप भी तो हमारा इन्साफ करें, इन्हें समझायें।

मलका—यह नहीं समझेंगे, मैं खुद इन्हें समझा कर हारगई।

अकमलशाह—तो फिर आप इनके लिए क्यों सिफारिश करती हैं ?

मलका—इसीलिए कि मैं इनकी बीबी हूं और यह मेरे शौहर हैं बीवी को हर हालत में अपने शौहर हो का तरफदार रहना चाहिए।

अकमलशाह—जब तुम ऐसी हालत मे भी अपने इस जिद्दी शौहर की तरफदार हो, तो हम यह यह कहने को तैयार हैं कि हम लोग इस वक्त तुम्हारे भी खिलाफ हैं।

मलका—मेरे भी खिलाफ हो ?

अकमल—हां।

मलका—तो मेरे शौहर को मौत की सजा तजवीज करने के पेश्तर, मेरे लिये मौत की सजा तजवीज करो।

अकमल०—यह हो सकता है।

मलका—मगर कैसे ? मैं बुजदिली की मौत नहीं मरूँगी। बहादुरी की मौत मरूँगी। (एक सिपाही को तलवार छीनकर) यह शादियाबाद की मलका, आज तलवार हाथ में लेकर, तुम सबको दावत देती है कि आओ, अगर ताकत हो तो तलवार के जरिये से मुझ पर फतह पाओ। अगर तलवार चलाते चलाते मैं उन कदमों पर मरगयी तो समझूंगी कि अपने शौहर पर कुर्बान होगयी।

सुलतान—मलका यह क्या करती हो ?

मलका—तुम अपनी जिद को चाहे छोड़ो या न छोड़ो, लेकिन मैं अपने फर्ज को जरूर पूरा करूंगी। (रिआया से) क्यों, तुम लोग मुझसे लड़ते क्यों नहीं ? अपनी अपनी तलवारों को म्यान से बाहर करते क्यों नहीं ?

अकमल०—एक औरत से तलवार हाथ में लेकर जंग करने के लिए तैयार नहीं।

मलका—अगर तुम्हारे दिलों में औरत की इतनी इज्जत है तो लो मैं तलवार फेंकती हूं, (तलवार फेंक कर) और औरत की हैसियत से इनकी बीवी की हैसियत से, शादियाबाद की मलका की हैसियत से तुम सबके सामने गिड़गिडाकर, दोनों हाथ फैलाकर, अपने शौहर की जिन्दगी की भीख तुमसे मांगती हूं !

सुलतान—मलका, तुम्हें क्या हो गया है ?

मलका—तुम रिआया के आगे सर नहीं झुकाते, तो मैं रिआया के आगे सर झुकाकर मुआफी माँगती हूँ।

(घुटने टेकना)

अक्मल०—उठ, नेक औरत तेरी फतह होगई। मैंने तेरी सिफ़ारिश पर सुलतान की जिन्दगी बख्शी।

हमीदा—मैं भी यही चाहती थी।

अकमल०—(रिआया से) मुझे उम्मेद है कि तुम सब लोग मेरे इस फैसले को मंजूर करोगे। (सुलतान से) सुलतान, देखो अब भी आंखे खोलकर हम लोगो की तरफ देखो। उस कटे हुए सर को देखकर इबरत नहीं हासिल की तो अपनी इस मलका की हालत देखकर इन्सानियत का सबक़ सीखो।

सुलतान—सीखा, सबक़ सीखा। इबरत भी हासिल की और सबक़ भी सीखा। दुनियां के दौलतमन्दो तुम भी मेरी हालत देखकर इबरत हासिल करना और सबक सीखना। मैं क्या था, क्या होगया, और अब क्या हूं! सुबह--दोपहर--शाम तीनो वक्त मुझ पर गुजर गये। अब सामने-सामने सिर्फ रात है-काली रात है। इस काली रात मे एक ही रोशनी है, एक ही चांद है, और यह चांद अपने गुनाहो की तौबा और अपने खुदा की इबादत मुझे अब सल्तनत नहीं चाहिये, मुझे अब हुकूमत नहीं चाहिये। तुम सब लोग मेरे हक़ पे दुआ करो, मै अपने खुदावन्दकरीमका एक पाक और सच्चा खादिम बनूं। आह! आज अगर महमद वजीर होता, तो मैं उसकी गोद मे अपना सर डालकर एकबार रोता। और कहता कि मेरे सच्चे वफादार मशीर, बा ? ई तेरी नेक सलाहें न मानने की वजह ही से मुझपर यह मुसीबतें आयीं। उसी पाजी सलामत बेग ही की बदौलत तू भी मेरे हाथ से गया और सल्तनत पर भी तकलीफो की काली काली घटायें छाई। (मलका से) मलका, मलका, तुम्हारे भाई महमूद पर मैंने जो जुल्म किया, उसके लिये तुम मुझे मुआफ करना।
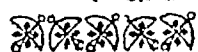
अकमल०—बस सुलतान, मलकासे मुआफी मत मांगो। तुम ने उसके भाई महमूद पर जो जुल्म किये तुम उन से बरीउज़िम्मा हो क्योंकि वह सलामतबेग ही की शरारत थी। अब तुम हर तरह बे ऐब होगये। चांद में धब्बा है, लेकिन तुम में अब कोई भी धब्बा नहीं। इस लिये. . . (आंख में आंसू आजाना)

सुलतान—हैं! हैं! कहते कहते रुक क्यों गये ? अरे! तुम्हारी आंखो मे तो आंसू आगये ?

अकमल०—सुलतान, मैं महमूद वजीर की तरफ से तुम्हारे कदमो पर गिरकर, तुम से उन खताओ की मुआफी चाहता हू जो अब तक मेरी ज़ात से सरज़द हुई हैं ?

सुलतान—शाह साहब, यह आप क्या कह रहे है ?

अकमल०–मत कहो मुझे शाह साहब। मैं शाहसाहब नहीं हूं। आपका ताबेदार, इस सल्तनत का अदना खादिम, मलका हुस्नआरा का भाई, मैं ही महमूद वजीर हूं। (जाहिर होजाना)

मलका—हैं-मेरा प्यारा भाई। (गले लगना)

सुलतान—मेरा प्यारा महमूद। (गले लगना)

महमूद–सुलतान, मैं जिस क़दर की चालें चला, उन सब का मुद्दआ एकही था और वह यह कि सलामतबेग का खात्मा हो, सल्तनत में अमन हो, और मेरे सुलतान. तुम सच्चे सुलतान बन जाओ। (हमीदा की तरफ इशारा करके) इधर देखो–यह जलालुद्दीन हैदर की औलाद है। किस जलालद्दीन हैदर की ? जो शाहियाबाद का एक अमन-पसन्द रहनुमा था। अफ़सोस कि मैंने अपना मुद्दआ पूरा करने के वास्ते उस जैसे नेक शख्स को भी डाकू बना डाला। डाका और चोरी बहुत बुरा काम है।

अल्लाह कभी उसको पसन्द नहीं करता था। लेकिन मैं बहुरूपिये ने, अपनी गरज़ पूरी करने के वास्ते, ऐसे उसे तरगीब दी। (हमीदा से) तुम मुझे मुआफ़ तुम्हारे और तुम्हारे बाप के साथ यह बहुत बुरा कि हम सबको डाकू और चोर बना दिया।

हमीदा—पीरो मुर्शद, आप ऐसा क्यों करते हैं? बाप अगर आज ज़िन्दा होता, तो सुलतान के नेक होज खुशी आप से ज्यादा उसे हासिल होती।

महमूद—(सुलतान से) अच्छा अब मेरी सुलतान, कि तुम यह ताज पहनो और हम सबको मसरूर

सुलतान—प्यारे महमूद, मुझे मुआफ़ करो। मैं ताज के लायक़ नहीं रहा। मेरा यह ताज पहनने वाला अब दुनियां के उस बड़े सरताज की तरफ़ झुक रहा है, इस ताज जैसे हज़ारों ताज निछावर हैं।

महमूद—हैं! तुम यह क्या कहने लगे?

सुलतान—मैं अब राज नहीं करूँगा। महमूद मैं अब नहीं करूँगा।

महमूद—तो क्या करोगे?

सुलतान—फ़क़ीर बनूंगा। अपनी बाकी ज़िन्दगी या इबादत में सर्फ़ करूँगा। मैंने देख लिया, शाही तख्त के नीचे दोज़ख की आग दबी रहती है, जो सुलतान को जलाया करती